टॉमस जैफ़र्सन

लोकतन्त्र के प्रवर्त्तक

लेखक
विन्सेण्ट शिएन

•

अनुवादक
श्रीमती के० आर० सिंह

•

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-6

THOMAS JEFFERSON

by

Vincent Sheean

Translated by

Smt K R Singh

Rs 3 00

प्रकाशक
रामलाल पुरी, सचालक
आत्माराम एण्ड सस
काश्मीरी गेट, दिल्ली 6
शाखाएँ
हौज खास, नई दिल्ली
माई हीरा गेट, जालधर
चौडा रास्ता, जयपुर
बेगमपुल रोड, मेरठ
विश्वविद्यालय क्षेत्र, चण्डीगढ
नीलकठ कॉलोनी, इन्दौर
महानगर, लखनऊ

मूल्य तीन रुपए
प्रथम सस्करण 1963

मुद्रक
राष्ट्रभाषा प्रिंटर्स
दिल्ली

क्रम
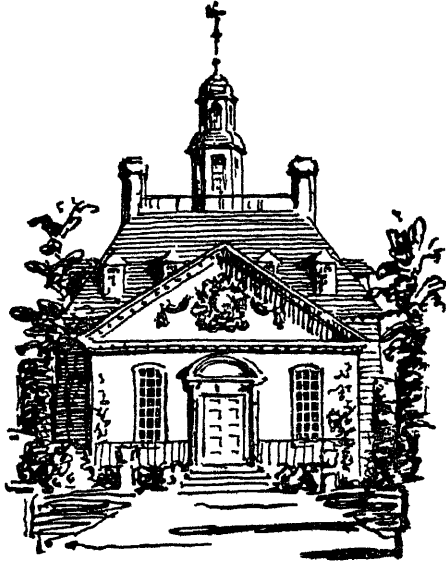
लाल सिर

वह सत्रह वर्ष की अवस्था मे ही छ फीट से भी अधिक लम्बा एक विचित्र-सी आकृति वाला बालक था। उसके बाल गाजर के-से लाल थे और शरीर व चेहरे पर ललछोही भूरी छोटी-छोटी चित्तियाँ-सी बिखर रही थी। नुकीली नासिका और नुकीली ही ठोढी वाले इस युवक को देखने पर सुन्दर तो शायद नही कहा जा सकता था, पर भूरी आँखो की गहरी चमक और चुस्त व्यक्तित्व उसमे ये दो ऐसी विशेषताएँ थी, जिनके कारण

प्राय सभी व्यक्ति उसकी ओर अनायास ही आकृष्ट हो जाया करते थें। वह घुडसवारी, शिकार और सगीत का शौकीन था। इतिहास तथा शासन के प्रति उसकी आरम्भ से ही विशेष रुचि थी। अपनी मातृभाषा अग्रेजी और विदेशी भाषाओ के अध्ययन की ओर वह बचपन मे प्रवृत्त हो गया था। इस बालक का नाम था टॉमस जैफर्सन और यदि कही किसी दुर्घटनावश उसकी जीवन-लीला शीघ्र समाप्त हो जाती तो बहुत सम्भव है कि अमेरिका के जीवन को आज हम जितना उन्नत और समृद्ध पाते है, तब वह शायद ऐसा न हो पाता। बात यह है कि आधुनिक अमेरिका में हमे आज जो समुन्नत जीवन-प्रणाली दिखाई देती है, उसका प्रारम्भिक रूप से प्रवर्तन इस नवयुवक के हाथो उसी समय हो गया था, जबकि उसकी आयु तीस वर्ष के लगभग थी। वास्तव मे युवक टॉमस जैफर्सन पश्चिमी देशो मे उत्पन्न होने वाली महान् प्रतिभाओ मे से एक था।

जैफसन ने खूब लम्बी आयु पाई थी। सन् 1826 की 4 जुलाई को अमेरिका की स्वाधीनता की पचासवी वर्षगाँठ मनाई जा रही थी। इस स्वाधीनता का घोषणापत्र श्री जैफर्सन ने स्वय अपने हाथो से लिखा था। यह सयोग की बात थी कि स्वाधीनता के घोषणापत्र के लेखक का देहावसान ठीक उसके पचास वर्ष बाद उसकी वर्षगाँठ के दिन ही हुआ। उनका जीवन आरम्भ से अन्त तक उपयोगी और आनन्दमय बना रहा। पर यदि वह इतनी लम्बी आयु न पाते तो भी नागरिक अधिकारो और धार्मिक स्वाधीनता तथा अमेरिका की आधारभूत मान्यताओ व सिद्धान्तो के लेखक के रूप मे वहाँ की महानतम विभूतियो मे

उनकी गणना होती ही रहती। बात यह है कि वाशिंगटन महान् और अब्राहम लिंकन के सिवा अन्य किसी व्यक्ति से उनकी तुलना की ही नही जा सकती। ये तीनो महापुरुष अपनी-अपनी विशेषताओ के कारण एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी अमेरिकी आत्मा के जनक थे।

श्री जैफर्सन ने जो कुछ लिखा, कहा या किया अथवा सोचा-विचारा उनके हृदय मे सत्रह वर्ष की आयु मे ही उन सबके बीज अकुरित होने लगे थे। उनका सारा जीवन तदनुरूप उत्फुल्ल और सामजस्यपूर्ण रहा। वह गिरगिट की भाँति रग बदलना नही जानते थे। आरम्भ से अन्त तक उनकी विचारधारा एक-सी बनी रही। अपनी अनन्त ज्ञान-पिपासा और विविध विषयो के प्रति अनुराग-भावना के कारण अवस्था के साथ-साथ उनका ज्ञान भी अपरिमित रूप से बढता गया। नई-नई वस्तुओ अथवा वस्तुओ के नये डिजाइन और भवन-निर्माण के प्रति उनकी रुचि उत्तरोत्तर परिष्कृत होती गई। अपनी नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा या विलक्षण सूझ-बूझ के कारण वह कृषि उत्पादन और बढईगिरी से लेकर स्टोव, घडियो और छकडो तक के निर्माण के नित्य नये नमूने निकालते और ज्ञान के नित्य नवीन क्षेत्र का आविष्कार करने के प्रयत्न मे लगे रहते थे। किन्तु बढती हुई आयु के साथ उन्होने जो कुछ ज्ञानोपार्जन किया उसमे अधिकतर भाग नई जानकारी का ही था। श्री जैफर्सन की सम्पूर्ण आत्मा उनके एक प्रिय सिद्धान्त मे प्रतिफलित हो रही है। इसे वह 'मानव अधिकार' के नाम से अभिहित करते थे। इसी को आज हम 'नागरिक अधिकार' कहते है। आज हमे जो यह अधिकार प्राप्त है,

उसका बहुत-कुछ श्रेय श्री जैफर्सन को ही है।

युवक जैफर्सन ने वर्जीनिया के विलियम्सबर्ग नगर के 'विलियम एण्ड मेरी कालिज' मे शिक्षा पाई। विलियम्सबर्ग उन दिनो वर्जीनिया प्रान्त की राजधानी थी और यहॉ अग्रेज़ गवर्नर रहा करता था। वर्जीनिया के स्वतन्त्र नागरिको द्वारा निर्वाचित एक विधान सभा भी यहाँ थी। अग्रेज गवर्नर सम्राट् के प्रतिनिधि के रूप मे बधी-बधाई राजकीय परम्पराओ का पालन करता था और विधान सभा नाचने-गाने तथा प्रीतिभोज उडाने या ऐसी ही दूसरी प्रकार की कई रगरेलियाँ मनाने का एक सुन्दर स्थान मात्र था। 'रैले टैवर्न' के सुन्दर सुसज्जित कमरो मे विधान सभा के नाम पर सदा नृत्योत्सवो की बहार रहती थी। यदि कोई आज विलियम्सबर्ग जाए तो पुराने नक्शो और चित्रो को देखकर उसे यह निश्चय हो जाएगा कि यद्यपि वर्तमान नगर नव-निर्मित है, और उस प्राचीन युग मे भले ही यह लन्दन, पेरिस और न्यूयार्क के समान न रहा हो, फिर भी इसकी अपनी विशेषताएँ अवश्य रही होगी।

बात तो यह है कि वर्जीनिया के निवासी ठाठ-बाट से रहने के अभ्यासी थे। वर्जीनिया औद्योगिक या व्यापार-प्रधान प्रदेश न होकर एक कृषि-प्रधान प्रदेश था। आनन्दोत्सव मनाने के लिए, विशेष रूप से निर्मित उन देहाती आवासो मे जहॉ जैफर्सन की मित्रमण्डली जुटा करती थी, पुरातन मर्यादाओ के प्रति एक विशेष आदर-भावना लक्षित होती थी। निश्चित ही ठाठ-बाट की यह इमारत उस दास-प्रथा पर खडी थी, जिसे अग्रेजो और बोस्टन निवासियो ने लगभग सौ वर्ष पहले इस प्रदेश मे प्रचारित

किया था । श्री जैफर्सन इस दास-प्रथा के विरुद्ध आजीवन असफल सघर्ष करते रहे । अग्रेजो से सदा उन्हे एक बहुत बडी शिकायत यह रही कि उन्होने दक्षिणी राज्यो मे और विशेषत. उनके प्यारे वर्जीनिया मे इस दास-प्रथा को प्रचारित किया था। श्री जैफर्सन ने स्वाधीनता के घोषणापत्र मे दास-प्रथा को समाप्त करने की धारा को रखने का प्रयत्न किया था, किन्तु दक्षिणी राज्यो के कारण तथा इस भय से कि मैसेचूसैट्स की जनता कही नाराज न हो जाए (क्योकि वे भी अग्रेजो के समान ही इस बुराई के जनक थे) स्वाधीनता के घोषणापत्र से ससद् सदस्यो ने इस धारा को निकलवा दिया ।

वर्जीनिया के जो लोग विधान सभा के सदस्य बनकर या विलियम एण्ड मेरी कालिज मे पढने के लिए विलियम्सबर्ग जाते थे, वे प्राय रईस, स्वभावत बहुत बडे जमीदार लोग थे और उनके हृदय मे अपनी कुलीनता और जमीदारी का बडा अभिमान होता था। इन सब लोगो के पास बहुत से दास होते थे और कालिज मे पढने वाले अधिकतर विद्यार्थी अपने साथ घोडो की तरह दासो को भी ले जाते थे । वास्तविक बात तो यह है कि पुराने वर्जीनिया मे रईसी या जमीदारी नाम की कोई वस्तु न थी, वहॉ की अधिकतर जनता कृषक या व्यापारी वर्ग की थी । हॉ, उनमे से बहुत से अच्छे-अच्छे घुडसवार थे, यहॉ तक कि कुछ पीढियो के बाद वहॉ का प्रत्येक व्यक्ति घुडसवार बन गया । लन्दन की भॉति विलियम्सबर्ग मे भी सुन्दर परदार हैट धारण करने और शाही ढग से सलाम करने की कला धीरे-धीरे बढती जा रही थी । पाउडर मे रगे बालोवाला कनटोप पहने बिना या अपने

बालो को पाउडर से बिना चर्चित किये वर्जीनिया का कोई भी नागरिक सन्ध्याकालीन पार्टियो मे सम्मिलित नही होता था।

टॉमस जैफर्सन की माता वर्जीनिया के एक अत्यन्त शक्तिशाली जमीदार परिवार की थी और उनके पिता एक साधारण किसान थे। और सम्भवत इन दोनो परस्पर विरोधी वृत्तियो के मिश्रण के कारण ही जैफर्सन के हृदय मे इस तथाकथित रईसी के प्रति आजीवन घृणा बनी रही। वह जन्मसिद्ध उत्तराधिकार या बडो के अधिकार को सदा मूर्खता ही मानते रहे और उन्होने अपनी आत्मकथा मे इसकी बडी भर्त्सना की है। किन्तु रईस परिवार मे उत्पन्न होने के कारण वर्जीनिया के इस युवक को एक बहुत बडा लाभ हुआ। इससे उसके हृदय मे यह भावना जागृत हो गई कि अपने आस-पास के प्रत्येक व्यक्ति के साथ समानता के आधार पर किसी भी विषय को लेकर विवाद करने का उसे जन्मसिद्ध अधिकार है। किसी भी विषय पर तर्क या विचार-विनिमय या वादविवाद करना उन्हे बहुत प्रिय था। यदि उन्हे कुलीनता और समृद्धि का यह सुयोग प्राप्त न हुआ होता तो शायद अपने आरम्भिक दिनो मे वह इतनी सरलता से कृत-कार्य न हो पाते। अभिजात्य के प्रति सतर्क रहनेवाला वह तात्कालिक समाज, जैसा कि हम पहले देख चुके है, दास-प्रथा के सहारे ही खडा था। किन्तु सौभाग्य से श्री जैफर्सन आरम्भ से ही इस घृणित प्रथा को हेय समझते रहे। यह महान् डैमोक्रेटिक रिपब्लिकन या उग्रवादी महापुरुष, जैसा कि लोग इन्हे कहते थे, अपने समय के रूढिवादी रईसो और जमीदारो को अपने प्रगति-

शील और सुधारवादी विचारो से जो इतना प्रभावित कर पाये थे, जहाँ उसका बहुत-कुछ श्रेय उनकी अपनी दूसरो को प्रभावित कर सकने की अमित क्षमता को है, वहाँ यह भी मानना पडेगा कि दूसरे लोग उनसे इसलिए भी प्रभावित हो जाते थे कि वह स्वय उन्ही के जैसे सम्पन्न वर्ग के थे। श्री जैफर्सन जो कुछ भी करते या कहते थे, उस कारण वे लोग न तो उनसे सम्बन्ध तोड सकते थे और न उनकी उपेक्षा कर सकते थे।

टॉमस जैफर्सन अभी चौदह वर्ष के ही थे कि उनके पिता 'पीटर' की मृत्यु हो गई और तभी से वह अपने परिवार के मुखिया व सम्पत्ति के अधिकारी बन गये और अपनी माँ, बहन तथा दूसरे लोगो की देखभाल का दायित्व भी उन्ही के कन्धो पर आ पडा। इसके कारण वह कुछ जल्दी बडे हो गये और अपेक्षाकृत छोटी आयु मे ही उन्हे उत्तरदायित्व सँभालना पडा। वह पाँच वर्ष की अवस्था मे अग्रेजी पढने के लिए विद्यालय मे प्रविष्ट हो गए थे और नौ वर्ष की अवस्था मे लेटिन भाषा सीखने के लिए कालिज मे प्रविष्ट होने से पहले दो वर्ष तक वह जेम्स मॉरी नामक ह्विग पादरी से विद्याध्ययन करते रहे, जिन्हे वह अपने अन्त समय तक बडी श्रद्धा के साथ स्मरण किया करते थे। सोलह वर्ष की अवस्था मे वह 'विलियम एण्ड मेरी कालिज' मे प्रविष्ट हो गये।

उनके कालिज जीवन के प्रथम वर्ष के बारे मे कुछ विशेष जानकारी उपलब्ध नही है, पर इतना ज्ञात है कि द्वितीय वर्ष मे वह कुछ बडे और सुप्रसिद्ध व्यक्तियो के मित्र बन गए थे। अपनी प्रभावशाली बातचीत के ढग तथा भद्रोचित आचार के कारण तो वह बडे लोगो के प्रिय बन ही गए थे, साथ ही वायलिन-

वादन मे अपूर्व दक्षता के कारण भी उनकी उन लोगो तक अनायास पहुँच हो गई थी। उस समय का अग्रेज गवर्नर फाकिये सगीतप्रेमी व्यक्ति था और किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए, जो उसके साथ मिलकर गा-बजा सकता, उसका द्वार सदा खुला रहता था। गवर्नर के यहाँ पहुँचनेवाले ऐसे स्वयसेवक सगीत-विशारदो मे नगर और प्रदेश के प्रमुखतम वकील जार्ज वाइथ नामक एक सज्जन भी थे। श्री जैफर्सन के जीवन-निर्माण मे इन महानुभाव का बहुत बडा हाथ था। इस प्रकार हम देखते है कि गाजर के-से बालोवाला युवक टॉमस सत्रह वर्ष की अवस्था मे ही गवर्नर के भवन मे अपने से दुगनी अवस्थावाले बडे प्रतिष्ठित लोगो के साथ शास्त्रीय सगीत मे भाग लिया करता था। इसमे कुछ सन्देह नही कि लन्दन और पेरिस के अत्यधिक विस्तृत कलात्मक क्षेत्र मे विचरने के कारण साहित्य, सगीत तथा कलाओ मे पारगत फाकिये (गवर्नर) और वाइथ जैसे महानुभावो के सम्पर्क और उनके साथ होनेवाली सवाद-गोष्ठियो का एलेबेमार्ले काउण्टी से आये हुए इस विचित्र से बालक पर पर्याप्त प्रभाव पडा।

टोम प्रतिभाशाली विद्यार्थी था। विविध भाषाओ के अध्ययन और इतिहास मे तो उसकी प्रतिभा अबाध थी, फिर भी वह सदा अध्ययन ही मे लगा नही रहता था। वह अपने कालिज जीवन से ही सुन्दरियो के आकर्षक रूप का उपासक था और इस बात के भी पर्याप्त प्रमाण है कि वे भी उसके प्रति अनुराग रखती थी। वह सगीत के साथ नृत्य का भी शौकीन था और सदा सज-धजकर रहता था, तथा कभी-कभी मूर्ख भी बन जाता था। वह इतना अच्छा घुडसवार था कि वर्जीनिया के अच्छे-से-अच्छे

जैफसन बहुधा राजप्रासाद मे वायलिन-वादन मे भाग लिया करते थे ।

घुडसवारो से टक्कर ले सकता था। उक्त गुणो और विशेषताओ के कारण उसकी विलक्षण आकृति और लम्बाई की ओर किसी का ध्यान ही नही जाता था। विलियम्सबर्ग मे उसकी अनेक सहचरियाँ थी, उनमे से एक जिसे वह 'बेलिन्दा' के नाम से पुकारा करता था, उसकी बहुत प्रिय थी। कुछ दिनो बाद इस सुन्दरी का किसी अन्य व्यक्ति के साथ विवाह हो गया और वह उसके साथ आनन्द से रहने लगी, किन्तु टॉमस जैफर्सन कालिज मे लगभग डेढ वर्ष तक उसके विरह मे छीजता रहा। अपने मित्रो को लिखे उसके कुछ पत्रो से, जिनमे से अब तक कुछ सुरक्षित रह गए हैं, यह आभास मिलता है कि वह अपने आपको एक असफल प्रणयी के रूप मे देखकर प्रसन्न होता था।

कालिज मे डेब्नी कार नामक एक मेधावी छात्र उसका घनिष्ठ मित्र बन गया था। काव्यपाठ, घुडसवारी और जीवन-विषयक विविध चर्चाओ मे दोनो एक-दूसरे का खूब साथ दिया करते थे। कार जैफर्सन के लिए एक अत्यन्त प्रिय और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति था। यद्यपि युवावस्था मे ही मृत्यु हो जाने के कारण वह उससे सदा के लिए बिछुड गया, फिर भी श्री जैफर्सन उसे कभी भूल न पाये। माण्टिसिलो मे श्री जैफर्सन के साथ वह भी चिर निद्रा मे सो रहा है, क्योकि मोण्टिसिलो मे अपने जिस भवन को बनाने मे श्री जैफर्सन ने पच्चीस वर्ष लगाये थे उसके लिए स्थान इन दोनो मित्रो ने मिलकर उस समय चुना था, जब कि वे सत्रह वर्ष के थे। टोम और डेब्नी वहाँ जाया करते और पहाड की चोटी पर किसी वृक्ष की छाया मे लेटकर कविता पढते या राजनैतिक विषयो पर चर्चा किया करते थे। दोनो ने आपस मे यह प्रतिज्ञा

की थी कि दोनो मे से किसी की पहले मृत्यु हो जाने पर दूसरा इस बात का ध्यान रखेगा कि उसे इस पहाडी पर ही दफनाया जाए। इस प्रकार सत्रह या अठारह वर्ष की अवस्था से ही जैफर्सन को जगल से भरा हुआ यह पहाडी स्थान अपने ही ढग से अपना भवन बनाने और शान्तिपूर्वक रहने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रतीत होने लगा था।

'विलियम एण्ड मेरी कालिज' मे शास्त्रीय विषयो और विशेषत ग्रीक और लेटिन भाषाओ के अध्ययन की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। जैफर्सन ने अपने कालिज जीवन मे ही ग्रीक, लेटिन तथा फ्रेच भाषाओ पर पूरा अधिकार प्राप्त कर लिया था। बाद मे उन्होने इटालियन, स्पेनिश और ओल्ड एग्लो-सेक्सन भाषाएँ भी अपने-आप सीख ली। यद्यपि कई बार उन्हे इन भाषाओ के शब्दो के सही उच्चारण का पता न लग पाता था, फिर भी जब उनके बाद के जीवन मे कुछ इटली के निवासी मोण्टिसिलो आये तो उन्हे ज्ञात हुआ कि जैफर्सन उनकी भाषा से भली-भाँति परिचित है। बातचीत करते समय वह इटालियन भाषा अच्छी तरह समझ लेते थे यद्यपि स्वय उन्हे उस भाषा मे बातचीत करने का अभ्यास नही था।

यह लाल बालोवाला बालक जो कि गवनर के महल मे वायलिन-वादन मे भाग लिया करता था, अपने सम्पर्क मे आने-वाले दूसरे लोगो को कई बातो से जरूर ही चकित कर दिया करता होगा। क्योकि यद्यपि वह चौदह वर्ष की अवस्था से ही उन्नीस सौ एकड भूमि का स्वामी ऐसा जमीदार था, जिसके यहाँ कई दास रहते थे और माता भी एक अच्छे बडे खानदानी

घर मे पैदा हुई थी, फिर भी वह वर्जीनिया के धनिको के दृष्टि-कोण से कभी सहमत नही हो पाया था। उसका पिता किसान था और एलेबेमार्ले काउण्टी, जहाँ वे रहते थे, वस्तुत एक सीमान्त प्रदेश था। वर्जीनिया के रईस, जिनमे बहुत से जैफर्सन के सम्बन्धी भी थे, जेम्स नदी के साथ-साथ निचले प्रदेशो मे समुद्र की ओर रहते थे। वे सोचते थे कि सुदूर पश्चिमी भागो के रहनेवाले ऊपरी प्रदेश के लोग प्राय अपने घरो मे ही घुसे रहनेवाले कूपमडूक पहाडिये हैं।

वर्जीनिया सबसे बडा और समृद्ध उपनिवेश था, जिसमें आज के पश्चिमी वर्जीनिया, कैण्टकी, ओहियो, इलीनोय, इडियाना, मिशिगन और विसकौन्सिन सम्मिलित थे। पश्चिम का विस्तृत प्रदेश अधिकतर आबाद नही हुआ था और समुद्र तट के साथ रहनेवाले वर्जीनिया के धनिक लोग प्राय उधर नही जाया करते थे। इसके विपरीत जैफर्सन पश्चिमा-भिमुख पहाडी प्रदेशो मे पले थे और उन्हे जैम्स नदी की अपेक्षा ब्ल्यू रिज नामक पर्वतमालाएँ अधिक प्रेरणादायक प्रतीत होती थी। वह एक ऐसे अमेरिकन थे जिन्होने पश्चिम के महत्त्व को बडी स्पष्टता से आँक लिया था।

इसलिए जब वह विलियम्सबर्ग मे अपने पूर्वी मित्रो और सम्बन्धियो से मिले, तो कभी किसी विषय पर झगडा न करते हुए भी वह भली-भाँति समझ गए कि उनके और मित्रो के विचारो मे बहुत अन्तर है। वे लोग अग्रेजो के उस पैतृक अधिकार के पक्षपाती थे, जिसके अनुसार पैतृक सम्पत्ति का अधिकारी सबसे बडा लडका ही हो सकता था।

यद्यपि जैफर्सन स्वय अपने पिता के सबसे बडे पुत्र होने के नाते बहुत बडी जागीर के उत्तराधिकारी थे, फिर भी उन्होने सम्पत्ति मे केवल बडे लडके को ही अधिकार हो, इस कानून के परखचे उडा दिये और पिता की सभी सन्तानो, यहॉ तक कि पुत्रियो तक को भी बराबर अधिकार दिये जाने की व्यवस्था की। उन्होने कालिज छोडने के कुछ वर्ष बाद ही अपने इस विचार को क्रियात्मक रूप दे दिया था, किन्तु हमारे पास इस बात के प्रमाण है कि कालिज जीवन मे भी उनके हृदय मे ये विचार थे। दक्षिण की ओर विलियम्सबर्ग मे वह लोकतन्त्र के समर्थक बनकर आये थे। सीमान्त प्रदेश के सत्रह-वर्षीय इस नव-युवक के हृदय मे यह आस्था बद्धमूल हो चुकी थी कि सभी मनुष्य समान और स्वतन्त्र है, और सबको समान और स्वतन्त्र होने का अधिकार होना चाहिए। ज्यो-ज्यो वह बडे होते गए त्यो-त्यो उनके विचार भी परिपक्व और दृढ होते गए, किन्तु इसमे कुछ सन्देह नही कि उनके वे विचार बीज के रूप मे आरम्भ से ही उनके हृदय मे विद्यमान थे। इन विचारो के कारण उस समय उनके अनुयायी बहुत अधिक नही हो पाये, किन्तु यह भी तथ्य है कि वह इन बातो को लेकर कभी किसी से लडते-झगडते भी नही थे। वह घटो तक किसी विषय को लेकर वाद-विवाद कर सकते थे, किन्तु वह ऐसे साधु प्रकृति के मिलनसार व्यक्ति थे कि सभी क्षेत्रो मे अनायास ही लोकप्रिय बन जाते थे। वह आरम्भ से अन्त तक समान रूप से लोकप्रिय बने रहे। उनके चरित्र की एक बडी विशेषता यह रही कि नृत्य, सगीत, शिकार और पार्टियो के शौकीन होते हुए भी वह तम्बाकू और ताश से सदा बचे रहे।

विलियम्सबर्ग यद्यपि एक छोटी-सी राजधानी थी, फिर भी वह दूसरे बडे नगरो के समान विलासिता या व्यसनो का केन्द्र था। अग्रेज गवर्नर फासिस फाकिये, जिनके यहाँ जैफर्सन प्राय आमन्त्रित होते रहते थे, बडे भारी द्यूत-व्यसनी थे। बात तो यह है कि द्यूत-क्रीडा उन दिनो एक सामान्य-सी बात थी। लोग प्राय पहले डटकर शराब पीते और फिर बडे-बडे दाव लगाकर ताश या जुआ खेला करते थे। तम्बाकू का सेवन खाकर, सूँघकर और पीकर तीनो प्रकार से किया जाता था। जैफर्सन बढिया मदिरा के जीवनभर शौकीन रहे, पर द्यूत-क्रीडा से वह इतनी घृणा करते थे कि ताश खेलना भी नही सीख पाये। वह घोडो के बहुत शौकीन थे, इसलिए घुडदौड मे भी भाग लिया करते थे, पर उन्होने इस घुडदौड मे भी कभी दाव नही लगाया। इसी प्रकार यद्यपि मोण्टिसिलो मे उनकी मुख्य उपज तम्बाकू थी और तम्बाकू की आमदनी से ही उन्होने लन्दन और पेरिस से बहुमूल्य फर्नीचर और दूसरी वस्तुएँ खरीदी थी, फिर भी वह स्वय तम्बाकू को प्रयोग मे नही लाते थे।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि यद्यपि कालिज के दिनो मे वह नवयुवक जीवन के रस का भरपूर उपभोग करता रहा और बडा मिलनसार था, फिर भी उसके हृदय मे कुछ ऐसे विचार थे, जिनके कारण वह सदा बुराइयो से बचता रहा। उस समय उसके जीवन का वह महान् उद्देश्य और आदर्श बाहरी आनन्दोल्लास से भरे हृदय मे ही निहित रहा। हृदय मे निहित इसी गम्भीर मौलिक चिन्तन के कारण आगे चलकर वह महान् कार्य कर सके। छात्र-जीवन में वह प्राय सर्वत्र उच्च रहते।

ज्येष्ठाधिकार कानून

उनसे बडी अवस्था के जो छात्र उनसे प्रेम रखने लगे थे वे भी वास्तव मे विद्वान् थे। जार्ज वाइथ जैसे प्रसिद्ध और प्रतिभाशाली वकील ने इस सर्वश्रेष्ठ लाल बालोवाले बालक पर बहुत अधिक ध्यान दिया था। यदि वह उसमे कुछ विशेष प्रतिभा न देख पाते तो उसकी ओर कदापि आकृष्ट न होते। और वह भी वाइथ ही थे, जिन्होने जैफर्सन के व्यवसाय का निर्धारण किया। इसमे कुछ सन्देह नही कि उन्होने इसके लिए लम्बे समय तक विचार-विनिमय किया था। जैफर्सन के लिए यह बडा सरल था कि वह अपनी लम्बी-चौडी जागीर और दासो की देखभाल करते रहते। बीस वर्ष तक पढ लेने के बाद अपनी जागीर मे ही सुख-चैन की वशी बजाते रहते। किन्तु इतिहास और शासन के प्रति उनकी अभि-रुचि ने उन्हे कानून की शिक्षा पाने और वकील बनने के लिए प्रेरित कर दिया और उन्होने देखा कि उनके पुराने मित्र जार्ज वाइथ इस प्रदेश के सबसे बुद्धिमान् और सर्वश्रेष्ठ वकील है। इस-लिए कालिज छोडने के बाद वह जार्ज वाइथ के कार्यालय मे कानून के अध्ययन के अति कठिन कार्य मे लग गए।
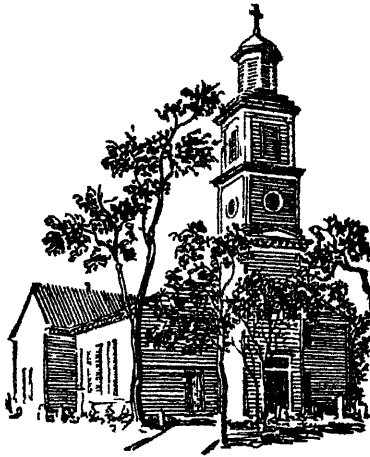
नवयुवक वकील

उस समय आप कानून की शिक्षा कई प्रकार से प्राप्त कर सकते थे। विश्वविद्यालयो मे कानून की शिक्षा देनेवाले कालिज या स्कूल नही थे, और वकालत की परीक्षा मे प्रविष्ट होने के नियम भी बहुत सरल थे। लोग किसी वकील के कार्यालय मे कुछ समय अध्ययन करते, और जब काक तथा ऐसे ही कुछ दूसरे अंग्रेज कानून-विशारदो की कृतियो का अध्ययन कर लेते तथा जब परीक्षा के लिए तैयारी पूरी हो जाती तो वे उसके लिए आवेदन-पत्र भेज देते। कुछ युवक बहुत थोडे समय की तैयारी के पश्चात् ही इस परीक्षा मे प्रविष्ट हो जाते थे। अपनी अद्भुत वक्तृता के प्रभाव से सब श्रोताओ को मन्त्रमुग्ध बना देनेवाले

पैट्रिक हैनरी ने केवल तीन महीने पढकर ही परीक्षा पास कर ली थी। वह इतने थोडे समय मे वकालत की परीक्षा मे पास होने मे इसलिए समर्थ हो गये कि उनकी वक्तृत्व कला इतनी जोशीली और प्रभावशाली थी कि उसके कारण दूसरी छोटी-मोटी त्रुटियो (जैसे कि पुस्तकीय ज्ञान की कमी) की ओर किसी का ध्यान ही नही जाता था।

टॉमस जैफर्सन ने इसके लिए पॉच वर्ष लगाये। वह स्वभाव से ही परिपूर्णता और सर्वागीणता के पक्षपाती थे और इसमे कुछ सन्देह नही कि वह जिस भी वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर सकते थे, उसका पूरी तरह ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहते थे। उनकी यह प्रवृत्ति अन्त तक बनी रही। किन्तु यदि वह भी पैट्रिक हैनरी के समान अद्भुत वक्तृत्व कला के धनी होते तो शायद उतना ज्ञान प्राप्त न कर पाते और न उसके लिए उतना कठिन परिश्रम ही करते। वह वैसी प्रभावशाली वक्तृत्व कला के धनी न थे। उनकी आवाज़ वैसी सुन्दर और सशक्त न थी। वह भावनाओ की अपेक्षा तर्क और युक्तियो पर अधिक विश्वास रखते थे और उन्होने धाराप्रवाह भाषण-कला का एक हथियार के रूप मे कभी उपयोग नही किया था। उनका विश्वास था कि लोगो को युक्ति-युक्त और तर्कसगत बातो से कोई बात मनाई जा सकती है, केवल तर्क करने मात्र से नही और ऐसे व्यक्ति प्राय भाषण-कला मे उतने निपुण नही हो पाते।

किन्तु श्री जैफर्सन के भाषणो को आज जब हम पढते है, तो देखते है कि वह पैट्रिक हैनरी के उन धुआँधार भाषणो से कही अधिक प्रभावशाली हैं। हैनरी उन व्यक्तियो मे से था, जिसे

सब लोग एक बार अवश्य सुनना और देखना चाहते थे। किन्तु उनकी लिखित कृतियो से उस प्रभाव का परिचय नही मिलता जो उनके भाषण जनता पर छोड जाते थे। 'मुझे स्वतन्त्रता दो या मृत्यु' शीर्षक उनका सबसे बडा भाषण यद्यपि हमे आज भी प्रभावित करता है, क्योकि हम उस समय की परिस्थितियो से परिचित रहते हैं किन्तु इस भाषण की भी श्री जैफर्सन के उद्घाटन-भाषण से या किसी अन्य भाषण से तुलना नही की जा सकती।

श्री जैफर्सन कानून के विद्यार्थी और बाद मे वकील के रूप मे भी कठोर परिश्रम, युक्ति-युक्तता और स्पष्ट अभिव्यक्ति के पक्षपाती थे। लेखनकला मे ये विशेषताएँ बहुत प्रभावशाली प्रतीत होती है। ये बाते ऐसी है, जो समय की कसौटी पर खरी उतरती है। इनका आज भी उतना ही महत्व है जितना कि आज से लगभग पौने दो सौ वर्ष पूर्व था। किन्तु कचहरियो के मुकदमो की नीरस बहसो और सभा-सस्थाओ के बडे-बडे अभिभाषणो के प्रसगो मे वे यथोचित प्रभावशाली सिद्ध नही होती। शायद यही कारण है कि श्री जैफर्सन वाणी की अपेक्षा लेखनी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के पक्षपाती होते गये थे। अत्यावश्यकता या अपरिहार्यता के सिवा वह प्राय भाषण नही करते थे, साथ ही वह तात्कालिक प्रभाव उत्पन्न करने की अपेक्षा स्थायी प्रभाव डालने के पक्ष मे थे। वह अमेरिका के आधुनिक युग के सबसे बडे लेखको मे से एक थे। इस दृष्टि से वह अब्राहम लिकन से मिलते-जुलते प्रतीत होते हैं, क्योकि अब्राहम लिकन की वाणी भी उतनी ही कमजोर थी जितनी कि उनकी लेखनी सशक्त।

युवक जैफर्सन कानून का अध्ययन करते समय बडे कठिन परिश्रम मे लगे रहे। नोट्स लिखने, और पत्र-पत्रिकाओ के सग्रह की प्रवृत्ति उनमे प्रारम्भ से ही थी। उनका यह विश्वास था कि एक बार लिख लेने से कोई चीज सदा के लिए याद रह सकती है। (और यदि आप भूल भी जाएँ तब भी लिखे हुए को पढकर आपको कोई भी बात फिर से याद आ ही जाएगी।)

कभी-कभी हमे यह समझने मे बडी कठिनाई होती है कि बाईस वर्ष की अवस्था से ही इतना अधिक व्यस्त रहनेवाला व्यक्ति इतना अधिक लिख भी कैसे पाया। उनके लेखो का सकलन बीस बडी जिल्दो मे हुआ है। और इस बात का भी पक्का विश्वास है कि जो कुछ उन्होने लिखा था, उसका बहुत बडा भाग नष्ट हो गया है। वह नोट्स, विविध विषयो के निबन्ध, लेख, पत्र और अगणित दूसरे विषयो पर लिखने के लिए प्रतिदिन घटो तक लगे रहते थे। किसी विषय को पहले लिखकर फिर उस पर विचार करने मे उन्हे कुछ सुविधा प्रतीत होती थी। उसके बाद अपने उस लेख को वह प्राय फाड डालते थे। किन्तु उनका आरम्भ से ही यह प्रयत्न रहा कि वह अपने विचारो को सुन्दर से सुन्दर भाषा मे अधिक से अधिक स्पष्ट और सरल ढग से अभिव्यक्त कर दें। उन्होने भाषा के अलकरण या बाह्याडम्बर की ओर कभी ध्यान नही दिया। वह तो अपने विचारो को अधिक से अधिक सशक्त, स्पष्ट और सही ढग से व्यक्त करने के लिए ही उपयुक्त भाषा का सहारा लेते थे।

वकालत की पढाई के दिनो मे श्री जैफर्सन को नोट लेने और निरन्तर लिखने का जो अभ्यास हो गया था, वह अमेरिका

के लिए बडा लाभदायक सिद्ध हुआ, क्योकि आगे चलकर देश को जब उनकी सशक्त लेखनी की आवश्यकता पडी, तब वह दृढता और विश्वास के साथ उसका उपयोग करने मे समर्थ हो गये।

श्री जैफर्सन ने उस समय जो कुछ लिखा, उसका बहुत बडा भाग साधारण पुस्तक (कॉमनप्लेस बुक) मे सकलित था। इस पुस्तक के बारे मे वह यह सोचते रहे थे कि यह पुस्तक उनकी माँ के घर आग मे जल गई। किन्तु बाद मे यह पुस्तक मिल गई और आज भी काग्रेशियनल लायब्रेरी मे इसे देखा जा सकता है। यह कृति श्री जैफर्सन के प्रशिक्षण काल की अद्भुत कार्यशक्ति, कठोर परिश्रमशीलता और सावधानी का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वह विलियम्सबर्ग मे पॉच वर्ष तक लगातार नही रह पाये थे। उनकी माता का घर एलेबेमार्ले काउण्टी मे शैडविल नामक गाँव मे था। वह मकान भी उनके ही अधिकार मे था। इसलिए वह अपने मित्र डेब्नी कार के साथ प्राय यहाँ आया करते थे। विलियम्सबर्ग मे या घर पर या अन्यत्र भी कही रहते हुए वह सदा दृढ निष्ठा के साथ कार्यरत रहते थे। उनकी कार्यप्रणाली नियमित और प्राय इतनी व्यस्त थी कि उसके विचारमात्र से ही हम उनके प्रति श्रद्धालु हो उठते है। वह सवेरे बहुत जल्दी उठ जाते और आठ बजे तक विज्ञान की पुस्तके पढते (इसमे भूगर्भ विद्या, वनस्पति-शास्त्र, कृषि शास्त्र और रसायनशास्त्र आदि सभी विषयो की पुस्तके सम्मिलित थी), आठ से बारह बजे तक वह केवल कानून की पुस्तकें पढते थे, बारह से एक बजे तक उन्होने राजनीति की पुस्तके पढने की सिफारिश की थी, (और वे अपनी सिफारिश

पर स्वय पूरी तरह आचरण करते थे), दोपहर के बाद वह इतिहास पढते थे। सायकाल भोजन के बाद सोने तक वह काव्य शास्त्र का अध्ययन करते थे।

वह और उनका मित्र कार प्राय इस कार्यक्रम के अनुसार ही चलते थे। किन्तु यह कार्यक्रम नियमित या एकदम बँधा हुआ नही था, क्योकि वे दोनो ही नृत्य-सगीत तथा सुन्दरियो, पार्टियो और घुडसवारी के बेहद शौकीन थे। उनके इस अध्ययन के प्रारम्भिक डेढ वर्ष मे वर्जीनिया की सुन्दरी, जिसे वे 'बेलिश' के नाम से पुकारा करते थे, के सम्बन्ध मे उनका अन्तर्द्वन्द्व अत्यन्त तीव्र हो गया था। इसलिए वे इस समय गम्भीर अध्ययन के लिए पूरा-पूरा समय न दे पाये।

और उसके बाद भी विलियम्सबर्ग के वातावरण मे एक उत्तेजना-सी व्याप्त हो गई। अमेरिकी क्रान्ति, जो एक घटना, षड्यन्त्र और योजना न होकर अपरिहार्य प्राकृतिक विकासमात्र थी, इस समय अपने प्रारम्भिक रूप मे प्रकट हो रही थी। विलियम्सबर्ग मे तब कोई भी यह न सोच पाया था कि इस क्रान्ति से एक नये राष्ट्र का निर्माण होगा। सन् 1763 मे जब श्री जैफर्सन बीस वर्ष के ही थे, लन्दन मे सम्राट् और अमेरिका के तेरह उपनिवेशो के विशेष अधिकारो और सुविधाओ के सम्बन्ध मे वाद-विवाद शुरू हो गया था। वह बडे उत्साह के साथ उस विवाद मे भाग लेने लग गये। (श्री जैफर्सन का जन्म 13 अप्रैल, सन् 1743 को हुआ था।)

उस समय सम्राट् जार्ज तृतीय का शासन था। वह राष्ट्रो के कार्यो मे अपनी टाँग अडानेवाले मूर्खतम व्यक्तियो मे से एक

प्रतीत होता था। वह अपने विशेषाधिकारो और सुविधाओ के लिए बडा हठी और आग्रही था। उसके विचारो को उसकी माँ और भी अधिक उत्तेजित करती रहती थी। वह उन दिनो को वापस लाने का स्वप्न देख रहा था, जब इग्लैड और सारे साम्राज्य मे सम्राट् की इच्छा को ही कानून मान लिया जाता था। जहाँ तक अमेरिका का सम्बन्ध है, उसके मामले मे वह अकेला पड गया और अपनी मूर्खता और हठधर्मी के कारण अन्त मे उसने अमेरिका के उपनिवेशो को अपना विद्रोही बना लिया। इग्लैड के सब बुद्धिमान् लोग इस मामले मे सम्राट् की इच्छा के विरुद्ध थे, और उसके मत्रिमण्डल के सदस्य भी उसकी योजना को अनिच्छापूर्वक ही स्वीकार करते थे। हाउस आफ कॉमन्स (इग्लैड की लोक सभा) के सर्वश्रेष्ठ वक्ता चाथम और बर्क ने, जो प्रतिपक्षी दल के नेता थे, अमेरिका का पक्ष लिया। पर अग्रेज लोग स्थिति की वास्तविकता को तब तक आँक न पाये, जब तक कि पानी सिर से न गुजर गया।

वास्तव मे अमेरिका के ये उपनिवेश सम्राट् के प्रति स्वामि-भक्त न हो, ऐसी बात न थी, वे तो केवल वे अधिकार प्राप्त करना चाहते थे जो इग्लैड के स्वतन्त्र अग्रेज नागरिको को प्राप्त थे। पीढियो से इस नई दुनिया मे रहने के कारण उनका वश अपने मूल से सर्वथा पृथक् हो गया था, किन्तु वे यह नही जानते थे। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन बढते हुए व्यापारिक हितो के कारण भी उन्हे स्वतन्त्रता की आवश्यकता प्रतीत होने लगी थी। इन उपनिवेशो की जनता भी अपने-आपको अग्रेजो के समान ही समझती थी। वहाँ के लोग अपने देश को 'ब्रिटिश

अमेरिका' कहते थे। वे सम्राट् के प्रति विद्रोह का विचार भी नही कर सकते थे, और इसीलिए वे क्रान्ति के प्रारम्भिक वर्षों मे सम्राट् को अपनी भक्ति का पूरा भरोसा दिलाते रहे। वे बहुत देर तक इस धोखे मे रहे कि सम्राट् के मत्रिगण ही अमेरिकन जनता के अधिकारो मे हस्तक्षेप कर रहे है, स्वय सम्राट् नही। यद्यपि बहुत से लोग वास्तविक स्थिति से भली-भॉति परिचित भी थे।

अमेरिका के तेरह उपनिवेशो और इग्लैड की सरकार मे एक के बाद दूसरे नित्य नये झगडे खडे होते रहते थे। बात यह थी कि मैसेचूसैट्स और जार्जिया के नये राज्यो मे रहनेवाले लोग अब काफी समझदार हो गए थे। वे अपने पैरो पर खडे होने के योग्य हो चुके थे। वे अपना शासन-प्रबन्ध स्वय चलाने मे समर्थ थें और बहुत से मामलो मे औपनिवेशिक विधान सभाओ के द्वारा वे अपना शासन-प्रबन्ध स्वय चला भी रहे थे। प्रत्येक उपनिवेश की राजनीतिक व्यवस्था या शासन-प्रबन्ध पृथक्-पृथक् था। सन् 1754 मे बनाई गई फ्रैकलिन की 'एलबानी योजना' के सिवा सघ राज्य का प्रस्ताव भी अभी उपस्थित नही किया गया था, फिर भी इन तेरह राज्यो मे विचारो की एकरूपता और सहानुभूति की लहर समान रूप से व्याप्त हो रही थी। आज जब हम अमेरिका की क्रान्ति के सम्बन्ध मे विचार करते हैं तो देखते है कि यदि जार्ज तृतीय पर्याप्त कारण प्रस्तुत न कर देता तो भी क्रान्ति की यह घटना ऐसे स्वाभाविक ढग से विकसित हो रही थी कि उपयुक्त समय पर वह अवश्य होकर ही रहती। यह बात दूसरी है कि तब वह क्रान्ति कुछ देर बाद आती,

किन्तु क्रान्ति किसी न किसी समय होती अवश्य। उन दिनो लदन अमेरिका से इतना दूर था कि वह इस नये उठते हुए राष्ट्र पर अपना वास्तविक नियन्त्रण रख ही नही सकता था।

इसके अतिरिक्त इन उपनिवेशो ने फ्रास और इण्डियनो के साथ अनेक बार युद्ध किये थे और उनमे वे सफल भी हुए थे। वे सोचते थे कि जहाँ तक ससार के इस प्रदेश का सम्बन्ध है, वे उन युद्धो मे विजयी हुए है। अमेरिकन लोगो का यह भी विचार था कि वे ब्रिटिश रक्षक सेना के विना भी स्वय सब प्रकार से अपनी हिफाज़त कर सकते हैं, और उन्हे अपनी रक्षा के लिए किसी दूसरे देश के सैनिको की आवश्यकता भी नही है।

इसके विपरीत इग्लैंड का सम्राट् एक दूसरे ही ढग से सोच रहा था। वह चाहता था कि ब्रिटिश रक्षक सेना इन उपनिवेशो मे यथास्थान बनी रहे और ये उपनिवेश उन सैनिको के खर्चे के लिए धन देते रहे। वह स्वतन्त्रता के विचारो के प्रति भी सन्देहशील था और स्वाधीनता व आत्म-निर्णय के अधिकारो को सहन नही कर सकता था। वह नही चाहता था कि ये अमेरिकन उपनिवेश किसी भी तरह स्वाधीन हो जाएँ। इस दिशा मे उसने सबसे बडी भूल यह की कि वर्जीनिया को इग्लैड के चर्च के लिए वहाँ (वर्जीनिया) की विधान सभा के द्वारा स्वीकृत धनराशि से अधिक धन देने के लिए कहा।

बात यह थी कि इग्लैंड के चर्च को वर्जीनिया से जो धन मिलता था, वह उसे तम्बाकू के रूप मे दिया जाता था। उस समय के चर्च-विरोधी वातावरण मे वर्जीनिया की विधान सभा ने 'टू पैनी एक्ट' नामक एक ऐसा कानून पास किया, जिसके द्वारा इग्लैड के

पादरी को एक पौड तम्बाकू के बदले नकद दो पैस दिये जाने की स्वीकृति दी गई थी । इसमे सन्देह नही कि इस हिसाब से पादरी को पहले की अपेक्षा बहुत कम पैसा मिलता । इस प्रकार यह उपद्रव साधारण न रहकर असाधारण रूप ग्रहण कर गया । उन दिनो वर्जीनिया लदन के बिशप (मुख्य पादरी) की जागीर मे था। उसने इग्लैड के पादरी को 'टू पैनी एक्ट' के विरुद्ध भडकाया । तब सम्राट् की प्रिवी कौसिल ने यह निर्णय दे दिया कि एक पौड तम्बाकू के बदले दो पैस देने की बजाय बाजार भाव के अनुसार, जो दो पैस पौड की अपेक्षा कही अधिक था, तम्बाकू का मूल्य चुकाया जाय । इसका अर्थ यह हुआ कि वर्जीनिया की विधान सभा के, जो अपने आपको स्वाधीन सस्था समझती थी, पास किये हुए कानून के विरुद्ध एक दूसरा कानून उसके ऊपर से थोपा जा रहा था ।

ठीक उसी वर्ष जबकि जैफर्सन विलियम्सबर्ग मे कानून का अध्ययन कर रहे थे, हैनोवर से एक पादरी ने वर्जीनिया आकर अपना वेतन लेने के लिए इस उपनिवेश के विरुद्ध मुकदमा दायर कर दिया । वह चाहता था कि सम्राट् के निर्णय के अनु-सार उसे बाजार भाव के हिसाब से सोलह पौड तम्बाकू का मूल्य चुकाया जाय । यह पादरी जैफर्सन का पुराना शिक्षक मॉरी था। न्यायालय ने निर्णय दिया कि पादरी को धन दिया जाना चाहिए, पर कितना धन दिया जाय, इसका निर्णय जूरी (न्यायाधीशो की एक सम्मिलित सभा) करेगी ।

इस प्रकार क्रान्ति का श्रीगणेश हो गया। और बातो के साथ इस प्रसग मे श्री जैफर्सन का पैट्रिक हैनरी के साथ परिचय

भी हो गया। पेट्रिक हैनरी बहुत अच्छा वक्ता था और वह पादरी के विरुद्ध मुकदमे की पैरवी करने के लिए विलियम्सबर्ग आया था। इस समय नगर का वातावरण काफी क्षुब्ध हो गया था। इस समय पैट्रिक हैनरी ने एक ऐसा भडकीला व्याख्यान दिया, जो उसके मबसे जोशीले व्याख्यानो मे से एक है। इसका फल यह हुआ कि जूरी ने पादरी को यथासम्भव कम-से-कम रुपया दिया। अब तो न्यायालय मे एकत्रित भीड ने विजय की खुशी मे न्यायालय के कमरे मे से ही पैट्रिक हैनरी को अपने कन्धो पर उठा लिया। इस प्रकार उपनिवेशो की स्वतन्त्रता की ओर दूसरा कदम उठाया गया।

श्री जैफर्सन इसी समय पैट्रिक हैनरी से मिले और उससे इतने प्रभावित हुए कि वह जब भी विलियम्सबर्ग आता, वह खुले दिल से उसकी आवभगत करते। उन दोनो मे कही कोई समानता न थी, और इसमे भी कोई सन्देह नही कि बाद मे जेफर्सन के हृदय मे हैनरी के प्रति वैसा आदर नही रह पाया था, किन्तु बीस वर्ष के एक नवयुवक को, जिसने इससे पहले 'देश-भक्त' शब्द कभी सुना ही न था, वह जोशीला व्यक्ति बडा विचित्र और आकर्षक प्रतीत हुआ।

'देशभक्त' शब्द उन दिनो इन उपनिवेशो के लिए बिलकुल नया था। उस समय इस शब्द का अर्थ यह समझा जाता था कि देशभक्त व्यक्ति वह है जो अपने मातृदेश (इग्लैड) के प्रति सच्चा और भक्त रहता। किन्तु कुछ समय बाद यह समझा जाने लगा कि 'देशभक्त' का अर्थ यह है कि जो लोग मातृदेश या सम्राट् के आज्ञाकारी नही है, वे ही देशभक्त है। इसलिए सम्राट्

के कृपापात्र और आज्ञाकारी लोगो को (जो 'टोरी' के नाम से प्रसिद्ध है) गाली देने के लिए 'देशभक्त' से बढकर किसी को और कोई शब्द न मिलता था। आज तो 'देशभक्त' शब्द बडा सम्मानसूचक समझा जाता है और प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको देशभक्त जताना चाहता है, किन्तु उन दिनो की बात बिलकुल उल्टी थी। कुछ गिने-चुने व्यक्ति भी ऐसे थे जो अपने देश वर्जीनिया के प्रति वफादार रहकर देशभक्त कहलाने का साहस कर सकते थे, बजाय इसके कि वे अपने पूर्वजो के देश उस इग्लैड के प्रति वफादार रहे जिसे उन्होने कभी देखा भी नही। पैट्रिक हैनरी की इस वीरता और निर्भीकता ने जेफर्सन को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। उस समय (सन् 1763) तक यह प्रसिद्ध व्याख्याता पेट्रिक हैनरी एक अज्ञात सा व्यक्ति था। वह अभी सत्ताईस वर्ष का (जैफर्सन से सात वर्ष बडा) था और उसे वकालत का काम शुरू किये अभी तीन ही वर्ष हुए थे। वह पहले खेती-बाडी के धन्धे मे असफल होकर स्टोरकीपर के व्यवसाय में लग गया और उसमे भी सफलता न पाकर केवल तीन महीने की तैयारी के बाद हैनोवर काउण्टी मे ही वकील बन गया। पादरी के मुकदमे के समय उसके विरुद्ध हैनरी ने जो जोशीली पैरवी की और भडकीले भाषण दिए थे, उनके कारण वह वर्जीनिया मे एक आदर्श महापुरुष के रूप मे प्रतिष्ठित हो गया। इसके पश्चात् वह जीवनभर लोकप्रिय बना रहा। उसे न तो ठीक ढग से शिक्षा ही प्राप्त हुई थी और न वह कुलीन लोगो का-सा शिष्टाचार ही जानता था। उसे रईसो का-सा दिखावा करना भी न आता था। ये सब ऐसी बाते थी, जिनके

कारण भी जनसाधारण उसका बहुत आदर करने लग गये। समय के बीतने के साथ वह बहुत कुछ शान्त होता गया और यहाँ तक कि अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे उसने पुराण-पंथियो का पक्ष लेते हुए कुलीनो के विशेषाधिकारो के समर्थन मे श्री जैफर्सन का विरोध भी किया था। किन्तु इन प्रारम्भिक दिनो मे तो वह एक जीता-जागता तूफान और धधकती लपटो का ही प्रतीक था। विलियम्सबर्ग के अधिकतर लोग उसे देख-कर चकित रह गये और प्रगति-विरोधी और रूढिवादी लोगो को अपने-आपको उसके प्रभाव से मुक्त करने मे काफी समय लग गया। किन्तु जनसाधारण तो उसकी प्रभावशाली वाणी और तेजस्वी दृष्टि का किसी प्रकार भी प्रतिरोध न कर पाते थे। लोगो का इस बात की ओर कभी ध्यान ही नही जाता था कि वह कैसे रहता है, या उसके बाल सँवारे हुए भी है या नही। वे तो उसके भाषणो को सुनकर ही मन्त्रमुग्ध हो जाते थे।

किन्तु जार्ज तृतीय को सबक सिखाने के लिए कोई अकेला प्रभावशाली वक्ता पर्याप्त न था। इसके लिए तो वैसे अनेक व्यक्तियो की आवश्यकता थी। जार्ज तृतीय को यह अनुभव हो रहा था कि अमेरिकन उपनिवेशो मे उसका प्रभाव क्षीण होता जा रहा है, इसलिए उसने निश्चय किया कि इन उपनिवेशो मे वह जो रक्षा-सैनिक भेज रहा है, उपनिवेशो को उनके लिए खर्चा देना ही चाहिए। तदनुसार सम्राट् के मन्त्रियो ने 'स्टाम्प-एक्ट' नामक एक बिल प्रस्तुत किया। इस बिल के अनुसार अमेरिका के प्रत्येक कानूनी दस्तावेज या स्टाम्प वगैरह पर एक विशेष कर लगाया जानेवाला था। यह कर किसी भी कागज पर

कम से कम तीन पेंस और अधिक से अधिक दस पौड तक निर्धारित किया गया था।

यह 'स्टाम्प एक्ट' इग्लैड की लोक सभा (हाउस आफ कॉमन्स) मे पास हो गया और इसके बारे मे वहाँ कोई विशेष रुचि प्रदर्शित नही की गई। किन्तु जब यह समाचार अमेरिका मे सुना गया तो वहाँ रोष का एक तूफान-सा उठ खडा हुआ। वे लोग कहने लगे कि क्या ऐसे सैनिको के लिए, जिनकी हमे कोई आवश्यकता नही, जिन्हे कोई चाहता नही, इग्लैड द्वारा हम पर कोई कर लादा जा सकता है ? क्या हमारी विधान सभा के अधिकारियो को कोई दूसरा देश चुनौती दे सकता है ? इसी प्रकार की युक्तियाँ चारो ओर सुनाई देने लगी। चाहे अमेरिका मे ही क्यो न पैदा हुए हो, फिर भी इग्लैड के निवासियो की तरह हम भी सब प्रकार से स्वाधीन हैं और उन्ही अधिकारो का दावा करते है जो इग्लैड के निवासो अग्रेजो को प्राप्त है। जब तक वे स्वय न चाहे उन पर कोई कर नही लगाया जा सकता, उसी प्रकार हमारी इच्छा के विरुद्ध भी कोई कर नही लगाया जा सकता।

इस प्रकार श्री जैफर्सन इक्कीस-बाईस वर्ष की अवस्था मे ही राजनैतिक क्षेत्र मे कूद पडे और तब से लेकर जीवनभर वह प्राय उसी क्षेत्र मे रहे। उनके कानून के अध्यापक जार्ज वाइथ एक सुसस्कृत नागरिक सज्जन थे। एक समय उनका स्वाभाविक झुकाव अपरिवर्तनवादियो की ओर हो सकता था, किन्तु इस मामले मे तो उनका हृदय भी देश के दूसरे सब लोगो के साथ ही था। उनके कार्यालय मे शिक्षा प्राप्त करनेवाले अन्य

अनेक नवयुवको के समान जैफर्सन पर भी श्री वाइथ का पर्याप्त प्रभाव था। उनके कार्यालय मे कानून का अध्ययन करनेवाले अनेक ऐसे व्यक्ति भी थे, जो बाद मे बहुत बडे-बडे पदो पर पहुँचे। सर्वोच्च न्यायाधीश जान मार्शल भी उनमें से एक थे।

वाइथ को स्वतन्त्रता या विद्रोह के पक्ष मे अपने विचार बनाने मे बहुत ममय लग गया। वह बडो शान्ति और धैर्य से इन विचारो को समझने का प्रयत्न करते रहे, किन्तु दस वर्ष बाद जब उनके शिष्य जैफर्सन ने स्वाधीनता का घोषणा-पत्र प्रस्तुत किया, तो वह नवराष्ट्र-निर्माण के पक्के समर्थक बन गये। बीच के इन दस वर्षो मे वाइथ की विचारधारा भी इन तेरह उपनिवेशो की विचारधारा के समानान्तर चलती रही। इस दशाब्दी का आरम्भ दूसरे अग्रेजो की भाँति सम्राट् के प्रति वफादार रहते हुए अपने अधिकारो की माँग से हुआ था, और इसका अन्त अपने आपको स्वतन्त्र और स्वाधीन अमेरिकन के रूप मे घोषित करने के साथ हुआ।

'स्टाम्प एक्ट' का प्रश्न उपस्थित होने पर एक बार फिर पैट्रिक हैनरी आगे आया। सन् 1765 मे उसे वर्जीनिया की विधान सभा का सदस्य चुन लिया गया और वह एक बार फिर दृढता के साथ अपनी बात कहने के लिए तूफान की भाँति विलियम्सबर्ग आ पहुँचा। वाइथ जैसे बहुत से बडे-बडे लोग उससे डरते थे। पर जैफर्सन अब भी यह समझते थे कि वह एक अनोखा व्यक्ति है और पहले के समान अब भी उसे अपने घर ठहराया करते थे। इस छोटे से कस्बे की सडको पर लाल बालोवाला बाईस वर्ष का नवयुवक जैफर्सन अपने इस प्रसिद्ध मित्र के साथ

बातचीत मे मस्त चलता हुआ प्राय दिखाई दे जाता था। जैफर्सन का यह मित्र अपने व्यक्तित्व के कारण अब तक इतना प्रसिद्ध हो गया था कि प्रत्येक व्यक्ति उसे देखकर उसके सामने झुक जाता या कम-से-कम पहचान तो उसे लेता ही था।

'स्टाम्प एक्ट' को लेकर पैट्रिक हैनरी ने जो भाषण दिया था वह उसके सबसे प्रसिद्ध भाषणो मे से है। वर्जीनिया की विधान सभा ने बहुमत से इस नये कर के विरुद्ध प्रस्ताव पास कर दिया था और अमेरिका के दूसरे उपनिवेशो की विधान सभाओ ने भी ऐसे ही प्रस्ताव पास किये थे, किन्तु पैट्रिक हैनरी ने इसके लिए जैसी भाषा का प्रयोग किया था, विधान सभा के दूसरे सदस्य वैसी भाषा के प्रयोग के लिए तैयार न थे। 'स्टाम्प एक्ट' के विरोध मे दिये गये उसके महान् भाषण का एक सन्दर्भ इतना प्रसिद्ध हुआ कि वह पीढियो तक लोगो को याद रहा। इस महान् वक्ता ने घोषणा की कि जैसे सीजर (का वध करने) के लिए ब्रूट्स था और चार्ल्स प्रथम के लिए क्रामवैल, इसी प्रकार जार्ज तृतीय (यहाँ पर जार्ज तृतीय का शब्द सुनते ही लोग चिल्लाये—'राजद्रोह!') 'राजद्रोह' चिल्लानेवालो मे से एक जार्ज वाइथ भी थे। अपने भाषण को जारी रखते हुए पैट्रिक हैनरी ने कहा—जार्ज तृतीय को चाहिए कि वह इन उदाहरणो से कुछ शिक्षा ले और लाभ उठाये! और यदि राजद्रोह होना ही है तो इससे जितना लाभ उठाया जा सकता है, उठाना ही चाहिए।

हैनरी ने यह व्याख्यान वर्जीनिया के प्रस्तावो के समर्थन मे दिया था। इन प्रस्तावो मे 'स्टाम्प एक्ट' का विरोध और उपनिवेशो की विधान सभाओ को अपने लिए स्वय कानून बनाने के अधिकार

हैनरी चिल्लाया, "यदि राजद्रोह होना ही है तो इससे जितना लाभ उठाया जा सकता है, उठाना ही चाहिए !"

का समर्थन किया गया था। यह सत्य है कि ये विधान सभाएँ बहुत वर्षों से अपने लिए नियम स्वय बना रही थी। किन्तु यह बात अब तक स्पष्ट न हो पाई थी कि यह उनका अधिकार है और उनके मूल देश (इग्लैड) की ससद को इस विषय मे कुछ भी करने का अधिकार नही है और वह इनके लिए कानून नही बना सकती। बात तो यह है कि ब्रिटिश सविधान कभी भी लिखित रूप मे प्रस्तुत नही किया गया, वह परम्परा के अनुसार धीरे-धीरे बनता और बढता रहा है। यहाँ तक कि आज भी इग्लैड मे कोई पूरा लिखित सविधान नही है। तदनुसार उपनिवेशो की विधान सभाएँ क्या कर सकती है और क्या नही कर सकती, और इग्लैड की ससद क्या कर सकती है और क्या नही कर सकती, इसको कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नही खिच पाई थी और यही कारण था कि युक्तियो के द्वारा दोनो पक्षो को सिद्ध करने के लिए काफी गुजाइश थी। अगले दस वर्षों तक स्वतन्त्रता के पक्ष मे बडी दृढता के साथ युक्तियाँ दी जाती रही, जिनका अन्त युद्ध और क्रान्ति मे हुआ।

जार्ज वाइथ के कार्यालय मे कानून की पुस्तको के अध्ययन के बीच मे से अपना मार्ग बना रहे नवयुवक जैफर्सन के लिए स्वतन्त्रता के विचारो की आगे बढती हुई विचारधारा प्रतिपद आकर्षक होती जा रही थी। शासन, सरकार, राजनीति, कानून और इतिहास मे उसकी स्वाभाविक रुचि थी। और जिस समय वह एक पूरे समझदार वयस्क नवयुवक के रूप मे जीवन के क्षेत्र मे प्रविष्ट हुए तो उन्होने देखा कि सामयिक परिस्थितियो के प्रभाव से उस समय का प्रत्येक व्यक्ति इन सब वस्तुओ में गहरी दिल-

चस्पी ले रहा है। विलियम्सबर्ग मे उन्हे कोई ऐसा व्यक्ति दिखाई नही दिया जो सामयिक समस्याओ पर विचार-विनिमय न करता हो, और अपने कुछ विचार न रखता हो।

इतना सब कुछ होते हुए भी प्राय देखा यह गया है कि ऐसी बडी और मन्दगामिनी घटनाओ मे, जिनमे करोडो व्यक्तियो का हाथ हो, धीरे-धीरे एक स्थिरता-सी आती जाती है। तदनुसार 'स्टाम्प एक्ट' को लेकर जो तूफान उमडा था, वह भी धीरे-धीरे दो-तीन वर्ष के लिए शान्त हो गया। श्री जैफर्सन के मित्र पैट्रिक हैनरी ने जब अपना वह प्रभावशाली व्याख्यान दिया था, जिसके अन्त मे उसने कहा था कि यदि यह राजद्रोह है तो इससे जितना हो सके लाभ उठाया जाना चाहिए, तब वह भी वहाँ उपस्थित थे। उस समय जनता का उत्साह पूरे जोश पर था। बाद मे इस घटना पर विचार करते हुए वह कभी-कभी चकित रह जाते और सोचने लगते कि देशभक्ति की ऐसी परम्परा नासमझी और निष्क्रियता की अवस्था मे ही चलती रह सकती थी। सम्राट् जार्ज तृतीय को उसके अपने मन्त्रियो ने ही 'स्टाम्प एक्ट' को वापिस लेने के लिए बाध्य कर दिया था, क्योकि अमेरिका के विरोध के कारण इसका वहाँ (इग्लैड) के व्यापार पर भी बुरा प्रभाव पड रहा था। फिर भी सम्राट् ने अपना यह विचार न छोडा कि उपनिवेशो की विधान सभाओ से परामर्श किये बिना भी उसे उन उपनिवेशो मे कर लगाने का अधिकार है। और राजभक्त लोगो के एक छोटे से किन्तु प्रभावशाली सम्प्रदाय ने उसका पूरा समर्थन किया। ये लोग ससद के वाद-विवादो मे अपना पूरा प्रभाव रखते थे और उनकी आवाज लोग

बडे ध्यान से सुनते थे। इस पर वर्जीनिया और दूसरे सभी उप-निवेश बड क्षुब्ध से दिखाई देने लगे। फिर भी थोडी देर के लिए सार्वजनिक जीवन शान्त-सा हो गया।

इस शान्ति के समय (सन् 1767) मे श्री जैफर्सन ने अपना अध्ययन समाप्त कर वकालत की परीक्षा पास कर ली और वकील के रूप मे विलियम्सबर्ग मे अपनी प्रैक्टिस आरम्भ कर दी। उन्होने सात वर्ष तक वकालत की। सन् 1774 मे सिर पर आती हुई क्रान्ति के कारण वह राजनैतिक कार्यो मे इतने व्यस्त रहने लगे कि उन्हे अपनी प्रैक्टिस के लिए समय ही न मिल पाता। फलत उन्होने इसी वर्ष वकालत का धन्धा छोड दिया। इस समय इस व्यवसाय से उनको पॉच सौ डालर या तीन सौ इग्लिश पौड वार्षिक की आय थी, जो आज की दृष्टि से अधिक नही तो पन्द्रह हजार डालर के बराबर थी। एक नव-युवक वकील के लिए इतनी बडी आय पर्याप्त महत्वपूर्ण थी और इससे यह भी सिद्ध होता है कि वह अपने व्यवसाय मे पूरी तरह सफल थे। उन्हे धन की आवश्यकता न थी। इस धन्धे के बिना भी उनका जीवन निर्वाह बड़ी अच्छी तरह से हो सकता था। किन्तु इससे यह भी सिद्ध होता है कि अपने समय मे वह जन-समाज मे पर्याप्त आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखे जाने लगे थे और खूब सम्मानित हो चुके थे।

उनकी सफलता का रहस्य यह नही था कि वह कोई अच्छे प्रभावशाली वक्ता थे, प्रत्युत् इसका कारण यह था कि वह अपने केस की पूरी तैयारी करते थे और उसके बाद वह जो अपने पक्ष में दलीले देते थे वे खूब वजनदार होती थीं। इस सात वर्ष की

अवधि मे उन्होने जिन मुकदमो मे पैरवी की उनमे से कुछ मे उनके जीवनभर के इस सिद्धान्त का सार निहित है, जिसे वह 'मानव अधिकार' के नाम से अभिहित करते थे। उदाहरण के लिए हमे होवेल बनाम नीदरलैड का स्मरण हो आता है, जिससे दास प्रथा के प्रति उनकी हार्दिक घृणा और उसे किसी भी प्रकार उखाड फेकने की तीव्र लालसा स्पष्ट प्रकट होती है।

यह मुकदमा सन् 1770 मे पेश हुआ था। किन्तु इसका सम्बन्ध मन् 1705 की घटना से था। 65 साल पहले इस वर्ष एक गोरी महिला ने एक ऐसे बच्चे को जन्म दिया जिसका पिता नीग्रो था। उस समय के कानून के अनुसार इस महिला को इस अपराध के लिए कि उसने एक नीग्रो पति से पुत्र उत्पन्न किया है, जब तक उसकी आयु इकत्तीस वर्ष की न हो जाय तब तक के लिए गुलामी की सजा दी गई थी। दासता की इस अवधि मे उसके एक लडकी हुई और वर्षों बाद उस लडकी के भी लडका उत्पन्न हो गया। उस लडके की माँ और नानी के मालिक ने इस लडके को भी गुलाम के रूप मे बेच दिया। अब नये मालिक ने यह दावा पेश किया कि यह नवजात शिशु यानी उस बुढिया का दौहित्र भी इकत्तीस वर्ष की आयु तक उसका गुलाम रहेगा।

श्री जैफर्सन ने यह मुकदमा अपने हाथ मे लिया। उन्होने यह स्वीकार किया कि लडकी और उसकी माँ को कानून निश्चित वर्षो तक गुलाम रहने के लिए बाध्य करता है, परन्तु उन्होने यह दलील दी कि यह गुलामी दौहित्र या और भी दूर की किसी सन्तति तक बढाई नही जा सकती।

इस विचार को व्यक्त कर और ऐसी दलील देते हुए जैफर्सन

ने जिस सिद्धान्त को स्पष्ट रूप से घोषित किया था वह जीवनभर उसी से अनुप्रेरित रहे। वह जीवनभर प्राकृतिक नियम का समर्थन करते रहे और कहते रहे कि प्राकृतिक नियम के अनुसार सब मनुष्य बराबर है। वह जीवनभर मानव-अधिकार और जन्म-जात स्वतन्त्रता की बात करते रहे।

न्यायालय यह सुनकर चकित रह गया कि कोई वकील यह दलील दे रहा है कि नीग्रो लोगो को भी यह अधिकार प्राप्त है या यह कि उनको गुलाम बनाना कोई अपराध या गलत कार्य है। इस मुकदमे मे जैफर्सन हार गये। बात तो यह थी कि न्याया-लय दूसरे पक्ष को सुनना ही नही चाहता था। तब जैफर्सन ने समझा कि यह उनके अपने सिद्धान्तो की पराजय है। इस प्रकार उस बालक को गुलाम बना दिया गया।

अपने सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भिक समय मे भी जेफर्सन अपने विश्वासो को दृढतापूर्वक व्यक्त करने मे कभी नही हिच-किचाये। क्योकि वर्जीनिया राज्य का तो आधार ही यह दास प्रथा थी, इसलिए जैफर्सन का दास-प्रथा-विरोधी सिद्धान्त वहाँ लोकप्रिय तो हो ही न सका, इसके विपरीत क्योकि जैफर्सन स्वय जन्म से ही कई गुलामो के मालिक थे इसलिए उन्ही के मुख से दास-प्रथा के विरोध मे दी गई युक्तियाँ सुनकर वहाँ के लोग स्तब्ध रह गये। वकालत के दिनो मे उन्हे प्रतिवर्ष सौ मुकदमे मिल जाते थे। उनकी आयु का ऐसा कोई दूसरा वकील वहाँ न था जो इस कार्य मे इतना सफल हुआ हो। इतना सब कुछ होते हुए भी उन्हे वकालत का यह धन्धा कुछ बहुत रुचिकर प्रतीत नही हुआ। और जब उन्होने उसे एक बार छोडा तो सदा

के लिए छोड दिया। वकालत के पेशे के बारे मे उनकी सम्मति कोई बहुत अच्छी नही थी। इस सम्बन्ध मे वह कहा करते थे कि वकील की मुख्य बात तो यह होती है कि वह प्रत्येक वस्तु को सन्देह की दृष्टि से देखता है और कभी किसी के आगे झुकना तो वह जानता ही नही। साथ ही वह घटो तक बोलता रहता है।

राजनीति की ओर उनकी स्वाभाविक अभिरुचि ने कुछ बडी अवस्था मे पदार्पण करते ही उन्हे विधान सभा की सदस्यता के लिए प्रत्याशी बना दिया। इक्कीस वर्ष की अवस्था मे वह पारिवारिक सम्पत्ति के स्वामी बनकर स्त्रियो और निराश्रितो के आश्रयदाता और क्रान्ति के उपासक के रूप मे प्रसिद्ध हो गए थे। छब्बीस वर्ष की अवस्था मे वकालत करते समय वह वर्जीनिया की नगरसभा का सदस्य बनने के लिए तैयार हो गए, और एलेबेमार्ले काउण्टी मे रहनेवाले उनके मित्र और पडोसी उन्हे सदस्य बनाने के लिए तत्पर थे। उन दिनो वह अपनी माता से प्राप्त घर शैडविल मे रहते थे। वह घर उन सब मित्रो के लिए सदा खुला रहता और वे लोग भी उन्हे ही अपना प्रामाणिक प्रतिनिधि मानते थे।

वकालत और नगरसभा, जिसमे वह अभी जाने ही वाले थे, इन दोनो प्रकार की प्रवृत्तियो मे डेब्नी कार जैफर्सन का सच्चा और सतत साथी रहा। डेब्नी कार एक प्रभावशाली वक्ता और चतुर नवयुवक था। उसका विवाह उसके इसी मित्र (जैफर्सन) की बहन मार्था से पहले ही हो चुका था। और वह सोचा करता था कि उसका भविष्य भी जैफर्सन के साथ-ही-साथ चले। उन्होने माण्टिसिलो की छोटी पहाडी पर जाने की आदत

कभी नही छोडी । जैफर्सन ने यही पर अपना एक भवन बनाना शुरू कर दिया था । यह भवन उनके जीवन का एक स्वप्न था और वह आज अमेरिका मे बने हुए सुन्दरतम भवनो मे से एक माना जाता है । इस लाल बालोवाले नवयुवक ने वर्जीनिया की नगरसभा मे भी अपने 'मानव अधिकार' सम्बन्धी विचारो को व्यक्त करने में बडी शीघ्रता से काम लिया । राजनीति के क्षेत्र में उनका प्रथम प्रयत्न यह था कि उन्होने एक ऐसा कानून प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार गुलामो के स्वामियो को यह अधिकार दे दिया गया कि यदि वे चाहे तो अपने गुलामो को स्वतन्त्र कर सकते हैं । इसमे सन्देह नही कि इस कानून के रूप मे उनके अपने हृदय की भावनाएँ ही प्रकट हो रही थीं, क्योकि उन्हें दास-प्रथा से घृणा थी, इसलिए वह स्वय अपने यहाँ किसी दास को रखना पसन्द नही करते थे, पर वर्जीनिया के कानून के अनुसार किसी दास को मुक्त भी नही कर सकते थे । वह उसके लिए कितने ही उत्सुक क्यो न हो, पर दूसरे लोगो की दृष्टि मे यह एक खतरनाक काम था ।

विधान सभा के दूसरे सब सदस्यो ने, जो गुलामो के मालिक थे, जैफर्सन को उनके प्रथम प्रयत्न मे ही मात देकर यह सिद्ध कर दिया था कि गुलामो को मुक्त करना वास्तव मे एक बडा खतरनाक काम है । किन्तु इस असफलता से जैफर्सन निराश नही हुए और जब उन्हे अवसर मिला वह सदा दास-प्रथा पर चोट करने से कभी नही चूके । वह अन्तिम समय तक भी इसके विरुद्ध लडते रहे ।

जैफर्सन जैसा बुद्धिमान, चतुर और अच्छे स्वभाव वाला

और मार्था अक्सर वीणा के तार छेड़ती

व्यक्ति सुन्दरियो का भी अनायास ही प्रेमपात्र बन सकता था, विशेषत उस अवस्था मे जबकि उसके पास सम्पत्ति और बडे खानदान जैसी अन्य विशेषताएँ भी विद्यमान हो। जैफर्सन की सुन्दरियो के साथ प्रणय की अनेक कहानियाँ है, परन्तु यह किसी को ज्ञात नही कि उनमे से कितनी विश्वसनीय है। हम तो इतना ही जानते हैं कि इस समय तक जबकि वह अपने कार्य और राज-नीति के साथ आयु की दृष्टि से भी परिपक्वता की ओर बढ रहे थे, तो उनका एक रूपवती विधवा के साथ परिचय हो गया। उसका नाम था श्रीमती बैथर्स्ट स्कैल्टन। वह मार्था वेल्स की पुत्री थी। उसका पिता जॉन वेल्स एक सफल वकील था, और इसके साथ ही वह चार्ल्स सिटी काउण्टी के एक जगल तथा जागीर का स्वामी भी था। जैफर्सन ने उसके बारे मे कहा हे कि वह एक बहुत ही अच्छा साथी है।

मार्था वेल्स का विवाह बैथर्स्ट स्केल्टन के साथ हुआ था, जिसकी विवाह के कुछ समय बाद ही मृत्यु हो गई। मार्था का जैफर्सन के साथ जब विवाह हुआ तो उमकी अवस्था केवल तेईस वर्ष की थी। मार्था सौन्दर्य, आकर्षण, रूप-लावण्य और गरिमा आदि गुणो की धनी थी। सगीत मे भी वह जैफर्सन का साथ देती थी। अपने प्रथम परिचय के साथ ही वे दोनो मिलकर सगीत का आनन्द प्राप्त करने लगे थे। वह वायलिन बजाते और मार्था वीणा के तार छेडती। जैफर्सन को जब भी समय मिलता वह मार्था के यहाँ पहुँच जाते। इस प्रदेश के दूसरे भी कई युवक उसके पिता के यहाँ जाया करते थे। जैफर्सन उनतीस वर्ष की अवस्था मे इस सुन्दरी के हृदय को अपना बनाने मे समर्थ हो गये। सन् 1772

के नववर्ष वाले दिन उनका विवाह हो गया। कुछ समय बाद उनके यहाँ उनकी पत्नी मार्था जैफर्सन, उनकी बहन श्रीमती डेब्नी कार और उनकी पुत्री ये तीनो रहने लगे।

इन वर्षों मे जैफर्सन के जीवन को आनन्दित बनानेवाले उपादान अनायास सुलभ हो रहे थे। वह अपने कार्य और अधिकार मे सब प्रकार से सफल सिद्ध हो रहे थे। उनके पास बहुत बडी जागीर, भवन तथा दास थे। वह सार्वजनिक जीवन और राजनीति मे भी तीस वर्ष की अवस्था से पहले ही पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके थे। इस सब के साथ उनके पास माण्टिसिलो का वह पर्वत प्रदेश था, जिसे वह बहुत प्यार करते थे और जहाँ पर उन्होने अपना विशाल भवन बनाना शुरू कर दिया था। इस भवन का एक बहुत बडा और मुख्य भाग उनके विवाह से पहले ही बनकर तैयार हो गया था। वह विवाहवाले दिन बर्फ के तूफान मे से निकालकर बडे खराब रास्ते को पार करते हुए भी अपनी पत्नी को वहाँ ले गये थे। मार्था के साथ उनके आनन्द का पारावार नही रहा। माना कि इस विवाह से उनको आर्थिक दृष्टि से भी बहुत लाभ हुआ। मार्था को जो पैतृक सम्पत्ति प्राप्त हुई थी, उससे उनकी सम्पन्नता मे और भी वृद्धि हो गई, पर यह मानने का कोई कारण नही कि उन्होने धन के लिए विवाह किया था। बाद के वर्षो मे जबकि उनके राजनीतिक शत्रु उनके बारे मे हर बात कहने को तैयार रहते थे तो उन्होने जैफर्सन पर यह इल्जाम भी लगाया था कि सम्पत्ति के लालच से ही उन्होने मार्था से विवाह किया है।

उनके जीवन मे कुछ दुखदायी प्रसग भी आये। बात तो

यह है कि दुःख के बिना जीवन का कोई महत्व हो नही। पहली बात यह हुई कि जैफर्सन पुस्तको के बेहद शौकीन थे। उन्होने अपने जन्म स्थान शैडविल मे एक निजी पुस्तकालय बनाया था, जिसमे लगभग तीन हजार पुस्तके थी। सन् 1770 की वसन्त ऋतु मे एक दिन वह मकान जल गया और उसके साथ सब पुस्तके भी राख हो गई। एक पुरानी प्रसिद्धि के अनुसार उनके दास ने उनकी वायलिन को तो जलने से बचा लिया पर किसी पुस्तक को नही।

और इसके बाद उनका अभिन्न मित्र डेब्नी कार उनके विवाह के कुछ समय बाद ही उन्हे व्याकुल कर स्वर्ग सिधार गया। उसकी मृत्यु के समय जैफर्सन उसके पास नही थे क्योकि वह घर के जल जाने का समाचार सुनकर शैडविल गये हुए थे। पारिवारिक जनो ने डेब्नी को अपने घर पर ही दफना दिया। किन्तु श्री जैफर्सन घर आये तो उन्होने उसके शव को कब्र से वापिस निकलवा लिया और दोनो मित्रो की बचपन की प्रतिज्ञा के अनुसार उसे माण्टिसिलो मे ले जाकर बडे सम्मान के साथ दफनाया। माण्टिसिलो मे श्री जैफर्सन और उनके परिवार के साथ उनकी कब्र भी विद्यमान है। डेब्नी कार के पीछे उसकी पत्नी मार्था (जो जैफर्सन की बहन थी) और उसके छहो बच्चो को जैफर्सन अपने घर माण्टिसिलो ले गये और उन बच्चो का पालन-पोषण भी अपनी लडकियो के साथ ही किया।

किन्तु उनके वैयक्तिक जीवन के ये सब सुख-दुखमय प्रसंग शीघ्र ही उनके सार्वजनिक जीवन के प्रभाव से दब गये। नव युवक थामस जैफर्सन वर्जीनिया मे अपने अनुयायियो के नेता

तो पहले ही से बन चुके थे। अब वह अमेरिका की स्वतन्त्रता के सिद्धान्त के सबसे बडे प्रवक्ता बनने जा रहे थे। वह क्रान्ति की लोह लेखनी के धनी थे। इसमे कुछ सन्देह नही कि अपने समय के दूसरे महापुरुषो के साथ वह एक नये राष्ट्र के निर्माता तो थे ही, साथ ही ऐसे विचारो के महान् लेखक भी थे, जिनमे यह सिद्ध किया गया था कि स्वतन्त्रता क्यो होनी चाहिए और उसके क्या लाभ हे। किन्तु इसका यह अर्थ नही कि सार्वजनिक जीवन मे उतरकर वह अपने परिवार का ध्यान कुछ कम रखने लगे हो। इसके विपरीत वह सदा अपने परिवार के प्रति पूर्ण कर्तव्य-परायण रहे और उन्होने कई बार प्रयत्न किया कि वह सार्वजनिक जीवन का सर्वथा परित्याग कर दे, ताकि वह अपने परिवार और अपने प्यारे भवन के प्रति अपना पूरा ध्यान और पूरा समय दे सके। किन्तु इस समय के बाद वह कभी भी वैयक्तिक जीवन न बिता पाये। वह राष्ट्र के साथ एकाकार हो गये।

अमेरिका की जनता यह जानकर आश्चर्यचकित और आनन्दविभोर हो उठती है कि अमेरिका और उसके तब से लेकर आज तक होनेवाले महान् विकास के लिए इस अकेले व्यक्ति ने कितना बडा कार्य कर दिखाया था। यूँ तो अमेरिका के निवासी अपनी स्वाधीनता और प्राप्त नागरिक अधिकारो के लिए अनेक प्राचीन महापुरुषो के कृतज्ञ है, किन्तु उनमे से भी इस महापुरुष (श्री जैफर्सन) के तो वे अत्यन्त ही आभारी है, जो अमेरिका के नवराष्ट्र के रूप मे उदित होने की ठीक प्रारम्भिक वेला मे अमेरिका के रगमच पर अपनी देदीप्यमान प्रभा के साथ अवतरित हुआ था।

क्रान्ति की लेखनी

जार्ज तृतीय और उसके राजभक्त मन्त्रियो ने अपने इस मत को कभी नही छोडा था कि उन्हे अमेरिकी उपनिवेशो पर वहाँ की विधान सभाओ की सहमति के बिना भी कर लगाने का अधिकार है। उन्होने अपने व्यापारिक हितो को ध्यान मे रख-कर ही 'स्टाम्प एक्ट' को वापिस ले लिया था। अब जब कि सब प्रकार से शान्ति दिखाई दे रही थी तो चार्ल्स टाउनशैड नामक एक टोरी (राजभक्त) सदस्य ने हाउस आफ कॉमन्स (लोक

सभा) मे एक बिल प्रस्तुत किया, जिसमे इग्लैड से अमेरिका को निर्यात किये जानेवाले अनेक पदार्थो पर कर लगाने का सुझाव दिया गया था। इन वस्तुओ मे कॉच, सफेद और लाल सीसा, चाय और कागज जैसी आवश्यक वस्तुएँ भी थी, और ये वस्तुएँ इंग्लैड के सिवा किसी दूसरे देश से अमेरिका नही पहुँच पाती थी।

श्री जैफर्सन जनता के प्रतिनिधि के रूप मे राजनीतिक क्षेत्र मे आये ही थे कि सम्राट् का यह नया दावा सामने आया। उक्त 'टाउनशैड एक्ट' मे विभिन्न वस्तुओ पर कर लगाने के साथ एक धारा यह भी थी जिसमे कहा गया था कि अमेरिका के राजनीतिक तथा कुछ अन्य प्रकार के अपराधियो पर मुकदमे अमेरिका की कचहरियो मे नही चलाये जाएँगे, प्रत्युत ये सब मुकदमे इग्लैड की कचहरियो को भेजने होगे।

'टाउनशैड एक्ट' की बात सुनते ही अमेरिका के प्रत्येक प्रदेश में रोष की एक लहर-सी दौड गई। सैमुअल एडम्स नामक एक दृढ-निश्चयी महानुभाव ने मैसेचूसैट्स के देशभक्तो के नेतृत्व की बागडोर अपने हाथ में ले ली। सैमुअल एडम्स कभी किसी मामले मे झुकना जानता ही न था। वह अपने प्रदेश की जनता को प्रभावित करने और दृढता के साथ प्रतिरोध की अपूर्व सामर्थ्य मे दूसरे उपनिवेशो के सब नेताओ से आगे था। बोस्टन के नवयुवको पर तो उसका बहुत ही गहरा प्रभाव था।

वर्जीनिया मे भी कुछ ऐसे ही दृढ-निश्चयी व्यक्ति थे जो कि आयु मे अपेक्षाकृत छोटे और स्वय जमीदार व दासो के स्वामी होने के नाते दूसरे नेताओ से भिन्न थे। जैफर्सन, पैट्रिक हैनरी और रिचर्ड हैनरी ली ऐसे ही नेताओ मे थे। शान्त पुरुष

जार्ज वाशिंगटन किसी भी प्रश्न पर बहुत जल्दी उत्तेजित नही होते थे, किन्तु वह भी शीघ्र ही उक्त नेताओ के पक्ष मे हो गए।

सम्राट् अमेरिका के बारे मे बहुत कम जानता था, और उसके मन्त्रियो का ज्ञान भी इस सम्बन्ध मे नही के बराबर ही था। सम्राट् के लिए और इधर उपनिवेशो की जनता के लिए भी यह एक सिद्धान्त का प्रश्न बन गया था। और लन्दन मे बैठे हुए वे लोग यह अनुभव नही कर पाते थे कि सिद्धान्त भी इतने महत्वपूर्ण होते है।

युवक जैफर्सन और उसका मित्र डेब्नी कार (जो अभी जीवित था) अनेक प्राइवेट सभाओ मे भाग लेने लगे और विधान सभा के बडे-बूढे सदस्यो के साथ इस विषय पर विचार-विनिमय करने लगे। रिचर्ड हैनरी ली और फ्रासिस लाइटफुट ली भी उन्ही मे से थे। वे स्वय रईस थे, पर 'टोरी' या राजभक्त नही। वर्जीनिया के जमीदार लोग पहले उनका साथ न दे पाये और उन्हे विभीषण समझते रहे। वे लोग सम्राट् के प्रति पूरी वफादारी के आधार पर लन्दन से बातचीत करना अधिक श्रेय-स्कर समझते थे। किन्तु ये अग्रगामी (जैसा कि उन्हे कहा जाता था) लोग यह मानते थे कि जिस सिद्धान्त को दाव पर लगाया जा रहा है, उसके अनुसार उपनिवेशो के लिए स्वशासन के अधिकार के सिवा और कोई बात हो ही नही सकती।

वे 'रैले टैवर्न' के विभिन्न कमरो मे प्राय मिला करते थे। यह 'रैले टैवर्न' विलियम्सबर्ग में आज भी बडे यत्नपूर्वक ठीक उसी अवस्था मे सुरक्षित है। उन्होने जिस प्रकार 'स्टाम्प एक्ट' का विरोध किया था, उसी प्रकार 'टाउनशैंड एक्ट' का भी विरोध

बिना अनुमति करारोपण

करने का निश्चय कर लिया।

विधान सभा मे इस एक्ट का विरोध करने के लिए उपस्थित किये गए चार प्रस्तावो के सम्बन्ध मे, जो कि यद्यपि श्री जैफर्सन और उनके मित्रो की इच्छा के अनुकूल उतने कठोर नही थे, विधान सभा के बडे बूढे सदस्यो के विचार भी पर्याप्त उग्र थे। इन प्रस्तावो को यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र उपस्थित कर दिया गया, ताकि ब्रिटिश गवर्नर को उनके पास होने मे बाधा डालने का कोई अवसर न मिल जाय। ज्योही इन प्रस्तावो पर मतदान हुआ और गवर्नर ने उन्हे देखा कि उसने सम्राट् के नाम पर विधान सभा को तत्काल भग कर दिया।

जैफर्सन और उनके मित्रो ने जिनकी सख्या केवल अट्ठाईस थी, अगला कदम उठाया। उनका यह कदम निर्णायक था। विधान सभा के सौ सदस्यो मे से ये केवल अट्ठाईस ही थे, पर थे वे दृढ निश्चयी। जब विधान सभा को भग कर दिया गया और उसके द्वार बन्द कर दिये गए तब उनके लिए रेले टैवर्न के अपोलो रूम के सिवा ऐसा और कोई स्थान न रह गया, जहाँ जाकर वे अपनी सभा कर सके और यह निर्णय कर सके कि आगे क्या किया जाय। यह एक नृत्यकक्ष था, जहाँ जाकर वे लोग अनेक रात्रियो मे कई बार नाचा करते थे और बहुत से विवाह भी इसी हॉल मे ही हुए थे। आज इस हॉल का उपयोग एक अत्यन्त गम्भीर कार्य के लिए किया गया।

इन अट्ठाईस सदस्यो ने नॉन-इम्पोर्टेशन एसोशिएशन (आयात न करनेवाली सस्था) नामक एक सस्था का निर्माण किया और सबने मिलकर आपस मे प्रतिज्ञा की कि जब तक

'टाउनशैड एक्ट' वापिस नही ले लिया जाता तब तक इग्लैड से आयातित कोई वस्तु वे नही खरीदेगे। उन्होने इस प्रतिज्ञा मे कागज़ को छूट दे दी थी, क्योकि कागज वहॉ किसी भी दूसरे उपनिवेश से उपलब्ध नही हो सकता था और यह उनके कार्य के लिए अत्यावश्यक भी था।

इसके अतिरिक्त उन्होने यह भी निश्चय कर लिया कि वे अपने निर्णय को क्रियात्मक रूप कैसे देगे। वे लोग विलियम्सबर्ग से अपने-अपने घर चले गए। वहॉ जाकर उन्होने प्रत्येक नगर, कस्बे और प्रदेश मे इग्लैड की वस्तुओ का आविष्कार करने के लिए समितियॉ स्थापित कर दी। यह सारा काम बडे ही सुचारु रूप से और बडी दृढता के साथ किया गया। कोई भी ऐसा व्यापारी जो इग्लैड का सामान खरीदता या बेचता था तत्काल देशद्रोही घोषित कर दिया गया और इस प्रकार उसके सब ग्राहक समाप्त हो गए। यह सब कुछ करते हुए लोगो मे न तो क्रोधोन्माद ही था, न हजूम ही इकट्ठे हुए थे और न कोई तोड-फोड ही हुई थी। यह सब कुछ तो प्रत्येक नगर के ऐसे नेताओ के निर्देशन मे हुआ था जो अपनी देशभक्ति और ईमानदारी के कारण सर्वजन-पूज्य हो चुके थे। क्योकि वर्जीनिया अमेरिका मे सबसे बडा और सबसे समृद्ध उपनिवेश था और क्योकि बहिष्कार असम्भावित रूप से प्रभावशाली और सफल सिद्ध हुआ था, इस-लिए उससे ब्रिटेन के व्यापार को नौ लाख पौड का घाटा उठाना पड गया।

'टाउनशैड एक्ट' वापस ले लिया गया। ब्रिटिश ससद् की दोनो पार्टियॉं इस एक्ट को सर्वाश मे वापिस लेने के पक्ष मे थी।

ह्विग पार्टी, जिसका नेतृत्व चाथम और बर्क करते थे, पहले ही से अमेरिका के पक्ष का बडी दृढता के साथ समर्थन कर रही थी। टोरी दल भी, जिसके नेता लार्ड नार्थ थे, अब यह अनुभव करने लगा था कि इस एक्ट को सम्पूर्णतया वापिस ले लिया जाना चाहिए। नार्थ ने मूर्ख सम्राट् जार्ज तृतीय को बहुत समझाया पर वह कम से कम एक कर को जारी रखने की जिद्द करता ही रहा। वह ऐसा सिद्धान्त के नाम पर करना चाहता था, ताकि यह सिद्ध कर दिया जाय कि ब्रिटिश ससद् को अमेरिका के उपनिवेशो पर उनका परामर्श लिए बिना भी कर लगाने का अधिकार है। इस विषय पर जब ससद मे मतदान हुआ तो दोनो पक्षो मे मत बराबर आए। बेचारा लार्ड नार्थ यह जानते हुए भी कि यह बिलकुल अनुचित है, अपना विशेष निर्णायक मत देने के लिए बाध्य हो गया और इस प्रकार चाय पर लगाए कर के सिवा टाउनशैंड एक्ट वापस ले लिया गया।

और यही अमेरिका की क्रान्ति का वास्तविक श्रीगणेश था।

उस समय अमेरिका के इन उपनिवेशो मे पारस्परिक यातायात के साधन बहुत कम थे और प्रत्येक उपनिवेश का शासन प्रबन्ध लन्दन की देख-रेख मे अलग-अलग विधान सभाओ के द्वारा होता था। मैसेचूसैट्स से जार्जिया तक जाने मे उस समय बडा लम्बा समय लग जाता था, अमेरिका से यूरोप तक पहुँचना उसकी अपेक्षा कही आसान था।

सन् 1773 के 'टी एक्ट' (चाय कानून) ने इन उपनिवेशो को एक दूसरे की ओर ध्यान देने, एक दूसरे से निकट सम्पर्क

स्थापित करने और एक सघ राज्य के सम्बन्ध मे सोचने के लिए बाध्य कर दिया। इस आवश्यकता को सर्वप्रथम अनुभव करने और उपनिवेशो को एक दूसरे के निकट लाकर उन्हे सम्मिलित करने का प्रयत्न करनेवालो मे श्री टॉमस जैफर्सन भी थे।

तब यह हुआ कि इग्लैड से चाय के भरे हुए जहाज इन उपनिवेशो मे पहुँचे और उन लोगो ने जहाजो से माल नीचे उतारने से इन्कार कर दिया। भिन्न-भिन्न स्थानो मे यह काम अपने-अपने ढग से हुआ। उदाहरण के लिए फिलाडेल्फिया मे वहाँ की देशभक्त समिति ने पहले जहाज के कप्तान को सूचित कर दिया कि माल उतारने के किसी भी प्रयत्न का पूरी शक्ति से विरोध किया जायगा। फलत जहाज का कप्तान कुछ दिन बाद अपने आप वहाँ से अपने जहाज के साथ वापिस चला गया। चार्ल्सटन मे जहाज से चाय उतार तो ली गई पर उसे ऐसे सील और नमी से भरे तहखानो मे रख दिया गया जहाँ वह तत्काल सड गई और एक पौड चाय भी बिक्री के लिए स्वीकार न की जा सकी। न्यूयार्क मे एक आँधी ने चाय के जहाज को समुद्र मे दूर ढकेल दिया और इस प्रकार उसे खाली करने का अवसर ही न मिल पाया। बोस्टन मे रुष्ट और सुव्यवस्थित देशभक्तो ने सैमुअल एडम्स के आदेशानुसार बन्दरगाह पर जाकर चाय के जहाज को वही घेर लिया और सारी चाय नीचे फेक दी।

तब जार्ज तृतीय ने बोस्टन के लोगो पर जुर्माना करने की जिद की। बोस्टन की बन्दरगाह को बन्द कर दिया गया और सैनिको की चार रेजिमेटो को आदेश दे दिया गया कि वे वहाँ जाकर सैनिक अधिकार जमा ले।

बोस्टन वर्जीनिया से बहुत दूर था और बहुत से वर्जीनिया के लोगो ने बोस्टन का कभी दर्शन भी न किया था, फिर भी जैफर्सन और उनके मित्रो ने निश्चय किया कि बोस्टन निवासियो के साथ हमे सहयोग करना चाहिए, क्योकि यह मामला हम सब लोगो से समान रूप से सम्बद्ध है। उन्होने यह प्रयत्न किया कि इस समय वर्जीनिया के प्रत्येक व्यक्ति को यह अनुभव हो जाना चाहिए कि वहाँ के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण क्षण आ पहुँचा है। जैफर्सन ने यह विचार रखा कि पहली जून को (जिस दिन बोस्टन का बन्दरगाह बन्द किया जाने वाला था) सब लोग व्रत रखे और प्रार्थना करे। उनका यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

यह सन् 1774 की पहली जून का दिन और यह पहला मौका था जबकि एक दूसरे उपनिवेश के प्रति एकता की भावना एक प्रभावशाली रूप मे प्रकट हुई थी। यह कार्य बडे ही प्रभावशाली और सुचारु ढग से सम्पन्न किया जाने वाला था। जैफर्सन और उनके मित्र चाहते थे कि इस प्रस्ताव को रॉबर्ट कार्टर निकोलस नामक विधान सभा के एक रईस सदस्य विधान सभा मे प्रस्तुत करें। वह ओल्ड गार्ड स्कूल से सम्बन्धित थे और बडे ही शान्त और धार्मिक प्रकृति के सज्जन थे। वह उन लोगो मे थे जिन्हे श्री जैफर्सन और उनके साथियो ने अपने अग्रगामी मोर्चे से अलग ही रखा था।

निकोलस ने व्रत और प्रार्थना के इस प्रस्ताव को विधान सभा मे प्रस्तुत करना स्वीकार कर लिया कि 'बोस्टन पर, जो कि मैसेचूसैट्स उपनिवेश का एक प्रसिद्ध नगर है, शत्रुतापूर्ण

आक्रमण से ब्रिटिश अमेरिका के सिर पर एक बडा सकट उपस्थित हो गया है।'

दूसरे दिन ब्रिटिश गवर्नर ने ऐसा प्रस्ताव पास करने के कारण विधान सभा भग कर दी, और तभी से वर्जीनिया की अपनी स्वतन्त्र विधान सभा बन गई।

व्रत और प्रार्थना का दिन सारे वर्जीनिया मे बडी निष्ठा के साथ मनाया गया। तब श्री जैफर्सन ने इस गैरकानूनी नई बनी हुई विधान सभा मे एक पत्र-व्यवहार समिति स्थापित की और प्रस्ताव रखा कि यह समिति अमेरिका के सब उपनिवेशो के साथ पत्र-व्यवहार करे ताकि सब उपनिवेश अमेरिका के सामूहिक हितो के सम्बन्ध मे विचार-विनिमय करने के लिए जनरल काग्रेस मे आकर एकत्रित हो। इस प्रकार अमेरिका की 'जनरल काग्रेस' के विचार का सूत्रपात हो गया।

वर्जीनिया की नई विधान सभा का निर्वाचन हो गया और अमेरिकन महाद्वीप की पहली काग्रेस के लिए प्रतिनिधि भी चुन लिए गए। । जैफर्सन अपरिहार्य रूप से दोनो के सदस्य थे। अब इस युवक (जैफर्सन) का सितारा बुलन्दी की ओर आ रहा था।

वर्जीनिया की विधान सभा का नाम 'वर्जीनिया कन्वेन्शन' रखा गया था। इस 'वर्जीनिया कन्वेन्शन' मे उनका महत्वपूर्ण कार्य यह था कि यहाँ उन्होने ब्रिटिश अमेरिका के अधिकारो पर एक 'सरसरी नजर नामक प्रामाणिक पुस्तिका प्रकाशित की। अभी तक मानव के स्वभावसिद्ध अधिकारो को स्थापित करने, एक देश से दूसरे देश मे आने-जाने और स्वाधीन विधान सभाओ के द्वारा निर्धारित नियमो और कानूनो के निर्माण की ओर

किसी ने ध्यान ही नही दिया था। श्री जैफर्सन को अब इसके लिए कोई उपयुक्त कारण प्रतीत न हुआ कि यदि अग्रेज अमेरिकन लोगो के लिए कानून बनाते रह सकते है तो उत्तरी यूरोप के सैक्सन लोग अपने वशज अग्रेजो के लिए कानून क्यो न बनाएँ। उन्होने दृढ आस्था और प्रामाणिक अभिव्यक्ति के साथ अमेरिकन उपनिवेशो पर ब्रिटिश पार्लियामेट के किसी भी प्रकार के अधिकार को अस्वीकार कर दिया।

वर्जीनिया का सम्मेलन ऐसे कठोर और दृढ निर्णय के लिए तैयार न था, फिर भी जैफर्सन की पुस्तिका सम्मेलन हॉल मे उपस्थित कर दी गई ताकि प्रत्येक सदस्य उसे पढ ले। निश्चय ही इसका सब पर बहुत प्रभाव पडा। तब इसे प्रकाशित कर दिया गया और तेरहो उपनिवेशो मे वितरित कर दिया गया। इन तेरह ही उपनिवेशो मे कुछ ही महीनो मे नये विचार घर कर गए और उत्तर तथा दक्षिण दोनो भागो मे नई विचारधारा बडी तत्परता के साथ प्रवाहित हो गई।

इस सक्षिप्त पुस्तिका मे दास प्रथा पर गहरी चोट की गई थी। इसके सम्बन्ध मे उन्होने कहा था कि यह दूषित प्रथा इन उपनिवेशो मे दुर्भाग्य से उस समय प्रचारित हो गई जब कि वे अबोध अवस्था मे थे। वह इस बुराई का उत्तरदायी अग्रेजो को मानते थे क्योकि उन्होने इन उपनिवेशो को अफ्रीका से दासो के आयात को बन्द करने की स्वीकृति नही दी थी। उन्होने आगे कहा कि इस प्रकार अग्रेजो ने अमेरिका के राज्यो के स्थायी लाभ की अपेक्षा अग्रेज सामुद्रिक डाकुओ के हितो को विशेष महत्व दिया और इस प्रकार इस कुकृत्य द्वारा मानव के स्वभाव-

सिद्ध अधिकारी को बुरी तरह चोट पहुँचाई।

इसके बाद उन्होने जागीरदारी प्रथा और अमेरिका मे सम्राट् के जागीरे देने के अधिकार पर आक्षेप किया।

उन्होने अपनी इस पुस्तिका के अन्त मे जार्ज तृतीय से अपील की कि वह इन उपनिवेशो के साथ न्यायसगत और युक्ति-युक्त आधार पर बातचीत कर मामले को सुलझा ले। उनके अन्तिम शब्द ये थे—"भगवान् ने, जिसने कि हमे जीवन दिया है, साथ ही स्वाधीनता भी दी है। शक्तिशाली हाथ हमे नष्ट कर सकते है पर हमे एक दूसरे से पृथक् नही कर सकते।"

जैफर्सन की यह पुस्तिका शीघ्र ही सारे अमेरिका मे तो प्रसिद्ध हो ही गई, साथ ही लन्दन मे भी इसका पुनर्मुद्रण हो गया और वहाँ इसका पर्याप्त प्रभाव पडा। इसे इग्लैड मे प्रजातन्त्र के प्रसिद्ध प्रभावशाली प्रवक्ता एडमड बर्क ने इग्लैड मे प्रकाशित करवाया था। बर्क अमेरिकन पक्ष के बडे प्रबल समर्थक थे। अब तो श्री जैफर्सन केवल वर्जीनिया के ही नही रह गए थे, प्रत्युत वह एक अमेरिकन के रूप मे राष्ट्रीय प्रतीक बन गए।

उससे अगले वर्ष जबकि परिस्थिति उत्तरोत्तर बिगडती जा रही थी, सैट जॉन के छोटे से काष्ठनिर्मित चर्च मे रिचमड कन्वेन्शन (सम्मेलन) का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन मे इस बात पर विचार किया गया कि देश की रक्षा के लिए देश-रक्षक सेना बनाई जाय या न बनाई जाय। मैसेचूसैट्स जैसे दूसरे उपनिवेशो मे देश-रक्षक सेना का सगठन पहले ही किया जा चुका था। सैट जॉन चर्च मे ही पैट्रिक हैनरी ने वह अतिप्रसिद्ध व्याख्यान दिया था, जिसके श्रोताओ मे उसके प्रशसक मित्र जैफर्सन

भी उपस्थित थे। इस व्याख्यान मे उसने शान्ति की पुकार मचाने वाले और फूँक-फूँककर कदम उठानेवाले सदस्यो पर सीधा आक्षेप करते हुए कहा था, "आप लोग 'शान्ति-शान्ति' चिल्ला रहे हैं जबकि कही भी शान्ति नही है।" उसने पूछा, "क्या आपको जीवन इतना प्रिय है और शान्ति इतनी मधुर प्रतीत होती है कि आप उसे गुलामी और बन्धन की कीमत पर भी खरीदना चाहते हैं?" उसने अपने व्याख्यान के अन्त मे कहा, "मै नही जानता कि दूसरे लोगो का क्या विचार होगा और वे क्या करना चाहेगे पर मैं अपने लिए कह सकता हूँ कि मुझे या तो स्वतत्रता दो या मृत्यु।"

और अब जार्ज वाशिगटन भी उनके साथ थे। वह जैफर्सन, पैट्रिक हैनरी और रिचर्ड हैनरी ली के इस विचार से सहमत हो गए कि वर्जीनिया को युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए।

इसी बीच लन्दन मे बडा जोशीला और उत्तेजनापूर्ण विवाद चल रहा था। महान् लार्ड चाथम, जो कि काफी वृद्ध और अस्वस्थ होते हुए भी बडे प्रभावशाली व्यक्ति थे, पार्लियामेट मे अमेरिका के पक्ष का बडी कडक और निर्भीकता के साथ समर्थन कर रहे थे। इग्लैड मे जितने भी श्रेष्ठ व्यक्ति थे वे सब अमेरिका के पक्ष के समर्थक थे। यहाँ तक कि अब तो सम्राट् की सरकार भी किसी समझौते के प्रयत्न के लिए कृतज्ञता व्यक्त करने लगी थी। तब उन्होने 'लार्ड नार्थ के सुझाव' शीर्षक योजना प्रस्तुत की। उक्त योजना के अनुसार उपनिवेशो को अपने आप कर लगाने का अधिकार दे दिया था, बशर्ते कि वहाँ की सरकार आवश्यक धन-राशि की सूचना दे दे।

इस पर श्री जैफर्सन को उपनिवेशो की ओर से इसका उत्तर देने को कहा गया। उन्होने लार्ड नार्थ को जो उत्तर दिया था, वह वास्तव मे स्वतन्त्रता की घोषणा का प्राक्कथन ही है। इस उत्तर मे उन्होने पिछले ग्यारह वर्षो मे उपनिवेशो का जो एक के बाद दूसरा अपमान किया गया था, उसकी आलोचना की और सरकारी अधिकारियो ने अमेरिका के विरुद्ध जो उत्तेजनात्मक वक्तव्य दिए थे, उन्हे भी उद्धृत किया था। अपने इस महान् पत्र के अन्तिम वाक्य मे उन्होने पूछा था कि "क्या ससार को अब भी इस प्रकार के धोखे मे रखा जा सकता है कि वह यह मान बैठे कि हम अविवेकी है या हम युक्तियुक्त नही है और वह इस बात मे हमसे सहमत होने मे हिचकिचाये कि केवल हमारे अपने प्रयत्न ही मत्रियो के 'मरो या झुक जाओ' के हुक्म को निरस्त कर सकते है।

और तब उपनिवेशो के सबसे बडे नगर फिलाडेल्फिया मे अमेरिकन महाद्वीप की काग्रेस का पहला अधिवेशन सन् 1774-75 मे हुआ। फिलाडेल्फिया के सम्पन्न लोग अपरिवर्तनवादी थे, और अधिकतर व्यापारी लोग देशभक्ति की भावनाओ को पीछे घसीटने मे अपने प्रभाव का उपयोग कर रहे थे। काग्रेस के इन दोनो अधिवेशनो मे टोरी (राजभक्तो) का, विशेषत न्यूयार्क के टोरियो का काफी प्रभाव था। किन्तु वहाँ कुछ बोस्टन के साम एडम्स जैसे दृढनिश्चयी व्यक्ति भी थे, जो यह भली-भाँति समझते थे कि उन्हे क्या करना है। साम एडम्स एक वृद्ध गरीब और व्यक्तित्व के प्रति लापरवाह सज्जन थे। साम एडम्स और उनके ही जैसे दूसरे अनेक व्यक्तियो को पाकर श्री जैफर्सन

और वर्जीनिया के उनके सब साथियो ने इस नये राष्ट्र की जैसी आत्मीयता का अनुभव किया।

यह एक ऐसी लम्बी लडाई थी, जिसमे बातो का सिलसिला समाप्त होने को ही न आता था और जहाँ छोटी-छोटी बातो मे उत्तेजना हो जाया करती थी। अमेरिकन महाद्वीप की पहली कांग्रेस के पहले अधिवेशन मे किसी ने भी स्वतत्रता की बात कहने की हिम्मत न की और उसके बारे मे सोचा भी बहुत कम लोगो ने था, किन्तु दूसरे अधिवेशन मे यह आवश्यक हो गया। जार्ज वाशिंगटन की अध्यक्षता मे एक सेना मैदान मे उतर चुकी थी। प्रत्येक उपनिवेश के पास उसकी अपनी एक रक्षासेना थी और खून-खच्चर तो पहले ही हो चुका था।

सन् 1775-76 मे जार्ज तृतीय ने अपनी हठधर्मी की पराकाष्ठा कर दी। उसने कहा, 'अमेरिकनो को इतना पीटा जाय कि पूरी तरह से अधीनता स्वीकार कर ले।' इसके सिवा और कुछ नही किया जा सकता। और क्योकि अंग्रेज अपने ही सम्बन्धियो से लडने से कतराते थे इसलिए उसने इस कार्य के लिए जर्मनो को बुला लिया। उसने जर्मनी की छोटी-छोटी रियासतो से सैनिको की टुकडियाँ मँगवा ली। इनमे से बहुत सी रियासतो पर उसके अपने सम्बन्धियो का ही शासन था, और उन्हे अमेरिका के साथ युद्ध करने के लिए खरीद लिया था। उसने अपराधियो को जेलो से इस शर्त पर छोड दिया कि वे उपनिवेशो मे जाकर लडेगे। उसने इग्लैड के नगरो की गन्दी गलियो के 'प्रेस गैग' को लोगो का गला दबाने के लिए प्रयुक्त किया। किन्तु उधर उसी समय उसकी अपनी ससद मे ही कुछ प्रभाव-

उन्होंने स्वाधीनता घोषणा पत्र के प्रत्येक शब्द पर बहस की

शाली वक्ताओ ने अमेरिका के पक्ष-समर्थन मे बडी जोरदार आवाज उठाई। इस समय केवल प्रजातन्त्रवादी सदस्य या प्रतिपक्षी लोगो ने ही नही, अपितु उन बहुत से टोरियो ने भी, जो यह स्पष्ट देख रहे थे कि जार्ज तृतीय एक बहुत बडे साम्राज्य को अपने हाथ से खो रहा है, अमेरिका का समर्थन किया था।

ऐसी परिस्थिति मे यह स्वाभाविक था कि अमेरिकन उपनिवेशो के लिए दो प्रधान वक्तव्यो के निर्माता श्री जैफर्सन काग्रेस मे आगे आते और उसके द्वारा किए गए निर्णयो मे प्रमुख रूप से भाग लेते। एक बडे भारी वादविवाद, जिसका कि कही कोई अन्त ही नही दिखाई देता था, के बाद जब काग्रेस ने स्वाधीनता का निर्णय कर लिया, तब जैफर्सन से कहा गया कि वह स्वाधीनता का प्रस्ताव तैयार करे।

यह सन् 1776 की जून का महीना था। इस समय फिलाडेल्फिया मे असह्य गर्मी पड रही थी, और प्रतिनिधिगण और विशेषत श्री जैफर्सन घुडमक्खियो के आतक से बुरी तरह पीडित थे। स्वाधीनता का घोषणा-पत्र बनाने के लिए एक समिति बनाई गई थी। जॉन एडम्स के साथ श्री जैफर्सन भी इसके एक सदस्य थे, किन्तु स्वाधीनता का घोषणा-पत्र लिखने का सारा भार श्री जैफर्सन के कन्धो पर ही था। वह पूरे दो दिन तक घोषणा-पत्र को तैयार करने मे लगे रहे। काग्रेस मे प्रस्तुत करने से पूर्व उन्होने वह घोषणा-पत्र एडम्स और फ्रैकलिन को दिखाया और उसे अन्तिम रूप दिया। यह घोषणा-पत्र 28 जून को काग्रेस (ससद) मे प्रस्तुत किया गया। दूसरी, तीसरी और चौथी जुलाई को उस पर बहस हुई और अन्त मे सन् 1776 की

4 जुलाई को स्वाधीनता का घोषणा-पत्र अन्तिम रूप से स्वीकार कर लिया गया।

उस समय यह कार्य कितना असम्भव, आश्चर्यजनक और महान् था, इस समय हम उसकी कल्पना नही कर सकते। इस समय तक अमेरिका के तेरह उपनिवेश भिन्न-भिन्न तेरह देशो के समान थे। इन उपनिवेशो मे सडके निकम्मी और यातायात के साधन नही के बराबर थे। वहाँ न तो कोई बडे नगर ही थे और न कोई बडे समाचार-पत्र ही। उनमे आपसी सम्बन्ध भी नही के बराबर था। जैसा कि पहले कहा गया है, अपने साथी उपनिवेश तक मे जाने की अपेक्षा उस समय लन्दन पहुँचना अधिक सरल था।

अब विभिन्न उपनिवेशो से काग्रेस मे सम्मिलित हुए प्रतिनिधियो से कहा गया कि वे अपने आपको एक राष्ट्र के रूप मे घोषित कर दे। यद्यपि अभी तक उनके सामने शासन व्यवस्था की कोई एक निश्चित पद्धति नही थी, कोई विधान नही था, कोई प्रधान नही था और न कोई एक राष्ट्र के रूप मे कार्य करने की प्रणाली ही स्थिर हुई थी, फिर भी उन्हे कहा गया कि वे जन्मजात अधिकार के द्वारा अपने आपको एक स्वाधीन राष्ट्र और स्वाधीन नागरिक घोषित कर दे।

इसमे कोई आश्चर्य की बात नही कि बहुत से व्यक्तियो ने इस स्वाधीनता की घोषणा मे अनेक प्रकार के विघ्न उपस्थित किए। कई लोग सोचते थे कि यह बिलकुल पागलपन है, क्योकि ऐसा करने से इन उपनिवेशो पर अंग्रेजी सेनाएँ छा जायँगी और इन्हें कडा दड दिया जायगा। कुछ लोगो का विचार था कि तेरह

उपनिवेशो का, जो एक दूसरे से सर्वथा अलग है, यह अस्वाभाविक गठबन्धन युद्ध के असह्य दबाव के नीचे कभी नही टिक पायगा। न्यूयार्क और पेसिलवानिया के प्रतिनिधि घोषणा-पत्र के मूल रूप पर विशेष रूप से दुखी और उद्विग्न थे। यहाँ तक कि कई प्रतिनिधि नो घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किए और मत दिए बिना ही अपने घरो को लौट गए थे।

किन्तु जैफर्सन को इसके प्रत्येक अक्षर के लिए पूरा विश्वास था और उन्होने देशभक्ति की पवित्र भावना और दृढ उत्साह के साथ इसे तैयार किया था।

यदि दूसरा कोई व्यक्ति होता तो उसके लिए यह अवसर उसके जीवन मे चरमसीमा का सूचक बन जाता और कम से कम सार्वजनिक जीवन मे तो यह अवसर सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता ही। किन्तु जैफर्सन के लिए तो यह श्रीगणेश से कुछ ही बढकर था। उन्होने कार्य का आरम्भ पहले ही कर दिया था, इसमे तो कुछ सन्देह नही, किन्तु यह उनका सबसे महत्त्वपूर्ण वक्तव्य था, और आज भी यह उनकी सर्वोत्कृष्ट देन मानी जाती है। सन् 1776 की इस सर्वोत्कृष्ट कृति से लेकर मृत्यु तक, बाद की पचास वर्षो की लम्बी अवधि मे वह निरन्तर सार्वजनिक कार्यों मे व्यस्त रहे और अपने देश की अत्यन्त ठोस और महत्त्वपूर्ण सेवा कर गए।

उनकी ये देश-सेवाएँ कौन-कौन सी है?

सबसे पहली बात यह है कि वह ससद् सदस्य, वर्जीनिया की विधान सभा के सदस्य, वर्जीनिया के गवर्नर, विदेशो मे राजदूत और राष्ट्रपति तथा सेवा-निवृत्ति के पश्चात् एक नागरिक, इन

सभी रूपो मे जीवनभर मानव अधिकारो के लिए लडते रहे। हमें आज जो अधिकार मिले हुए है, उनमे से बहुत से उन्ही की कृपा से प्राप्त है। यह ठीक है कि वे अपने उद्देश्य मे सदा सफल नही हुए। विशेष रूप से दास प्रथा को बदल डालने मे उन्हे पूरी सफलता नही मिली, यद्यपि उन्होने स्पष्ट रूप से घोषित कर दिया था कि "यदि इन दासो को स्वतत्र नही किया गया तो इसके परिणाम बहुत भयकर होगे।" इसी प्रकार वह सर्वसाधारण की शिक्षा की योजना को भी क्रियात्मक रूप न दे सके। बात तो यह है कि वह अपने समय से बहुत आगे थे। किन्तु वह ईसाई जगत् मे पहली बार धार्मिक स्वतत्रता के सिद्धान्त को स्वीकार कराने मे समर्थ हो गए। उन्होने नागरिक अधिकारो के लिए सविधान मे अनेक सशोधन प्रस्तुत किए और सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण और प्रगतिशील सुधार किए, जैसे कि लडके और लडकियो को पैतृक सम्पत्ति मे समान अधिकार दिलाया। इसी प्रकार प्रजातत्र के प्रति एक स्वस्थ वातावरण और उत्साह उत्पन्न किया। अमेरिका मे आज जो प्रजातन्त्र के प्रति ऐसा अनुकूल वातावरण है, उसे प्रस्तुत करने का बहुत कुछ श्रेय श्री जैफर्सन को मिलना चाहिए। और चूंकि आज हमे प्रजातन्त्र भी वैसा ही स्वाभाविक प्रतीत होता है, जैसा कि वायु मे श्वास लेना, इसलिए हम यह समझ लेते है कि लोग सदा से इसे मानते रहे होगे।

वह नवयुवक जो बडी-बडी घुडमक्खियो से सताया जाकर भी फिलाडेल्फिया मे इस समय कठिन परिश्रम मे लगा हुआ था, वह भली-भाँति जानता था कि वह क्या कर रहा है। स्वाधीनता

के घोषणा-पत्र की भाषा ऐतिहासिक सूझ-बूझ से युक्त बडे ऊँचे स्तर की है। इसको पढते हुए यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसका लेखक प्रत्येक शब्द के अर्थ और उसके परिणामो से भली-भाँति परिचित था। जैफर्सन यह जानते थे कि इसके बाद एक लम्बा और थका देने वाला युद्ध छिड जायगा। और यह युद्ध सात वर्ष तक चलता रहा। जैफर्सन यह भी भली-भाँति अनुभव करते थे कि यह निवेदन (घोषणा-पत्र) सामान्य रूप से सारे ससार के लिए होना चाहिए क्योकि ससार की सहायता या दूसरे लोगो की कुछ सहायता से ही ये उपनिवेश शक्तिशाली इग्लैड के साथ छिडे हुए युद्ध मे विजय प्राप्त कर सकेगे। जैसा कि सभी लोग जानते है उन्हे यह सहायता अवश्य मिली और उसमे फ्रास का भाग महत्वपूर्ण था।

वह इस बात को भली-भाँति समझते थे कि कोई जन्मसिद्ध स्वाभाविक अधिकार और स्वाभाविक समता जैसे उच्च कारणो के आधार पर ही स्वाधीनता की घोषणा नही कर सकता है, जब तक कि वह उसे पूरा न कर दिखाए। इसका अर्थ यह है कि जिन उपनिवेशो ने स्वाधीनता प्राप्त की थी, अब उन्हे सब लोगो को समान और स्वतन्त्र बनाने के लिए काफी कठिन परिश्रम करना था। इसका अर्थ यह भी था कि बहुत से पुराने कानून, विशेषाधिकार और वर्ग-विशेष के शासन को समाप्त कर देना था, अन्यथा स्वाधीनता की घोषणा मात्र एक बच्चो की बड-बडाहट बनकर रह जाती और जैफर्सन के लिए यह बच्चो की बडबड़ाहट नही थी।

वास्तव मे उन्होने स्वाधीनता के घोषणा-पत्र को इस ढंग

से तैयार किया था कि इसमे सयुक्त राज्य अमेरिका के आगामी इतिहास की एक महान् झलक निर्णयात्मक रूप से देखी जा सकती थी।

आज लगभग दो सौ वर्ष से लगभग सभी अमेरिकन इस छोटे से घोषणा-पत्र को पढते आ रहे है और बहुतो को तो यह पूरा का पूरा या इसका कोई न कोई अश याद भी है। बात तो यह है कि यह घोषणा-पत्र अमेरिकनो के हृदय का ही एक भाग बन गया है।

इसका फल यह हुआ कि "जीवन, स्वाधीनता और आनन्द की खोज मानव के अविच्छेद्य अधिकार है' जैसे विचार हमारे जीवन मे घर कर गये। इसके साथ ही यह कि "शासन अपने शासितो से ही या अपनी जनता से ही वास्तविक अधिकार प्राप्त करता है" और जनता का यह अधिकार और कर्तव्य है कि वह स्वेच्छाचारी शासन को खदेड दे। और यह कि "सेना को असैनिक शासन के अधीन न मानना और उसे असैनिक शासन के नियत्रण से बाहर समझना एक भूल है।" इस प्रकार के और ऐसे ही अन्य अनेक जो विचार इस घोषणा-पत्र मे गुँथे हुए हैं, वे आज अमेरिकन विचारधारा के स्वभाव मे परिवर्तित हो गए है। इन विचारो से ही अमेरिका की बहुत कुछ प्रगति हुई है और यदि आप घोषणा-पत्र की एक-एक पक्ति को पढे तो आप देखेगे कि स्वाधीनता के इस घोषणा-पत्र मे, जो श्री जैफर्सन के हाथो तेतीस वर्ष की आयु मे लिखा गया था, अमेरिका का समग्र भावी इतिहास पहले ही से प्रतिबिम्बित हो रहा है।

ऐसा लगता था कि इस घोषणा-पत्र को लिखते समय उनकी लेखनी को किसी ऐसी अलौकिक अन्त प्रेरणा से बल मिला होगा

जिसे किसी भी अवस्था मे साधारण नही कहा जा सकता। निश्चित ही यह उनके सम्पूर्ण अध्ययन, समग्र कार्यों, सब स्वप्नो और सारे पूर्ववर्ती जीवन के मथन से प्रकट हुआ है। वह इसी क्षण के लिए तेतीस वर्ष तक जिए थे। उन्होने कानून, शासन व्यवस्था और राजनीति तथा विशेष रूप से रोम और यूनान के आदर्शों और विचारो का अध्ययन किया था। वे अग्रेजो की उदार विचारधारा से भी प्रभावित हुए थे। किन्तु यह सत्य है कि स्वाधीनता के लिए जो अभिरुचि उनके हृदय मे अपनी आँखों के सामने दास प्रथा को देखकर बचपन में ही जागृत हो गई थी, उसी के फलस्वरूप प्रकट हुई चिनगारियाँ इस घोषणा-पत्र के रूप मे जगमगा उठी है।

यह विचार श्री जैफर्सन अकेले के नही थे। अमेरिकन महाद्वीप की काग्रेस (ससद) मे ऐसे बहुत से सदस्य थे जो ठीक उसी प्रकार सोचते थे, किन्तु उनके सिवा दूसरा कोई ऐसा व्यक्ति न था जो उन विचारो को इतनीश क्ति, सामर्थ्य और यथार्थता के साथ प्रकट कर सकता।

साथ ही वहाँ ऐसे भी बहुत से लोग थे जो इस घोषणा-पत्र की एक या दूसरी बात से असहमत थे। उन्होने इसके पक्ष मे अपना मत केवल इसीलिए दिया था, क्योकि इस पूरे घोषणा-पत्र को एक साथ ही स्वीकार किया गया था और यह उपनिवेशो के मामले को श्रेष्ठतम रूप में प्रस्तुत करता था तथा बाहर के ससार को अधिक से अधिक प्रभावित कर सकता था।

इसका एक भाग जिसे श्री जैफर्सन ने अपने हृदय, मस्तिष्क और आत्मा की पूरी शक्ति के साथ लिखा था इसमें से हटा दिया

गया। घोषणा-पत्र के इस अश मे दास-प्रथा को, जो ब्रिटिश व्यापारियो द्वारा इन अमेरिकन उपनिवेशो मे प्रचारित की गई थी, अस्वीकार करने के लिए कहा गया था। दक्षिण के बहुत से प्रतिनिधियो ने इस अश का विरोध किया, साथ ही मैसेचूसैट्स के प्रतिनिधियो को भी यह बहुत अखरा, क्योकि वहाँ के लोग स्वय ही अग्रेजो के समान दासो का व्यापार करते थे। इस प्रकार दास प्रथा का विरोध करनेवाले उक्त अनुच्छेद की बलि दे दी गई। वर्जीनिया और मैसेचूसैट्स को गुलामी की प्रथा से छुटकारा पाने के लिए बाद मे बहुत कीमत अदा करनी पडी, क्योकि इसके कारण अमेरिका मे गृह-युद्ध भडक उठा। किन्तु श्री जैफर्सन अपने समय से बहुत आगे थे। उस समय उनके विचारो की ओर ध्यान देनेवाला कोई भी व्यक्ति न था।

उनके लिए ये दिन बडे चिन्तापूर्ण थे, क्योकि जिस समय वह महान् घोषणा-पत्र तैयार कर रहे थे और ससद मे उस पर बहस हो रही थी, उन्ही दिनो उनकी पत्नी मार्था सख्त बीमार हो गई। वह प्रतिक्षण माण्टिसिलो से आनेवाले तेज घुडसवार सन्देश-वाहको की प्रतीक्षा में लगे रहते थे। वह जब भी अवसर निकाल पाते माण्टिसिलो चले जाते, किन्तु फिलाडेल्फिया से वहाँ तक की यात्रा बडी लम्बी और कष्टदायक थी। अपनी पत्नी, परिवार और अपने प्रिय भवन, जिसका वह बडी तत्परता से निर्माण कर रहे थे, के प्रति अत्यन्त उत्सुक रहते हुए भी वह प्राय सोचने लगते थे कि सार्वजनिक जीवन ने उन पर किस तरह अधिकार कर लिया है।

जैफर्सन की एक विचित्र बात यह थी कि यद्यपि वह जन्म

से ही एक सार्वजनिक व्यक्ति थे और सार्वजनिक कार्यों को सबसे अधिक महत्व देते थे, वह वाद-विवाद, बहस-मुबाहिसे और शासन करने के लिए ही मानो पैदा हुए थे, फिर भी उन्होने अपने वैयक्तिक जीवन, परिवार और फार्म के प्रति अपनी निष्ठा को कभी कम नही होने दिया था।
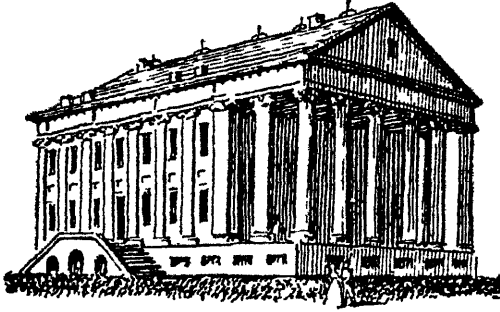
युद्ध-विजय

मार्था फिर कभी पूरी तरह स्वस्थ न हो पाई और वह छ वर्ष बाद सन् 1776 मे स्वर्ग सिधार गई। जैफर्सन यद्यपि अभी युवक ही थे, फिर भी उन्होने दुबारा विवाह नही किया। मार्था जैफर्सन की आनन्दप्रद अनुभूति सदा उनकी जीवनसगिनी बनी रही। बाद में वह कई सुन्दर और बुद्धिमती स्त्रियो के सम्पर्क मे आए, विशेषत पेरिस मे उनका कई आकर्षक युवतियो से सम्पर्क हुआ, किन्तु उनके जीवन मे उनका बहुत कम भाग था, इसलिए यहाँ उनके उल्लेख की आवश्यकता नही है। उनका मुख्य कार्य, जैसा कि वह मानते थे, उनके अपने राज्य वर्जीनिया मे स्थिति को सुधारना था। उन्होने स्वाधीनता का घोषणा-पत्र बहुत ही ऊंची प्रेरणा से प्रेरित होकर ही लिखा था। वह जानते थे कि यह एक ऐतिहासिक लेख है। अब वे इसे सत्य सिद्ध करना चाहते थे।

यद्यपि जैफर्सन का दूसरे लोगो की अपेक्षा भाषा या शब्दो

पर अधिक अधिकार था, फिर भी केवल शब्दो से तो कुछ काम बनने वाला नही था। यदि आप मानव अधिकारो के लिए अपनी स्वाधीनता की घोषणा करते है, तो आप लोगो को यह विश्वास दिलाने के लिए कि आपके आस-पास के सब लोगो को यह मानव अधिकार प्राप्त है, आपको एडी-चोटी का पसीना एक कर देना चाहिए।

स्वाधीनता की घोषणा के तीन मास बाद अक्तूबर सन् 1776 मे श्री जैफर्सन फिर वर्जीनिया के विधान मडल मे आ गए, ताकि वह अपने प्यारे राज्य मे उन ऊँचे आदर्शों को स्वोकार करा सके जिन्हे वह सारे देश पर लागू करना चाहते है।

उस समय ऐसी बहुत सी बुराइयाँ थी, जिन्हे सुधारना आवश्यक था। जैसा कि हम पहले कह चुके है दास प्रथा एक ऐसी बुराई थी जो उनके लिए इतनी भारी सिद्ध हुई कि उसे वह हटा न पाए। यह दास प्रथा देश का एक रिवाज सा बन गया था और यह सब सामाजिक और आर्थिक सस्थाओ मे इतनी गहरी जडे पकड चुकी थी कि जैफर्सन के असहाय शब्दो के द्वारा इसका उखडना असम्भव था। किन्तु और बहुत-सी बाते थी, जिनमे वे सफल हो गए। वह देश के योग्यतम वकीलो मे से एक थे। वह सार्वजनिक और राजकीय अभिलेखो के कुशल लेखक थे। वह देश की दृढ आत्मा और सदाशयता के मूर्त रूप तथा महान् मेधावी पुरुषो मे से एक थे। वह जो सुझाव देते, वे अधिकतर अपने समय और परिस्थितियो से बहुत आगे के होते थे। लोग प्राय उनके विचारो को अस्वीकार कर देते या बडो ही अनिच्छापूर्वक स्वीकार करते। फिर भी वे उन्हे तत्काल नही ठुकरा सकते थे।

क्योकि वे सब जानते थे कि यह 'टॉम जैफर्सन' एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है और हो सकता है कि यह ठीक ही हो, जैसा कि प्राय वह कई बार ठीक प्रमाणित हो चुका है। इस प्रकार अपनी पैतृक परम्परा से प्राप्त परिवार और सौभाग्य के लाभो ने उसे इस योग्य बना दिया था कि लोग आरम्भ से ही उसकी बात को ध्यान से सुने। अब जैफर्सन मे अनोखी प्रतिभा की और भी अधिक वृद्धि हो गई थी। वह सदा कहा करते थे कि वह केवल एक ही प्रकार की कुलीनता या रईसी मे विश्वास करते है, और वह है 'प्रतिभा और गुणो की रईसी'।

उन्होने वर्जीनिया के विधान मडल मे धार्मिक स्वतत्रता, सम्पत्ति के उत्तराधिकार की व्यवस्था और सार्वजनिक शिक्षा को लेकर बहुत कुछ किया। वह पहली दो बातो मे तो सफल हो गए, किन्तु दुर्भाग्य से शिक्षा के मामले मे सफल न हो पाए। इस सम्बन्ध में उन्होने जो सुझाव दिए थे, वे लगभग वही थे जो आज क्रियात्मक रूप लिए हुए है। किन्तु उस समय के वर्जीनिया के जमीदारो और रईसो के लिए यह स्वीकार करना कि राज्य को प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए, एक अटपटी-सी और समय से पूर्व की बात लगती थी।

जैफर्सन को एक अन्य सुधार-कार्य मे सफलता मिल गई। वह उस नियम या कानून को कतई पसन्द न करते थे जिसके द्वारा सम्पत्ति को उसका उत्तराधिकारी किसी दूसरे के हाथो मे न तो बेच सकता था और न बॉट ही सकता था। उनका विचार था कि यह नियम जागीरदारी का एक मुख्य कारण है और लोकतन्त्र का सबसे बडा बाधक है। उन्होने उस कानून का भी

विरोध किया जिसके द्वारा चाहे उसके और कितने ही छोटे लडके और लडकियाँ क्यो न हो, केवल बडे लडके को ही सम्पत्ति का उत्तराधिकारी माना जाता था। वे दोनो बाते जिनसे उन्हे स्वय बहुत बडा लाभ पहुँच रहा था, वर्षो तक उनके निशाने की लक्ष्य रही। वह वर्जीनिया की स्वतत्र विधान सभा में सन् 1776 में पहले कानून को समाप्त करा देने मे सफल हो गए। किन्तु बडे लडके के ही सम्पत्ति पर अधिकार वाले कानून को हटाने मे नौ वर्ष तक, जब कि वह पेरिस मे अमेरिका के राजदूत थे, सफल न हो पाए। इस सम्बन्ध मे उन्होने लिखा है कि इस कानून को हटाने का कार्य उनके नए और अत्यन्त श्रद्धालु अनुयायी नवयुवक वकील जैम्स मुनरो ने किया। यह सत्य है कि जैफर्सन ने जो कुछ कार्य किया वह उनका अपना ही था, फिर भी उनके बहुत से सुझाव क्रियात्मक रूप ग्रहण न कर पाते, यदि उन्हे मुनरो और मैडिसन जैसे साहसी मित्र न मिल जाते। अपने कर्तव्य की पूर्ति के लिए उन्हे जब अन्यत्र जाना पडा, तब उनकी अनुपस्थिति मे भी इन मित्रो ने उनके कार्यो को पूरा कर दिखाया।

वर्जीनिया के लिए श्री जैफर्सन ने सबसे बडा काम यह किया कि उन्होने धार्मिक स्वतत्रता प्रदान करने वाला कानून पास करवाया।

आज के युग मे उस परिस्थिति को समझना बडा कठिन है कि उन दिनो धार्मिक विश्वास और चर्च की सदस्यता की अवस्था कैसी विचित्र थी। प्रत्येक व्यक्ति को स्वीकृत चर्च (यानी इग्लैड के चर्च) की देखभाल के लिए निश्चित धन देना पडता था। यह इग्लैड का चर्च सयुक्त राज्य अमेरिका का

एपिसकोपल चर्च बनने जा रहा था। एपिसकोपल चर्च धर्माध्यक्ष द्वारा शासित चर्च को कहते हैं। वर्जीनिया का प्रदेश लन्दन के बिशप (मुख्य पादरी) की जागीर था और वहाँ अग्रेजो के सभी रीति-रिवाजो और कानूनो का पालन अनिवार्य था। जो भी हो आगामी शताब्दी मे इग्लैड के इस स्वीकृत चर्च की विलासिता और ठाठ-बाट तथा शिकारी पादरियो से लोग बहुत तग आ गए थे। फलत बैपटिस्ट, मैथोडिस्ट और क्वैकर लोगो ने वर्जीनिया के बहुत से लोगो को अपने सिद्धान्तो का अनुयायी बना लिया था। धार्मिक सुधार और नए धार्मिक विचारो की लहरे उक्त नए रूपो मे प्रवाहित हो रही थी। ये नयी प्रवृत्तियाँ पुराने चर्च के भीतर नही पनप पाई थी।

किन्तु कानून के अनुसार किसी भी व्यक्ति को बैपटिस्ट, मैथोडिस्ट या क्वैकर बनने का अधिकार न था। माना कि इनके विरुद्ध कानून का उपयोग कडाई के साथ नही किया जाता था, फिर भी यह सम्भव था कि इसका शक्ति के साथ प्रयोग किया जाय और कई बार ऐसा हुआ भी था कि अपने विश्वासो के अनुसार अपने सिद्धान्तो का प्रचार करने के अपराध मे कई व्यक्तियो को जेल मे डाल दिया गया था।

जैफर्सन ने जब वर्जीनिया के लिए धार्मिक स्वतन्त्रता का कानून बनवाया, उस समय वहाँ पर जो एक विप्लव-सा मच गया था उसे हम आज के लोग समझ नही सकते। आज तो हमे यह धार्मिक स्वतन्त्रता वैसे ही अनायास सुलभ है जैसे जल और वायु या वातावरण। किन्तु ईसाई जगत् मे उस समय कही पर भी कोई ऐसा कानून नही था, जिसमे यह स्वीकार किया गया हो कि

प्रत्येक नागरिक को अपनी इच्छानुसार उपासना करने का अधिकार है। यह बात उस समय लोगो को बिलकुल नई सी लगती थी। यूँ तो पहले भी अनेक बार बहुत से देशो या स्थानो मे धार्मिक सहिष्णुता का भाव विद्यमान था और बहुमत ईश्वर को जिस रूप मे मानता, पूजता, लोग अपनी इच्छानुसार उससे भिन्न रूप की भी उपासना कर सकते थे। रोमन कैथोलिको के द्वारा स्थापित उपनिवेश मेरीलैंड मे धार्मिक सहिष्णुता का भाव था। किन्तु वर्जीनिया ही वह पहला प्रदेश था, जहाँ धार्मिक सहिष्णुता और उदारता को लिखित कानून के रूप मे स्वीकार किया गया और यह कहा गया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अन्तरात्मा की प्रेरणा के अनुसार उपासना करने का पूरा अधिकार है। धार्मिक स्वाधीनता प्रदान करने वाले इस कानून का जैफर्सन को इतना अभिमान था कि उन्होने स्वाधीनता के घोषणा-पत्र और वर्जीनिया मे विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ इस तीसरे कानून के निर्माण को भी अपने जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य बताया और उनकी कब्र पर खुदे हुए शिलालेख मे इन तीनो कार्यो का एक साथ उल्लेख किया गया।

किन्तु धार्मिक स्वाधीनता प्रदान करनेवाले इस कानून को पास कराने और क्रियात्मक रूप देने मे काफी लम्बा समय लग गया। दस वर्ष की लम्बी अवधि खिच गई और अब तक जैफर्सन दूसरे कार्यो मे अत्यधिक व्यस्त हो चुके थे। यहा फिर उनके विश्वासी मित्रो ने उनकी बनाई हुई योजना को पूरा किया। श्री मुनरो उनमे प्रमुख थे।

यूँ तो श्री जैफर्सन अनेक दृष्टियो से बड़े भाग्यवान थे,

किन्तु उनके जीवन का सबसे बडा सौभाग्य यह था कि भगवान् ने ठीक समय पर उन्हे दो अत्यन्त विश्वासी और सुयोग्य शिष्य प्रदान कर दिए। दोनो शिष्य अन्त तक उनके प्रति पूर्ण निष्ठा-वान बने रहे। ये थे जेम्स मैडिसन और जेम्स मुनरो। ये दोनो आगे चलकर उनके बाद क्रमश राष्ट्रपति पद पर प्रतिष्ठित हुए।

सन् 1776 मे जैफर्सन की आयु तेतीस वर्ष, मैडिसन की पच्चीस वर्ष और मुनरो की तो केवल अठारह वर्ष की ही थी। मैडिसन वर्जीनिया सम्मेलन के सदस्य चुने गए थे। यही पर उनकी जैफर्सन से भेंट हुई और उनसे वह इतने प्रभावित हुए कि सदा के लिए उन्ही के बनकर रह गए। युवक मुनरो 'विलियम एण्ड मेरी कालिज' मे पढ रहे थे, उस समय उन्होने वर्जीनिया की तीसरी रेजिमेंट मे लैफ्टिनेंट पद पर काम करने के लिए कालिज छोड दिया और उन्हे न्यू जर्सी और पेंसिलवानिया मे श्री जार्ज वाशिंगटन की अध्यक्षता मे चल रही लडाई मे भाग लेने के लिए उत्तर की ओर भेज दिया गया था। चार वर्ष बाद (सन् 1780 मे) लडाई मे घायल हो जाने के कारण उन्हे सेना से छुट्टी दे दी गई और वह बाईस वर्ष की अवस्था में कानून का अध्ययन करने के लिए जैफर्सन के पास आ पहुँचे। इस प्रकार वह भी उनके आजीवन शिष्य बन गए।

मैडिसन एक पीतवर्ण के अध्ययनशील युवक थे। वह प्राय कृषकाय और रोगो के शिकार बने रहते थे। पर यह सब कुछ होते हुए भी उनमें काम करने की बहुत बडी लगन थी और विशेषत श्री जैफर्सन की सेवा के लिए तो वह अत्यन्त उत्सुक रहते

थे। धार्मिक स्वाधीनता सम्बन्धी कानून बनाने के लिए छेडे गए सघष मे वह जैफर्सन के लैफ्टिनेट या सेनापति थे। ये दो जेम्स (अर्थात् जेम्स मैडिसन तथा जेम्स मुनरो) ही थे, जिन्होने अपने महान् नेता के वर्जीनिया मे अनुपस्थित रहने पर भी उनके द्वारा छेडी गई धार्मिक स्वाधीनता की लडाई को जारी रखा।

श्री जैफर्सन चाहे कही भी जाते, अपने इन दोनो शिष्यो से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखते। उन्होने इन्हे जो पत्र लिखे थे उनकी सख्या बहुत बडी है और वे अभी तक सुरक्षित है। ये दोनो एक प्रकार से उनके पुत्रो के समान थे। वास्तव मे जैफर्सन के अपना कोई पुत्र न था। उन्होने बाद मे मुनरो को लिखे हुए एक पत्र मे कहा है कि "तुम दोनो (मुनरो और मैडिसन) मेरे आनन्द और उत्साह के स्तम्भ हो।" उस समय वह साठ साल से भी अधिक बडे हो गए थे और राष्ट्रपति के पद से त्यागपत्र देने की सोच रहे थे, किन्तु उनकी प्रसन्नता के ही ये दोनो स्तम्भ तीस वर्ष तक उनकी पूरी-पूरी सेवा करते रहे।

पहले धार्मिक स्वाधीनता के सघर्ष का नेतृत्व मैडिसन करते रहे और जब वह ससद के सदस्य बनकर फिलाडेल्फिया चले गए तो इस सघर्ष की बागडोर मुनरो ने सम्भाल ली। उधर सन् 1779 मे जैफर्सन को ऊँचा पद देकर निष्क्रिय कर दिया गया था। अब उनके पास इस सघर्ष मे सीधा भाग लेने के लिए अवसर न रह गया था। उन्हे वर्जीनिया का गवर्नर बनाकर विधान सभा की सदस्यता से निवृत्त कर दिया गया था। तब से लेकर सभी वैधानिक लडाइयाँ दूसरे लोगो ने ही लड़ी। किन्तु जैफर्सन का मार्ग-निर्देशन और परामर्श सदा ही प्राप्त होता रहा।

वर्जीनिया के गवर्नर के रूप मे उन्हे इस सबसे बूढे उपनिवेश की सैनिक सुरक्षा का दायित्व सँभालना पडा। इस समय श्री वाशिगटन की सेना क्या उत्तर और क्या दक्षिण चारो ओर से कठिनाइयो मे घिरी हुई थी। वाशिगटन स्वय भी वर्जीनिया के ही निवासी थे। जब उन्होने वर्जीनिया की सेना की माँग की, तो जेफर्सन अपनी सेना भेजने मे जरा भी नही हिचकिचाए। उन्होने तत्काल अपनी सेनाएँ भेज दी। कुछ समय तक यह सर्वथा निरापद बना रहा, क्योकि वर्जीनिया पर आक्रमण नही किया गया था। इसलिए वर्जीनिया के श्रेष्ठतम सैनिक शस्त्रास्त्र और गोला-बारूद तथा धन न्यूयार्क, न्यू जर्सी और पेंसिलवानिया की रक्षा के लिए भेजा जाता रहा।

यह सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा, जब तक कि सन् 1780-81 मे वर्जीनिया पर ही आक्रमण न हो गया। इस समय जैफर्सन के पास ब्रिटिश सेना का सामना करने के लिए कोई विशेष साधन न थे। युवक मार्क्विस द् लफायेत्त ही एक ऐसे व्यक्ति थे जो मुट्ठीभर सेना के साथ उत्तर से सहायता के लिए आए थे। किन्तु, उनके पास पर्याप्त सैनिक नही थे, और छुटपुट लडाई तथा चतुराई के साथ पीछे हट जाने के सिवाय वह और कुछ नही कर सकते थे। रिकार्ड जला दिया गया। जैफर्सन स्वय और उनकी सरकार अंग्रेजी घुडसवार सैनिको के एक जबर्दस्त हमले के समय पकडे जाने से बडी कठिनाई से बच पाए। और अंग्रेजी सेना माण्टिसिलो तक जा पहुँची।

युवक कर्नल जेम्स मुनरो, जो अभी तक यह निश्चय नही कर पाए थे कि वह कानून (वकालत) की पढाई करे या एक सैनिक

ही बने रहे, इस कठिन समय मे जैफर्सन के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुए। ठीक इसी समय उन्होने (जेम्स मुनरो) जबकि उनकी अवस्था बाईस वर्ष की ही थी, जैफर्सन को ये हृदयस्पर्शी शब्द लिखे थे, "यदि मै आपसे सम्पर्क स्थापित न कर पाता तो बहुत सम्भव था कि मै समाज या सामाजिक कार्यो से ही किनारा कर बैठता। आपने मुझे पहचाना और मेरी शिक्षा-दीक्षा के लिए सही मार्ग दिखाया, मुझ पर पूरा भरोसा किया। मुझे विश्वास है कि मैं इस समय दूसरो की दृष्टि मे जो भी कुछ हूँ, या भविष्य मे जो भी कुछ बन सकना हूँ, यह सब कुछ आपकी मित्रता का ही फल है।"

जैसा कि सब लोग जानते है वर्जीनिया मे क्रान्ति-युद्ध की लडाई समाप्त हो गई। अन्त मे श्री वाशिंगटन ने जफर्सन की निराश अवस्था मे की गई प्रार्थना पर ध्यान दिया और वह अपनी मुख्य सेना के साथ स्वय दक्षिण आ पहुँचे और कैरोलीनास से जनरल ग्रीन भी आ गए। इसी प्रकार फ्रासीसी सैनिक, जो अभी-अभी जहाज से उतरे थे, काउण्ट रोकेमब्यू के नेतृत्व मे वाशिंगटन की सेना मे आ मिले। अग्रेज सेनापति लार्ड कार्नवालिस युवक लफयेन्त का (जिसे अभी एक बच्चा ही समझा जाता था) वर्जीनिया मे चारो ओर से पीछा करता और घेरता हुआ यह आशा लगाए बैठा था कि वह उसे पकडकर लन्दन सरकार को एक उपहार के रूप में भेंट करेगा। किन्तु लफायेत्त यद्यपि युवक था, फिर भी इतना चतुर और अध्यवसायी था कि उसे कार्नवालिस किसी भी प्रकार पकड न पाया। तब कार्नवालिस ने अपनी सुरक्षा के लिए प्रायद्वीप के अन्तिम छोर पर

हुए भी

ाम मे लगे

अंग्रेजों द्वारा वाशिंगटन के सम्मुख यार्कटाउन मे । में फ्रांसीसी

सी सज्जन ने

बसे हुए यार्क टाउन नामक गाँव मे किलेबन्दी कर ली। वाशिगटन ने उसे वही जा घेरा। कार्नवालिस समुद्र मार्ग से बचकर निकल जाता, पर इसी समय डोग्रेम के नेतृत्व मे फास का जहाजी बेडा आ पहुँचा और उसने कार्नवालिस की सहायता के लिए आए हुए अग्रेजी जहाजी बेडे को हरा दिया। कई सप्ताह तक चारो ओर से घिरे रहने के बाद कार्नवालिस ने अपनी सारी सेना के साथ आत्मसमपण कर दिया, और इसके साथ ही युद्ध समाप्त हो गया।

कर्नल जेम्स मुनरो उस समय मुश्किल से तेईस वर्ष के थे, और लफायेत्त भी लगभग इतने ही बडे थे। जार्ज वाशिगटन के दूसरे सहायक ऐलेग्जैडर हैमिल्टन की अवस्था भी उस समय चौबीस वष की हो थी। इसलिए अडतालीस वष के जैफसन उन सबको वयोवृद्ध राजनैतिक पुरुष लगते थे। किन्तु इस विजय के अवसर पर उन तेरह राज्यो की जनता की भाँति वह भी उन सबमे बडे जार्ज वाशिगटन के समक्ष झुक गए। यद्यपि वह बूढे नही थे, उनचास वर्ष के ही थे, फिर भी वह सर्वोच्च और सबसे महान् थे। और सारे देश के साथ इन लोगो ने भी यह अनुभव किया कि यह वास्तव मे वाशिंगटन की ही विजय है। युद्ध जब समाप्त होने वाला था, उसी समय जैफर्सन की वर्जीनिया की गवर्नरी का कार्यकाल समाप्त हो गया। और उनके स्थान पर टॉमस नैलसन ने गवर्नर के पद का कार्यभार सम्भाल लिया। यद्यपि युके माण्टिसिलो मे अपना काम-काज करने को भी समय उसे कार्नवालिबीच-बीच मे ये जो छोटे-मोटे अवकाश के क्षण वालिस ने अपनउनके लिए बहुत मूल्यवान थे। क्योंकि उन्होने

अपने मकान, बाग, अस्तबल, आउटहाउस, ग्रीन हाउस, पार्क और सडके बनाने का काम कभी नही बन्द होने दिया था। अब उन्हे सार्वजनिक या सरकारी कार्य मे कोई खास रुचि या आकर्षण नही रह गया था। बहुत से लोगो के मत मे उनकी इस अरुचि का कारण यह था कि वर्जीनिया की विधान सभा ने उनके वाशिंगटन को अपने सैनिक देने के कार्य की आलोचना की थी। क्योकि उस समय यह पुराना राज्य (वर्जीनिया) स्वय खतरे मे था। पर वास्तविक बात यह है कि उनकी प्राणप्रिय पत्नी मार्था जैफर्सन उस समय मरणासन्न अवस्था मे पडी हुई थी और सितम्बर, 1782 मे वह सदा के लिए उन्हे छोडकर स्वर्ग सिधार गई। ऐसी अवस्था मे जैफर्सन उन्हे छोड नही सकते थे। इसीलिए ससद ने जब उन्हे किसी उच्च पद पर नियुक्त करना चाहा तो उन्होने इस नियुक्ति को स्वीकार करने मे अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। इसी प्रकार ससद के उम्मीदवार के रूप मे भी वह खडे नहीं हुए यद्यपि यह निश्चित है कि यदि वह ससद की उम्मीदवारी को स्वीकार कर लेते तो वह अवश्य चुन लिए जाते। मैडिसन मुनरो और उनके साथी तथा दूसरे भी कई विश्वासी लोग जैफर्सन के सार्वजनिक कार्यों से हाथ खीच लेने के कारण बहुत निराश हो गए। क्योकि उन सबका विचार था कि देश को अभी उनकी बडी आवश्यकता है।

मृत्युशैया पर पडी हुई अपनी पत्नी की देखभाल करते हुए भी जैफर्सन सदा व्यस्त रहते थे। दुख हो या सुख, सदा काम मे लगे रहना उनका स्वभाव बन गया था। फिलाडेल्फिया में फ्रांसीसी मिशन के कार्यकर्त्ता मरबोयस नामक एक फ्रांसीसी सज्जन ने

उन्हे एक बडी लम्बी प्रश्नावली भेजी, जिसमे वर्जीनिया के बारे मे जानकारी के लिए आवश्यक प्रश्नो का उत्तर देने को कहा गया था। जैफर्सन ने सन् 1781 मे कई सप्ताह वर्जीनिया की जानकारी देने के लिए विवरण तैयार करने मे बिताए। यह विवरग कुछ वर्ष बाद 'नोट्स आन वर्जीनिया' नाम से एक पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हुआ। मात्र यही एक व्यावसायिक पुस्तक थी जो उन्होने लिखी। कम से कम इतना तो निश्चित है कि यही एक पुस्तक है जिसे उन्होने स्वय प्रकाशित किया। वर्जीनिया के प्राकृतिक इतिहास, वहाँ के आदिवासी इण्डियन लोगो, भौगोलिक तथ्यो तथा हजारो अन्य विषयो का इस पुस्तक मे पूरा-पूरा विवरण दिया गया था। वर्जीनिया के बारे मे ऐसा सर्वांगीण विवरण इससे पहले कही प्रकाशित नही हुआ था।

अपनी पत्नी मार्था की मृत्यु हो जाने के बाद सार्वजनिक कार्य को अस्वीकार करने का उनके पास कोई कारण नही रह गया था। इसलिए उन्होने समुद्र पार जाकर इग्लैड के साथ शान्ति-सन्धि करने के लिए बैजामिन फ्रैकलिन, जान एडम्स और जार्ज के साथ कार्य करना स्वीकार कर लिया। किन्तु वह इस कार्य के लिए यूरोप-यात्रा का प्रबन्ध कर ही रहे थे कि उधर उसी समय शान्ति-सन्धि पर हस्ताक्षर हो गए और वह वापस घर की ओर चल पडे और घर पहुँचने से पहले ही वह ससद के प्रतिनिधि के रूप मे चुन लिये गए।

जैफर्सन ससद मे केवल दो वर्ष रहे, पर इस अवधि मे उन्होने जो महत्वपूर्ण कार्य किया उसके कारण उनकी सेवाएँ सदा स्मरणीय रहेगी। ससद में उनका पहला महत्वपूर्ण कार्य यह था कि उन्होंने

अमेरिका मे आज का प्रचलित सिक्का डालर चालू करवाया। यह मैट्रिक या दाशमिक प्रणाली का सिक्का प्रत्येक व्यक्ति को आसानी से समझ मे आ जाता है। यह स्पेन के सिक्के डालर पर आधारित था। अमेरिका मे यह रॉबर्ट मोरिस की मुद्रा या रुपए के सम्बन्ध मे तैयार की गई एक रिपोर्ट से अपनाया गया। रॉबर्ट मोरिस का मुद्रा-सम्बन्धी यह विवरण तर्कसगत और युक्तियुक्त था, पर कई अशो मे यह युक्तियुक्तता आवश्यकता से भी अधिक थी। स्पेनिश डालर की सबसे छोटी इकाई उसका चौदह सौ चालीसवाँ भाग होती और दस से गुणा करते हुए अन्य सिक्के तैयार किये जाते थे। इस रिपोर्ट का अध्ययन करते हुए जैफर्सन ने दाशमिक प्रणाली के सिद्धान्त को तो स्वीकार कर लिया पर साथ ही उन्होने स्पेन के डालर को सौ भागो में बॉटकर इस प्रणाली को अत्यन्त सरल बना दिया। उन्होने अमेरिकन डालर के सौवे भाग का नाम पैनी रखा। इस प्रकार उन्होने जिस मुद्रा का आविष्कार किया वही अब तक अमेरिका मे चल रही है।

उन्होने ससद में शान्ति-सन्धि को भी स्वीकार कराया। तब वह अपने सबसे बडे कार्य मे लग गए। आप जानते है कि वर्जीनिया एक विशाल राज्य था, और आज के सयुक्त राज्य के सम्पन्न इलीनाय और मिशिगन जैसे कई तथाकथित उत्तर पश्चिमी इलाके इसमे सम्मिलित थे। जैफर्सन बहुत दिनो से चाहते थे कि वर्जीनिया का यह विशाल साम्राज्य सघराज्य (फैडरल यूनियन) मे मिला दिया जाय। किन्तु सन् 1784 मे विचित्र और निराशाजनक घटना घट गई। बात यह हुई कि सघराज्य ने स्वय ही बहुत देर तक इस उपहार को ग्रहण करना स्वीकार नही

किया। क्योकि उस समय सघराज्य पर जमीन के सटोरिए और जमीन खरीदने-बेचनेवाली कम्पनियो का बहुत अधिक प्रभाव था। इन लोगो ने वर्जीनिया के मूल निवासी इण्डियन लोगो से नही के बराबर कीमत देकर बहुत-सी जमीनें अवैधानिक रूप से खरीद ली थी। और अब ये ऐसा दावा करने लगे थे कि इस सघराज्य मे जमीन हमेशा से ही सार्वजनिक सम्पत्ति रही है। इस प्रकार इस सारे मामले मे एक गर्हित भ्रष्टाचार का बोलबाला था और ससद के बहुत से सदस्य इस अनैतिक व्यापार मे लगे हुए थे। किन्तु अन्त मे मानवीय सद्बुद्धि और विचारो की विजय हुई और वर्जीनिया के पश्चिमी प्रदेश सघ-शासन में सम्मिलित कर लिए गए।

पश्चिमोत्तर प्रदेशो की सरकार कायम करने की योजना बनाने के लिए जो समिति स्थापित की गई थी, उसके अध्यक्ष भी जैफर्सन ही बनाये गए। उनकी योजना मे सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसकी एक धारा मे कहा गया था कि सन् 1800 के बाद लेक ईरी से दक्षिण को खीची गई रेखा के पश्चिम के सारे प्रदेश मे दास रखने की इजाजत नही मिलेगी। ऐसा करते हुए श्री जैफर्सन ने पहली बार यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि दास प्रथा को सीमित कर दिया जाय ताकि वह अपने आप खत्म हो जाय। उनका विचार था कि दास-व्यापार को जितना शीघ्र हो सके समाप्त कर दिया जाय। दास प्रथा को पुराने दास प्रथा वाले राज्यो तक ही सीमित कर देने से सब नए पश्चिमी प्रदेश मुक्त हो गए। इस प्रकार वे ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर देना चाहते थे जिसमे दास प्रथा बिना किसी सघर्ष के अपने-आप

समाप्त हो जाय ।

आश्चर्य की बात यह है कि यद्यपि श्री जैफर्सन अपने युग से सदा आगे रहते थे, फिर भी वह उस समय इन सब बातो को स्वीकार न करवा सके। किन्तु उनका यह सिद्धान्त मरा नही, क्योकि दास प्रथा को उन्ही राज्यो तक सीमित कर दिया जाय जहाँ यह प्रथा पहले ही से विद्यमान थी, नए राज्यो मे इसे न पनपने दिया जाय, इसी सिद्धान्त और कार्यक्रम को लेकर 65 वर्ष बाद अब्राहम लिकन उस प्रदेश मे पहुँचे थे।

जैफर्सन की दास प्रथा विरोधी धारा पश्चिमोत्तरी प्रदेश के लिए बनाए गए अध्यादेशो से निकाल दी गई। किन्तु तीन वर्ष बाद यह धारा फिर से उत्तरी प्रदेशो मे लागू कर दी गई। सन् 1800 मे मिसीसीपी और ओहियो नदी के मध्यवर्ती त्रिकोण राज्य इस दासप्रथा से मुक्त हो गए और तब से वे सदा मुक्त ही रहे। एलाबामा और मिसीसीपी के दक्षिणी प्रदेशो मे दास प्रथा जारी रही। इस प्रकार हम कह सकते है कि श्री जैफर्सन की अमेरिका को सबसे बडी देन यह थी कि अमेरिका आगे चलकर गृह-युद्ध से जीवित बच निकला और अब्राहम लिकन का कार्य सुगम हो गया। किन्तु जिस समय इस प्रश्न का अन्तिम निर्णय हुआ, उस समय श्री जैफर्सन पेरिस मे थे। सन् 1784 मे उन्हे यूरोपियन राष्ट्रो के साथ व्यापारिक सन्धि करने के कार्य मे बैंजामिन फ्रैंकलिन और जान एडम्स की सहायता के लिए नियुक्त किया गया। और एक वर्ष बाद वयोवृद्ध फ्रैंकलिन के स्थान पर वह फ्रास मे अमेरिका के राजदूत बना दिये गए।

पेरिस का यह प्रवासकाल उनके लिए बडा आनन्ददायक

और आकर्षक रहा। वह वहाँ की प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक व्यक्ति के बारे मे पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करना चाहते थे। वैज्ञानिक हो, सुन्दरियाँ हो, घर-बाहर घूमने वाले आवारा लोग हो, या दरबारी हो, वह बात-की-बात मे प्रत्येक व्यक्ति को अपना बना लेते थे। क्योकि उनका व्यक्तित्व बहुत आकर्षक और ज्ञान बहुत बढा-चढा था। साथ ही वह बहुत बढिया फ्रेंच बोल लेते थे। इसलिए वह हर जगह सबसे हिल-मिल जाते थे। इसके अतिरिक्त क्योकि अमेरिका की क्रान्ति, जो फ्रास की सहायता से सफल हुई थी, मानव इतिहास मे एक नई और आश्चर्यजनक बात थी, बडे-बडे शाही दरबारो मे भी उन दिनो अमेरिकन लोगो से मिलना-जुलना एक फैशन की बात समझी जाती थी। फ्रैंकलिन, हमारे चिर-परिचित फ्रैंकलिन, सुरुचि सम्पन्न उच्च लोगो के वर्ग मे बहुत प्रिय थे। किन्तु जैफर्सन फ्रैंकलिन के समान नही थे। उन्होने फ्रास के विदेश मत्री से एक बार कहा था "मै डाक्टर फ्रैंकलिन की समानता नही कर सकता, मेरी उनके पद पर नियुक्ति अवश्य हुई है, पर उनके स्थान की पूर्ति कोई नही कर सकता।" किन्तु उनमे अपनी कुछ विशेष प्रभावकारी प्रतिभा थी। वैज्ञानिक और दार्शनिक विषयो मे रुचि और अत्यन्त बुद्धिमत्ता के कारण तो वह लोकप्रिय थे ही, साथ ही उनके सुन्दर निवास-स्थान के द्वार भी सदा सबके लिए खुले रहते थे। सत्य तो यह है कि दूसरे स्थानो की तरह पेरिस मे भी उनका मकान सबके लिए खुला रहता था। यहाँ तक कि आए-गए लोगो की आवभगत मे उन्हे अपनी जेब से भी खर्च करना पडता था, क्योकि जिस ढग का जीवन वह बिताते थे और जिस उदारता

विरोधी शक्तियाँ

से दूसरो की आवभगत करते थे, उसका सारा खर्च अमेरिका की ससद नही दे सकती थी।

फ्रास की राज्यक्रान्ति, जिसकी आग भीतर ही भीतर सुलग रही थी, अब प्रकट होने वाली थी। इतिहास के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उन दिनो पेरिस का वातावरण पर्याप्त उत्तेजक था, और जैफर्सन तो अपने समय के एक अच्छे इतिहासकार थे।

श्री लफायेत्त उन्हे प्राय मिलने आया करते और अपने साथ कुछ ऐसे नवयुवको को भी लाते जो फ्रास के राजतन्त्र को उखाड फेंके बिना ही उसमे सुधार करना चाहते थे। ये लोग बाद मे आने वाले उन भयानक क्रान्तिकारियो मे से नही थे, जो सामन्तशाही से बदला लेने के लिए उनका सिर ही उडाने लगे थे। उनमे से बहुत से लोग (और यहाँ तक कि लफायेत्त भी) स्वय पुराने सामन्त परिवारो के ही सदस्य थे। वे उदार थे। वे लोग जनता को कुछ स्वायत्त शासन देकर, धनिको पर कर लगाकर, आर्थिक बोझ को हल्का कर और सामन्तवर्ग और चर्च के सब अधिकारो को समाप्त कर शासन मे सुधार करना चाहते थे। वे श्री जैफर्सन के मित्र थे और उन्ही के सिद्धान्तो और आदर्शों के अनुसार चलने का प्रयत्न कर रहे थे। वर्जीनिया के सम्बन्ध मे उनका विवरण पेरिस मे प्रकाशित हो चुका था और इस समय तक उनके स्वतत्रता के घोषणा-पत्र से भी पेरिस के सब सक्रिय लोग परिचित हो चुके थे। यहाँ तक कि सोलहवे लुई और मेरी आतोआत का दरबार भी इस घोषणा-पत्र से भली-भाँति अवगत था।

श्री जैफ़र्सन पॉच वर्ष बाद वापिस अमेरिका लौटे, तो यह समझा गया था कि वह कुछ दिनो की छुट्टी पर ही आए हैं। वह

अपनी पुत्री मार्था को घर लाना चाहते थे। पेरिस के पॉच वर्ष के इस प्रवास काल मे वह एक स्थानीय कान्वेंट स्कूल मे पढती रही और उसकी छोटी बहन मेरी भी, जिसे प्राय 'पोली' के नाम से पुकारा जाता था, बाद मे उसी के साथ पढने लगी थी। किन्तु इस समय तक मार्था आवश्यकता से अधिक फ्रासीसी बन गई थी, इसलिए उसके पिता श्री जैफर्सन ने निश्चय किया कि इसे अपने देश भेज देना उचित होगा। इसीलिए उन्होने घर जाने की छुट्टी मॉगी थी। लम्बी यात्रा समाप्त कर जब वह अमेरिका के तट पर जहाज से उतरे तो उन्हे समाचार-पत्रो से ज्ञात हुआ कि जॉर्ज वाशिगटन ने नए सविधान के अनुसार निर्मित होने वाली प्रथम अमेरिकन सरकार मे उन्हे विदेश मत्री के पद पर नियुक्त कर दिया है।

ह्वाइट हाउस मे

श्री जैफर्सन ने चार वर्ष तक श्री जार्ज वाशिगटन के साथ विदेश मत्री के रूप मे और चार वर्ष तक श्री जान एडम्स के साथ उपराष्ट्रपति के रूप मे कार्य किया। इन दोनो पदो पर कार्य करते हुए वह आशिक रूप से सार्वजनिक सघर्ष से दूर हट गए थे। आज का उपराष्ट्रपति या विदेश मत्री ससद की बहसो मे जितना भाग ले सकता है, जिस रूप मे अपने विचार व्यक्त कर सकता है और उसके अधिवेशनो मे जा सकता है,वह भी उससे अधिक वहाँ न जा पाते और न वहाँ अपने विचार ही वह पूरी तरह व्यक्त कर पाते थे। विदेश मत्री के पद पर रहते हुए वह अपने विभाग का सचालन करते, मत्रिमण्डल की बैठको मे भाग लेते और निजी रूप से अपने विचार व्यक्त करते तथा दूसरो को सार्वजनिक भाषणो की अनुमति देते। उपराष्ट्रपति के रूप मे उन पर और भी प्रतिबन्ध

लग गए। वह सिनेट की अध्यक्षता करते। उस समय वह सर्वथा तटस्थ रहते, यहाँ तक कि अपने प्रतिपक्षियो के विरोध में भी कुछ न कहते, इसके सिवा वह और कुछ न करते थे।

ये नियम थे और उन्होने इन नियमो का पूरी तरह पालन किया। इतना सब कुछ होते हुए भी मैडिसन और मुनरो जैसे सज्जनो के साथ, जो कि उनसे मार्गदर्शन की आशा लगाए रहते थे, निरन्तर पत्र-व्यवहार करते रहने से उन्हे कोई नही रोक सकता था। उनके विचार पक्के और दृढ होते थे। उनका नागरिक अधिकारो मे पूरा विश्वास था। वह नागरिक अधिकारो की क़ानूनन मान्यता को सबसे अधिक महत्त्व देते थे और पेरिस मे रहते हुए भी वह लोगो के साथ इस विषय पर निरन्तर पत्र-व्यवहार करते रहे थे। अमेरिका के नए सविधान की आलोचना करते हुए वह कहते थे कि इसकी एक बडी त्रुटि यह है कि इसमे नागरिक अधिकारो के लिए कुछ नही कहा गया है। चाहे सरकार कितनी ही अच्छी क्यो न हो वह बार-बार कहते कि जनसाधारण को सरकारी पजे से बचाने के लिए कोई न कोई सुरक्षा का उपाय होना ही चाहिए।

प्रत्येक नागरिक को बन्दी-प्रत्यक्षीकरण का अधिकार प्राप्त होना ही चाहिए। इसका अर्थ यह है कि किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करने से पहले उसका अपराध स्पष्ट रूप से बताना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को तब तक जेल में नही भेजा जा सकता, जब तक कि उसे उसके अपराध की सूचना न दे दी जाय। यदि किसी को उसका अपराध बताए बिना ही जेल में डाल दिया जाता है तो उस व्यक्ति को या तो न्यायालय में अपनी बात कहने

का अवसर दिया जायगा अथवा उसे जेल से छोड देना होगा। सन् 1787 मे अमेरिका मे जो सविधान बना उसमे नागरिको की सुरक्षा के लिए बनाई ब्रिटिश कानून की यह मुख्य धारा नही थी।

प्रत्येक नागरिक को स्वतन्त्रतापूर्वक लिखने और बोलने का तथा दूसरे लोगो के साथ स्वेच्छानुसार मिल बैठने और सभाओ का आयोजन करने और आवश्यकता पडने पर सरकार के पास अपना प्रार्थनापत्र भेजने का अधिकार होना चाहिए।

प्रत्येक नागरिक को यह विश्वास होना चाहिए कि उसके मकान, कागजात और सम्पत्ति पर अकारण तथा उसको सूचना दिए बिना अधिकार नही किया जायगा। उसे इस बात की भी गारटी मिलनी चाहिए कि शान्ति के समय मे फौजियो के ठहराने और व्यवस्था का भार उस पर नही डाला जायगा। यदि किसी से यह आशा की जाय कि वह देश की रक्षा सेना मे भर्ती हो तो वह व्यक्ति शस्त्र धारण करने मे समर्थ होना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति पर किसी अपराध के कारण मुक़दमा चलाया जाय तो उसे अपनी पैरवी करने के लिए वकील और मुकदमे का जूरी द्वारा निर्णय का अधिकार होना चाहिए।

किसी एक ही अपराध के सन्देह मे किसी भी व्यक्ति को दुबारा प्राणो के सकट मे न डाला जाय और न उसका अग-भग किया जाय, और उसे अपने ही विरुद्ध किसी अपराध के लिए गवाही देने के लिए मजबूर भी न किया जाय। किसी भी व्यक्ति को पूरी तरह से कानूनी कार्यवाही किए बिना उसका जीवन सम्पत्ति और स्वाधीनता से वञ्चित न किया जाय।

साधारण कानून के अनुसार यदि किसी का बीस डालर से अधिक का झगडा हो तो उसे यह अधिकार होना चाहिए कि उसका मुकदमा जूरी के सामने पेश हो। किसी भी व्यक्ति को न्यायालय के द्वारा असाधारण और क्रूरतापूर्ण सजा नही मिलनी चाहिए और किसी भी व्यक्ति को हिरासत मे डालकर उसे छोडने के लिए जमानत की ऐसी बडी रकम नही माँगी जानी चाहिए कि वह दे ही न पाय।

यह और ऐसे ही दूसरे अनेक विचार मिलकर नागरिक अधिकार का रूप धारण कर लेते है। ये 'नागरिक अधिकार' इग्लैड के साधारण कानूनो मे शताब्दियो से सम्मिलित है। जैफर्सन किसी भी राजनैतिक अधिकार की अपेक्षा इन नागरिक अधिकारो को अधिक महत्त्व देते थे, और अपने पेरिस प्रवास काल मे यह जानकर कि अमेरिका का सविधान इन नागरिक अधिकारो के बिना ही बनाया जा रहा है, वह बहुत खिन्न रहते थे। मैडिसन, मुनरो, एडम्स और जे तथा ऐसे अन्य अनेक सज्जनो को वह पेरिस से इस विषय पर निरन्तर पत्र भेजते रहे। सविधान उनकी अनुपस्थिति मे नागरिक अधिकारो की किसी प्रकार की गारटी दिए बिना ही तैयार किया गया था।

इस पर वह बहुत उत्तेजित हो उठे। सात समुद्र पार रहते हुए भी अमेरिका पर उनका प्रभाव पूरा बना हुआ था। यहाँ तक कि लौह पुरुष वाशिंगटन भी, जोकि अधिकतर वादविवादो से अपने आप को बचाए ही रखते थे, जैफर्सन के विचारो से परिचित करा दिए गए। वास्तव मे उस महापुरुष के विचारो की उपेक्षा करना असम्भव था, जिसने कि स्वाधीनता का घोषणा-

पत्र तैयार किया था और जो सविधान निर्मित हो जाने के बाद भी अमेरिकन सघराज्य के आधारभूत अभिलेख के रूप मे प्रमाणित माना जा रहा था। मैडिसन और मुनरो यह नही चाहते थे कि जैफर्सन के विचारो की, जिनको वे अपना आदर्श मानते है, उपेक्षा की जाय। हैमिल्टन तथा जे और दूसरे सदस्यो के साथ मैडिसन ने सविधान के निर्माण मे बहुत बडा हाथ बँटाया था। उसने उस समय नागरिक अधिकारो वाली धारा को इस विचार से छोड दिया था कि पहले सविधान का मुख्य राजनीतिक ढाँचा स्वीकार करवा दिया जाय। उसका यह भी विचार था कि समय आने पर नागरिक अधिकारो की धारा को सविधान मे समाविष्ट कर दिया जायगा।

सम्पन्न और विशेषाधिकारो का उपभोग करने वाले उच्च वर्ग के प्रभावशाली और मेधावी वक्ता ऐलेग्जेंडर हैमिल्टन को नागरिक अधिकारो की कुछ परवाह न थी। किन्तु उसके मन मे इन अधिकारो के प्रति कोई खास विरोध भी न था। उसका मुख्य उद्देश्य यह था कि एक ऐसी केन्द्रीय सरकार की स्थापना की जाय, जो खूब मजबूत और स्थायी हो। किन्तु साथ ही वह यह भी चाहता था कि जितने अधिक से अधिक लोगो को इससे दूर रखा जा सके रख दिया जाय। वह चाहता था कि किसी सम्राट् या राष्ट्रपति को जीवनभर के लिए चुन लिया जाय। वह शक्तिशाली सघराज्य का पक्षपाती था और मताधिकार के लिए बहुत से प्रतिबन्ध लगाना चाहता था। उसकी इच्छा थी कि जहाँ तक हो सके केवल धनी लोगो की ही सरकार बने। महान् प्रतिभा का धनी और देशभक्त होते हुए भी वह मूलत अमेरिका का

निवासी नही था। और उसने अपने पत्रो मे अनेक बार कहा था कि प्रजातन्त्र का सामान्य वातावरण उसके सर्वथा अनुकूल नही है। ऐलेग्जैडर हैमिल्टन जो कि वैस्ट इडीज से अकेला और खाली हाथो अमेरिका आया था, प्रजातन्त्र के प्रति अपनी हार्दिक अरुचि के कारण वर्जीनिया के रईस और जमीदार श्री जैफर्सन के विरुद्ध (जिसने अपनी सारी आयु प्रजातन्त्र की प्राप्ति के लिए समर्पित कर दी थी) रईसो का नेता बन गया।

एक बार जबकि सयुक्त राज्य अमेरिका के सविधान का मुख्य राजनैतिक ढाँचा प्रस्तुत हो गया तो सशोधनो के रूप मे मानव अधिकार के विधेयक को उसमे समाविष्ट कर देना कुछ कठिन नही रहा। यह तो ठीक है कि यह कार्य कुछ कठिन नही था, किन्तु यह भी कोई नही जानता कि अपनी बात पर सदा अडे रहने वाले दृढनिश्चयी टॉमस जैफसन को इसका कितना श्रेय है। पर्दे के पीछे रहकर प्रत्यक्ष रूप से इस मामले मे कुछ भी भाग न लेते हुए भी जैफर्सन अपने मित्रो और परिचितो को इसके लिए सदा उत्तेजित करते रहे थे। इसमे कुछ सन्देह नही कि उन्होने इस कार्य की सफलता के लिए जाज वाशिगटन का नाम लिया है, यद्यपि श्री वाशिंगटन ने सिवाय इसके कि यदा-कदा इसके पक्ष मे एक-दो शब्द कह दिए, और कुछ भी नही किया।

जो भी हो, सन् 1789 मे (जैफर्सन के विदेश मन्त्री बनने से एक वर्ष पूर्व) सविधान मे पहले दस सशोधनो का प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया गया। इसे स्वीकार करने मे बडा लम्बा समय लग गया, क्योकि ससद के दोनो भवनो और राज्यो की धारासभा के तीन चौथाई बहुमत की इस पर स्वीकृति प्राप्त करनी थी।

सन् 1791 मे ये सशोधन स्वीकार कर लिए गए और तब से लेकर सरकार के द्वारा अपनी शक्ति के दुरुपयोग को रोकने के लिए अमेरिकन नागरिको की स्वरक्षा के ये मुख्य साधन बने हुए है।

पहली अमेरिकन सरकार (जोकि जार्ज वाशिगटन की थी) डेढ सौ वर्ष बाद की सरकारो से सर्वथा भिन्न थी। वाशिंगटन सम्राटो की सी परम्परा और रीति-रिवाज़ो का पालन करते थे। उनकी पत्नी मैडम वाशिंगटन या श्रीमती वाशिगटन को समाचार-पत्र महारानी वाशिगटन के रूप मे अभिहित करते थे। समाचार-पत्र और ससद ने फिलाडेल्फिया के साथ ही साथ न्यूयार्क को भी राजधानी कहना आरम्भ कर दिया था। दोनो स्थानो पर दरबारी लोग उन्हे घेरे रहते थे। वाशिगटन स्वय राजनीति और साधारण चर्चाओ मे बहुत कम भाग लेते थे। उनका देश पर अत्यधिक प्रभाव था। वह ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हे देश मे सर्वसम्मति से प्रधान पद के लिए निर्वाचित किया था। प्रत्येक मतदाता ने उन्ही के पक्ष मे अपना मत दिया था। उनका एक शब्द ही दूसरो के बडे-बडे व्याख्यानो या व्याख्यानमालाओ के समान ही महत्त्व रखता था। किन्तु वह प्राय बोलने का कष्ट उठाते ही नही थे। जार्ज और मार्था वाशिंगटन के द्वारा दिए गए राजकीय भोजो के वर्णनो को पढ कर ज्ञात होता है कि उनमे प्रत्येक व्यक्ति अत्यधिक उकता जाता था। उन भोजो मे वाशिगटन वस्तुत कभी कुछ बोले ही नही। इन राजकीय भोजो मे जब दूसरे लोग आपस मे बातचीत करते, तो वह अपने खाने की मेज पर पडे हुए छुरी-काँटे और चम्मच

स्वतन्त्रता की प्रतिभूति

से खेलते रहते थे। भोजन के अन्त मे सबको पवित्र टोस्ट और शराब दी जाती, तब पहले स्त्रियाँ भोजन पर से उठती और कमरो मे से बाहर आ जाती, इसके बाद कुछ ही मिनटो मे भोजन समाप्त हो जाता।

मन्त्रिमण्डल की बैठको मे भी वाशिगटन प्राय चुप ही रहते। हाँ, वह जो कुछ कहा जाता था उसे ध्यान से सुनते थे। अपनी स्वाभाविक गरिमा और अपने प्रति दूसरो के हृदय में विद्यमान आदर भावना द्वारा शिष्टाचार और मित्रता की भावना बनाए रखने मे वह सर्वथा समर्थ थे।

किन्तु मन्त्रिमडल मे सद्भाव का वातावरण बनाए रखना बडा कठिन था। बात यह थी कि मन्त्रिमण्डल मे मतभेद हो गया था। अभी तक राजनैतिक दलो का प्रादुर्भाव नही हुआ था। हाँ, हैमिल्टन के नेतृत्व मे जो लोग एक सशक्त केन्द्रीय सरकार चाहते थे वे फैडरलिस्ट (केन्द्रीय सत्तावादी) और जो लोग इस शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार के विपक्ष मे थे वे फैडरलिस्टो के विरोधी कहलाते थे।

फिर भी इन दोनो विरोधी दलो के ये नाम भ्रामक थे। जैफर्सन स्वय कहते थे कि वह फैडरलिस्ट नही है, क्योकि उन्हे सविधान मे नागरिक अधिकारो के अभाव पर आपत्ति थी, और वह किसी व्यक्ति को बार-बार राष्ट्रपति बनाए जाने के भी विरुद्ध थे। किन्तु वह यह भी कहते थे कि मैं फैडरलिस्ट-विरोधी नही हूँ, क्योकि फैडरलिस्ट विरोधी वे लोग थे, जो राज्यो के अधिकारो और प्रभुसत्ता मे विश्वास रखते थे। उनके विचारों से सघराज्य सर्वथा निर्बल और नाममात्र की ऐसी केन्द्रीय सत्ता

मे परिवर्तित हो जाता जिसका सम्बन्ध विदेशी मामलो या ऐसे ही दूसरे मामलो तक ही रह जाता। ऐसे केन्द्रीय शासन का जन सामान्य से न तो कुछ सम्बन्ध ही रहता और न उन पर कोई अधिकार ही।

दूसरी ओर फैडरलिस्ट केवल राज्यो पर ही नही अपितु उनके नागरिको पर भी शासन के पक्षपाती थे। इसके विपरीत फैडरलिस्ट विरोधियो का विचार था कि केन्द्रीय सरकार का सम्बन्ध केवल राज्य की सरकारो से हो और वहाँ की जनता से उसका कुछ सरोकार न रहे।

एक पक्ष चाहता था कि अमेरिका के तेरह पृथक्-पृथक् भागो से एक राष्ट्र का निर्माण किया जाय, तो दूसरे पक्ष का कहना था कि सुविधा की दृष्टि से इन तेरह स्वतन्त्र और पृथक् राष्ट्रो को यूरोप से सम्बन्ध रखने जैसे मामलो की सुविधा के लिए एक परिसघ का रूप दे दिया जाय। ऐलेग्जैडर हैमिल्टन ने तेरह पृथक् राज्यो को एक राष्ट्र के रूप में परिणत होने के लिए बाध्य करने का एक उपाय यह सोचा कि केन्द्रीय सरकार सारी जनता पर कर लगाए और क्रान्ति के समय मे विभिन्न राज्यो के सिर जो ऋण हो गया था उसका भार सब लोगो के सिर पर समान रूप से डाल दिया जाय। इन निर्णयात्मक उपायो द्वारा यह आशा की गई थी कि जनता सामान्य रूप से आर्थिक भार वहन करती हुई एकता-सूत्र मे आबद्ध हो जायगी, वह समझते थे कि देश की अविभाज्यता को बढावा देने मे इन उपायो का किन्ही भी कानूनो की अपेक्षा अधिक प्रभाव होगा।

और हैमिल्टन ने उसी बात को लेकर आगे बढ़ना शुरू

किया। उन्होने क्रान्ति के दिनो के सब ऋणो को, चाहे वे महाद्वीपीय ससद के द्वारा लिये गए हो या पृथक् राज्यो के द्वारा, एक राशि मान लिया और युद्ध के दिनो जारी की हुई हुडियो को जितने की वे थी, उतने की ही स्वीकार कर लिया। वाशिगटन, जिन्होने इनको वित्तमन्त्री नियुक्त किया था, इन कार्यों का समर्थन करते रहे, यद्यपि इनको लेकर बडे जोर का सट्टा होने लगा था। बहुत से साधारण सिपाहियो ने अपनी हुडियाँ, जा भी कुछ उन्हे मिल सका, उतने ही मे बेच डाली। अब सघ सरकार को इन सभी डियो का भुगतान सम मूल्य पर करना था।

इससे भी बढकर बात यह हुई कि इस योजना का पता लोगो को समय से पहले ही चल गया, सम्भवत इसलिए कि हैमिल्टन स्वय इसके बारे मे आवश्यकता से अधिक बोलते रहे थे। इसका परिणाम यह हुआ कि न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया के साहूकारो और दलालो को हजारो-लाखो पुरानी हुडियो को प्राय मुफ्त ही हस्तगत करने का मौका मिल गया। लोगो ने खूब पैसा कमाया। यहाँ तक कि ससद के सदस्यो ने भी बडे पैमाने पर गरीब लोगो को ठगने मे पूरा-पूरा हाथ बँटाया। वे गरीब लोग अपनी हुडियो की वास्तविक कीमत को न तो जानते ही थे और न जान ही सकते थे।

श्री जैफर्सन को जीवनभर सट्टेबाजी से बडी घृणा रही। यह एक ही बात उन्हे राजनीतिक दृष्टि से हैमिल्टन की नीति का विरोधी बनाने के लिए काफी थी। हैमिल्टन ने स्वय राजकीय कोष का मुँह खोल देने से कुछ भी नही कमाया। वह ऐसे मामलो मे सब प्रकार के सन्देहो से ऊपर थे, किन्तु उनके सभी

मित्रो और सम्बन्धियो ने इस अवसर से बेहद लाभ उठाया।

खजानो का मुँह खुल जाने से जो बहुत सी बुराइयाँ आईं उनको एक ओर रखकर यदि हम सोचे तो सिद्ध होता है कि इससे तेरह पृथक् राज्यो को एक राष्ट्र का रूप देने मे सहायता भी अवश्य मिली थी। फिर भी जैफर्सन और हैमिल्टन के एक-दूसरे के विरोधी होने के और भी कई कारण थे। वे दोनो एक-दूसरे का सम्मान करते थे, किन्तु सरकार के स्वरूप के बारे मे प्रत्येक महत्त्वपूर्ण बात पर वे प्राय एक-दूसरे से असहमत ही रहे।

हैमिल्टन जैफर्सन से बारह वर्ष छोटे थे। वह असहिष्णु, बातूनी और एक ऐसे दम्भ से भरे हुए थे, जो दूसरो को अपने विचार प्रकट करने का अधिक अवसर ही नही देना चाहता। वह रईसो और कुलीनो की सरकार बनाने के बहुत बडे पक्षपाती थे। यदि साम्राज्यवादी या कुलक्रमानुगत सामन्तशाही सरकार की स्थापना की जा सकती, तो वह उसे अधिक महत्त्व देते। क्योकि उक्त दोनो प्रकार की सरकार वहाँ नही थी, इसलिए उन्होने सविधान जिस रूप मे प्रस्तुत किया गया था, उसे स्वीकार कर लिया और उसके लिए कठोर सघर्ष भी किया, इतना कठोर सघर्ष कि तेरह राज्यो मे वैसा सघर्ष किसी ने नही किया। इसका कारण यह था कि उनके विचारो मे जो कुछ प्राप्त किया गया था, वह उस अवस्था मे सर्वश्रेष्ठ था और इससे अधिक कुछ किया ही नही जा सकता था। किन्तु आरम्भ से अन्त तक प्रजा-तन्त्र के प्रति कभी उनकी आस्था नही रही। उनका सदा यही प्रयत्न रहा कि जहाँ तक हो सके शासन मे से भीडभाड या उप-

द्रवी लोग अर्थात् जनता को जितना दूर हटाया जा सके हटा दिया जाय, और जहाँ तक हो सके इसे सम्पन्न लोगो तक ही सीमित कर दिया जाय।

श्री जैफर्सन की सारी राजनीति लोकतन्त्र के प्रति दृढ आस्था पर ही आधारित थी और वह जीवनभर लोकतन्त्र को सच्चा, सशक्त और व्यापक बनाने के प्रयत्न मे लगे रहे। वह अधिक से अधिक लोगो को मतदान का अधिकार देते थे, न कि कम से कम को। वह रईसो के विशेषाधिकारो और उपाधियो के बडे भयकर विरोधी थे। वह चाहते थे कि किसी व्यक्ति को एक या दो बार से अधिक राष्ट्रपति न बनाया जाय। राष्ट्रपति भी राजकार्यो के सिवा साधारण लोगो के समान ही रहे और समझा जाय।

यह स्पष्ट और स्वाभाविक है कि उनके विचारो की उपेक्षा नही की जा सकती थी। जैफर्सन और हैमिल्टन इस नये राष्ट्र मे दो परस्पर विरोधी विचारधाराओ के प्रतीक बन गए। क्योकि ये दोनो मत्रिमण्डल के सदस्य थे, एक विदेश मन्त्री था तो दूसरा वित्त मन्त्री, इसलिए इनके पारस्परिक विरोध से एक विचित्र सा वातावरण उपस्थित हो गया। ऐसे समय भी आते थे जब वे महान् और गम्भीर प्रकृति वाले राष्ट्रपति वाशिगटन की अध्यक्षता मे मन्त्रिमण्डल की बैठको मे एक साथ उपस्थित होने पर एक-दूसरे से बोलते तक भी नही थे। वाशिगटन, जोकि दोनो के महत्त्व को समझते थे, उनमे सन्तुलन बनाए रखते।

और क्योकि फ्रास की क्रान्ति पराकाष्ठा की ओर अग्रसर होती जा रही थी, फलत जैफर्सन और हैमिल्टन के सघर्ष ने भी

नया रूप धारण कर लिया। जैफर्सन को जैकोबिन अर्थात् फ्रास के उन अत्युग्र आतकवादियो का समर्थक समझा जाता था, जो लोगो के सिरो को गाजर-मूली की तरह उडा रहे थे। इसमे कुछ सचाई नही थी, किन्तु क्योकि वह आरम्भिक और अत्यन्त उदार क्रान्तिकारियो के प्रति सहानुभूतिशील रहे थे और वह अब भी फ्रास की राज्यक्रान्ति को (इसकी सब अतिशयताओ के साथ) उन्नति और प्रगति के लिए एक बहुत बडा और आवश्यक ऐतिहासिक आन्दोलन समझते थे, इसलिए उन्हे विरोधी पक्ष के द्वारा लगाए गए इन सब लाछनो की कडवी घूट को पीना ही पडता था।

हैमिल्टन के अनुयायी (जो प्राय सभी सम्पन्न और प्रभावशाली लोग थे) प्रारम्भ से ही फ्रास की क्रान्ति के विरोधी थे। जब फ्रास के सम्राट् और उसकी महारानी मेरी आतोआत के सिर काटे गए तो उन सब लोगो ने आँसू बहाए और शोक मनाया। न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया के उच्चवर्ग के लोग तो यहाँ तक आगे बढ गए कि जेफर्सन के अनुयायियो को, जिन्हे 'डेमोक्रेट' कहा जाने लगा था, ससद के प्रत्येक अधिवेशन के समय दी जाने वाली बडी-बडी पार्टियो और स्वागत-समारोहो मे आमन्त्रित तक नही किया जाता। श्री जैफर्सन, जो विदेशमन्त्री और कुछ समय बाद उपराष्ट्रपति थे, अपने आपको एक प्रकार से बहिष्कृत सा समझते और वह अपने अवकाश के क्षण दर्शन-शास्त्र और इतिहास आदि विषयो के अध्ययन मे बिताना अधिक पसन्द करते थे।

तथ्य तो यह है कि यह बारह वर्ष उनके लिए बडे शष्क से

बीते। सभी नगरो की पत्र-पत्रिकाओ पर हैमिल्टन के अनुयायी फैडरलिस्टो का अधिकार था । और वे लोग जैफर्सन और उनके मित्रो को उनके वैयक्तिक और राजनैतिक कार्यो के लिए जितना बुरा-भला कह सकते थे, कह रहे थे। ये लोग उन पर जो लाछन लगा रहे थे, उनकी कोई सीमा न थी। इतना सब कुछ होने पर भी उन्होने अपने पर किए गए किसी आक्षेप का स्वय कभी कोई उत्तर न दिया और न कभी क्रोध का कोई चिह्न ही प्रकट होने दिया। पत्र-पत्रिकाओ को अपनी रुचि के अनुसार बात कहने की स्वाधीनता को दबाने मे भी उन्होने कभी विश्वास नही किया। उनका विश्वास था कि पत्रकारो को अपनी बात कहने की पूरी स्वाधीनता होनी ही चाहिए।

जनता का बहुमत जैफर्सन के पक्ष मे था, और वह फ्रास की राज्य-क्रान्ति का भी समर्थक था। फ्रास के गणतन्त्र राज्य ने जब अमेरिका मे अपना नया राजदूत भेजा तो भोले-भाले नागरिको की बडी-बडी भीडो ने गली-बाजारो और मार्गों मे उसका हार्दिक स्वागत किया। किन्तु हैमिल्टन के अनुयायियो ने, जो सम्पन्न और प्रभावशाली थे, वाशिंगटन के दो बार के तथा उनके बाद जान एडम्स के शासनकाल मे भी, जिनके हाथ मे सत्ता थी, देखा कि फ्रास और इग्लैड के सघर्ष मे अमेरिकन सरकार का रुख इग्लैड के पक्ष मे अधिकाधिक होता जा रहा है।

श्री जैफर्सन निरर्थक बहस-मुवाहिसो से उकता गए थे, इसलिए उन्होने सन् 1793 मे विदेशमन्त्री के पद से त्यागपत्र दे दिया। वह इससे पहले भी कई बार त्यागपत्र देना चाहते थे। किन्तु हैमिल्टन और उसके विचारो का सरकार पर पूरा

नियन्त्रण होते हुए भी श्री वाशिगटन जैफर्सन को मन्त्रिमण्डल मे बने रहने के लिए आग्रह करते रहे। त्यागपत्र देने के बाद उन्हे तीन वर्ष के लिए फिर माण्टिसिलो और अपनी प्रिय पहाडी पर रहने, अपने परिवार, घर और खेतीबाडी की देखभाल करने का अवसर मिल गया।

किन्तु उन्हे न तो उन दिनो ही विश्राम मिला और न भविष्य मे ही मिल पाया। वह वास्तव मे विश्राम कर ही नही सकते थे। उनका दल (राजनैतिक पार्टी) वर्षों से निर्मित हो रहा था और अगले चार वर्षो तक उसका निर्माण होता रहा। राजनैतिक और देशभक्त लोगो के समूह उनके घर पर सदा बने रहते थे। वह सदा अमेरिकन जनता के लिए आदर्श बने रहे। उन्होने वर्जीनिया मे नागरिक अधिकार, धार्मिक स्वाधीनता, प्रजातन्त्र और शिक्षा के क्षेत्र मे जो सघर्ष और कार्य किए थे, देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक के सब लोग उनसे भली-भाँति परिचित हो गए थे। उनके द्वारा तैयार किए गए स्वाधीनता के घोषणा-पत्र का बहुत सा अश लोगो को अच्छी तरह याद हो गया था। उनके मन और मस्तिष्क उससे सदा प्रेरणा प्राप्त करते रहते थे। वह वास्तव मे जनता के मनचाहे नेता थे कौर मृत्यु तक वह वैसे ही लोकप्रिय बने रहे।

दूसरी ओर हैमिल्टन, जो क्षणिक रूप से सफल उनके महान् प्रतिद्वन्द्वी थे, जनसमाज की कुछ परवाह नही करते थे। सचाई तो यह है कि जनता के प्रति उनकी घृणा इतनी स्पष्टता और निर्भीकता के साथ व्यक्त हो रही थी कि सब लोगो को यह अनायास ही विदित हो जाता कि वह लोकप्रियता की कुछ भी

परवाह नही करते है। उन्होने किसी पद पर प्रतिष्ठित होने का कभी प्रयत्न ही नही किया। सन् 1795 मे सेवा से निवृत्त होने तक अमेरिकन सरकार का कोष (वित्त विभाग) उनके हाथ मे था। और यही मात्र एक ऐसा पद था जिसे उन्होने सँभाला और यही उनके लिए काफी था। कोष को सँभालते हुए उन्होने पूरी सरकार पर अपना नियन्त्रण जमाया हुआ था। यहाँ तक कि कई विकट परिस्थितियो मे स्टेट डिपार्टमेट (विदेश विभाग) पर भी उनका ही नियन्त्रण हो जाता था। नि सन्देह वाशिगटन पर उनका बहुत प्रभाव था। वह वाशिगटन के पास एक स्वयसेवक के रूप मे पहुँचे थे और क्रान्ति के समय वह इस महान् सेनापति के अगरक्षक बने रहे और उन (जार्ज वाशिगटन) के नाम पर लिखे गए अधिकाश पत्र और सरकारी कागज़ात उन्ही ने लिखे। जिम्मेदार लोगो का कहना है कि सेवा-निवृत्ति और सार्वजनिक जीवन से हटते समय वाशिगटन ने अमेरिका की जनता के नाम जो विदाई सन्देश दिया था उसके शब्द भी हैमिल्टन के ही लिखे हुए थे।

न्यूयार्क मे वकालत के द्वारा अपने और अपने परिवार के लिए कुछ धन कमाने के उद्देश्य से उन्होने वित्तमन्त्री के पद से सन् 1795 में त्यागपत्र दे दिया। यह उनके लिए एक बहुत बडे सम्मान की बात थी कि उनके कट्टर से कट्टर शत्रु भी यह मानते थे कि राजकीय धन से खेलते हुए भी उन्होने अपने लिए कभी एक पैसे को भी हाथ नही लगाया। उन्होने सयुक्त राज्य अमेरिका की साख बडी मजबूती से जमा दी और सब पूँजीपतियों का केन्द्रीय सरकार के लिए पूरा सहयोग प्राप्त कर लिया।
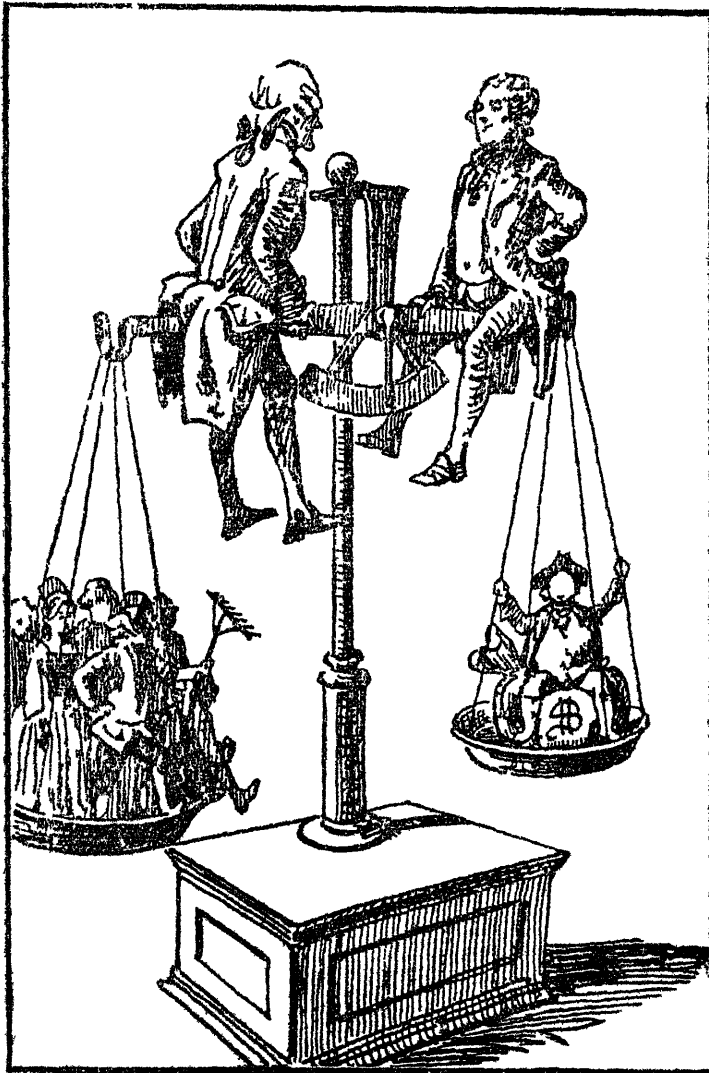
जैफर्सन बनाम हैमिल्टन

अब वह अपनी निजी योग्यता के बल पर अपने लिए भी कुछ धन कमाना चाहते थे ।

किन्तु वह सरकार पर अपने नियन्त्रण और प्रभाव को भी छोडना नही चाहते थे । वह अनेक उच्च सरकारी पदाधिकारियो से, जिनमे से अधिकाश की नियुक्ति उन्ही की कृपा से हुई थी, निरन्तर पत्र-व्यवहार करते रहते । और वे लोग भी उनके आदेशो और निर्देशो का बडी तत्परता के साथ पालन करते थे । इस समय उन सब लोगो पर, जो अपने पद, सम्पत्ति, प्रभाव और सामाजिक स्थिति के कारण समाज मे अपनी आवाज रखते थे, हैमिल्टन का बहुत बडा प्रभाव था। फैडरलिस्ट, जिन्हे हैमिल्टन-वादी या हैमिल्टन का अनुयायी भी कहा जाता था, सदा उन्ही के अधीन रहते थे। वे एक प्रकार से उन्ही की सम्पत्ति के जैसे बन गए थे । दो बार निर्वाचित होने के पश्चात् जब श्री वाशिगटन राष्ट्रपति के पद से निवृत्त हो गए तो जान एडम्स उस पद के लिए फैडरलिस्ट प्रत्याशी के रूप मे खडे हुए थे । आज हमारे लिए उस परिस्थिति को समझना बडा कठिन है, क्योकि वास्तव मे उन दिनो कोई राजनैतिक दल थे ही नही । प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप मे प्राय एक ही पार्टी से सम्बन्धित था । इस बडे राष्ट्रोय दल (जनरल नेशनल पार्टी) के कुछ सदस्य हैमिल्टन के पक्ष मे थे और कुछ जैफर्सन के पक्ष मे । जार्ज वाशिगटन अपनी स्पृहणीय सरलता के कारण सदा यह सोचते थे कि राजनैतिक दलो के बिना ही इस नये राष्ट्र का काम चल सकता है । वह बड़ी सच्चाई के साथ कहते थे कि यदि राजनैतिक दलो की सत्ता बनी ही रहनी है तो हमे चाहिए कि पहले हम उनमे पूरी तरह से

पारस्परिक सहयोग और एकता की भावना जागृत कर दे।

और वह उन दलो मे एकता बनाए रखने मे आठ वर्ष तक (जब तक कि वह राष्ट्रपति बने रहे) निश्चित रूप से सफल हो गए। किन्तु ज्योही वह अपने घर माउट वैरिनो गए कि दलीय सघर्ष अधिक उग्र रूप मे फूट पडा।

उस समय के चुनाव के भद्दे तरीके के अनुसार (जो शीघ्र ही बदल दिया गया था) जिस व्यक्ति को अधिक मत मिलते, उसे राष्ट्रपति और उससे कम मत प्राप्त करने वाले को उपराष्ट्रपति चुन लिया जाता था। जान एडम्स सन् 1796 मे सयुक्त राज्य अमेरिका के दूसरे राष्ट्रपति और श्री जैफर्सन उपराष्ट्रपति बन गए। उनके लिए ये चार वर्ष बडे ही कष्टपूर्ण, भयानक और श्रान्त कर देने वाले थे। एडम्स उपद्रवी, आडम्बरी और शक्की मिजाज के वृद्ध पुरुष थे। वह फैडरलिस्ट होकर भी हैमिल्टन के हाथ के कठपुतले नही थे। हैमिल्टन ने एडम्स के मन्त्रिमण्डल के सब सदस्यो पर अपना पूरा नियन्त्रण जमाया हुआ था और वह वैयक्तिक पत्रो के द्वारा उन्हे न्यूयार्क से आदेश देता रहता था। फिलाडेल्फिया मे रहते हुए एडम्स को इसका कुछ भी ज्ञान न था। फैडरलिस्ट या हैमिल्टोनियनो का शासक दल अग्रेजो का अधिकाधिक पक्षपाती होता गया और ऐसे अवसर की खोज मे रहने लगा कि युद्ध मे फ्रास के विरुद्ध अग्रेजो का पूरी तरह साथ दिया जाय। किन्तु जनता की विचारधारा इसके सर्वथा विपरीत दिशा मे बह रही थी। फलत जनता का मुँह बन्द करने के लिए 'एलियन' और 'सेडिशन' नामक दो विख्यात (या कुख्यात) कानून पास कर दिए गए। एलियन कानून के द्वारा उन सब

विदेशियो को देश से निकालने का अधिकार दे दिया गया था, जिनके विचार सरकार को नापसन्द थे। सेडिशन कानून के द्वारा सरकारी नीति के विरुद्ध लिखने या बोलने वाले किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार या कैद कर लेने का अधिकार राज्याधिकारियो को दे दिया गया था। लोग इन दोनो कानूनो को भ्रम से एक ही समझ लेते थे, पर वास्तव मे थे ये दोनो अलग अलग। यद्यपि ये दोनो कानून सर्वथा असवैधानिक थे, फिर भी हिस्टिरिया या पागलपन के दौरे मे ये कानून पास कर दिए गए। जान एडम्स ने उपद्रवी स्वभाव का होते हुए भी एलियन कानून को कभी प्रयोग मे न लाने की बुद्धिमत्ता दिखाई और सेडिशन कानून का प्रयोग भी बहुत बुरी तरह से नही किया, फिर भी कई लोगो को अपने विचार-स्वातन्त्र्य के कारण बहुत कष्ट उठाने पडे। बहुत सी गिरफ्तारियाँ हुई और कई गण्यमान्य व्यक्तियो को, जिनमे अनेक प्रतिष्ठित पत्र-सम्पादक भी थे, जेलो मे डाल दिया। किन्तु ऐसी प्रत्येक घटना ने जनता का ध्यान इतनी जोर से अपनी ओर आकृष्ट किया और उसमे रोष की ऐसी लहर फैल गई कि सब लोग यह निश्चित रूप से समझने लगे कि इन दोनो कानूनो को शीघ्र ही रद्द कर दिया जायगा।

राष्ट्रपति पद पर अपनी चार वर्ष की नियत अवधि पूरी होने से पहले ही जान एडम्स को यह ज्ञात हो गया कि उसके मन्त्रिमण्डल पर हैमिल्टन का पूरा नियन्त्रण है, इसलिए उसने मन्त्रिमण्डल के तीन प्रमुख सदस्यो को तत्काल बरखास्त कर दिया। फ़ैडरलिस्ट पार्टी मे आगे चलकर जो दरार पड गई, उससे जैफर्सन की नव-सगठित डेमोक्रेटिक-रिपब्लिकन पार्टी की सन्

1800 के चुनाव मे विजय निश्चित हो गई।

किन्तु सन् 1796 से सन् 1800 तक के उन चार वर्षों मे श्री जैफर्सन ने स्वय बडी शान्ति से कार्य किया। वह सर्वथा निष्पक्षता के साथ सिनेट की अध्यक्षता करते, जबकि सदस्यगण अपना अधिकतर समय उनका नाम निर्देश किये बिना उन पर आक्षेप करते रहते थे। सिनेट के बहुत से नियम, जो अभी तक लागू है, उन्ही की कृपा से बने थे। वह सभा-सस्थाओ मे जाने का कभी कोई प्रयत्न नही करते, क्योकि वह जानते थे कि फिलाडेल्फिया के उच्च वर्ग मे उनका और उनके मित्रो का (जो अपवित्र डेमोक्रेट कहलाते थे) कभी स्वागत नही किया जायगा। वह अपने मित्रो को, जिनकी सख्या बहुत बडी थी, डेमोक्रेटिक कमेटी के सगठन के लिए प्रोत्साहित करते रहते और कहते कि समय आने पर सत्ता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक नगर, कस्बे और गाँव मे तथा सभी राज्यो मे डेमोक्रेटिक कमेटियाँ सगठित की जाएँ। वह अधिकतर दर्शनशास्त्र के अध्ययन, चट्टानो और प्रस्तरीभूत वनस्पतियो तथा पौधो और खेतीबाडी के पशुओ की नस्ल को सुधारने के निरीक्षण के कार्य मे लगे रहते थे।

और सचमुच यह बडे आश्चर्य की बात लगती है कि समय आने पर वह श्री टॉमस जैफर्सन के प्रबल विरोधी ऐलेग्जैंडर हैमिल्टन ही थे, जिन्होने राष्ट्रपति पद के चुनाव मे उनकी विजय निश्चित कर दी थी। बात यह हुई कि यद्यपि सन् 1800 के निर्वाचनो मे जनता स्पष्ट रूप से श्री जैफर्सन को ही राष्ट्रपति पद पर प्रतिष्ठित करना चाहती थी, फिर भी मतदाताओ के मत उनके और ऑरन बर के बीच बँट से गए थे। समझा यह जाता

था कि ऑरन भी जैफर्सन की डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी से ही सम्बद्ध हैं। ऑरन ने फैडरलिस्टो के साथ एक कुटिल चाल चली और उस पार्टी के बहुमत ने उनका समर्थन कर दिया। इसलिए अब राष्ट्रपति का चुनाव मतदान विभिन्न राज्यो के द्वारा होता है। उस समय अमेरिका मे चौदह राज्य थे। पहले मतदान मे श्री जैफर्सन को आठ और बर को छ मत मिले, किन्तु राष्ट्रपति पद के लिए कम से कम नौ मत आवश्यक थे। यह मतदान राजधानी मे ग्यारह फरवरी को हुआ था जबकि चारो ओर बर्फीला तूफान उमड रहा था। सब मतदाताओ को पहाडो को पार कर मतदान के लिए वहाँ आना पडा था। यहाँ तक कि एक सदस्य को तो श्री जैफर्सन के पक्ष मे मत देने के लिए स्ट्रेचर पर डालकर वहाँ लाया गया था।

वे सब लोग वही बने रहे और दिनभर तथा पूरी रात बार-बार मतदान होता रहा। दूसरे दिन (12 फरवरी को) प्रात आठ बजे जब सत्ताईसवी बार मतदान हुआ और स्थिति ज्यो-की-त्यो बनी रही तो अगले दिन ग्यारह बजे तक के लिए मतदान का कार्य स्थगित कर दिया गया।

अगले दिन भी दो बार मतदान बिना किसी परिवर्तन के हुआ। इसलिए अब फिर अगले दिन शनिवार के लिए यह कार्य स्थगित कर दिया गया। शनिवार को भी तीन बार मतदान हुआ और तीनो बार परिणाम ठीक एक जैसे ही रहे। इसलिए अब बैठक सोमवार तक के लिए स्थगित कर दी गई।

बर इस सारे समय एलबैनी मे था। उसने इस समय न कुछ किया, न किसी को कुछ कहा ही। वह भली-भाँति जानता था

कि उसे अपनी शक्ति उस प्रतिपक्षी दल से मिल रही है, जिसके साथ उसका कोई सम्बन्ध नही।

इस समय हैमिल्टन न्यूयार्क मे था। उसे ऑरन बर से बडी चिढ थी और वह उसे विश्वासघाती नही तो कम से कम अविश्वसनीय व्यक्ति अवश्य समझता था। वह जैफर्सन का भी सदा विरोध करता था, फिर भी वह उन्हे आदरणीय मानता था। हैमिल्टन ने जान एडम्स को बुरी तरह पराजित कर दिया था और एक तरह से उसे राजनीतिक क्षेत्र से बाहर धकेल दिया था, किन्तु अब उसके सामने ऑरन बर के राष्ट्रपति बनने की सम्भावना उपस्थित हो गई, और वह भी हैमिल्टन के तथाकथित अनुयायियो के मतो से।

हैमिल्टन का कई प्रकार से यह बहुत अच्छा समय था। उसने बर की अपेक्षा जैफर्सन को विजयी बनाने के लिए खूब सघर्ष किया। उसने पत्र लिखने, बातचीत करने, लोगो को प्रेरित तथा प्रभावित करने, यहाँ तक कि डराने-धमकाने मे रात-दिन एक कर दिया। अब उसका अपने अनुयायियो पर ही कोई विशेष नियन्त्रण न रह गया था। बात तो यह है कि एक दल के रूप मे वे कभी के विभक्त हो चुके थे और फिर कभी सगठित न हो पाए। फिर भी उसने अपनी ओर से सब कुछ किया और इस समय भी कुछ लोग ऐसे अवश्य थे, जो उसकी बात ध्यान से सुनते थे।

इस बीच लोगो की भीड का रुख बिगडता जा रहा था। वे श्री जैफर्सन को राष्ट्रपति बनाना चाहते थे, जनता का बहुत बडा बहुमत उनके पक्ष मे था। जब सोमवार का दिन भी बिना

किसी निर्णय के बीत गया तो ऐसा लगने लगा कि नई राजधानी वाशिंगटन मे, जहाँ पर सरकार अभी-अभी फिलाडेल्फिया से बदलकर आई थी, सार्वजनिक दगे हो जाएँगे। उस रात हैमिल्टन के अनुयायियो ने बडी शीघ्रता मे अपनी एक बैठक की। दूसरे दिन मगलवार को वरमोण्ट राज्य को अपना मत बर के बजाय जैफर्सन को देने की स्वीकृति दे दी गई। और मेरीलैंड राज्य ने भी इसका अनुसरण किया। फलत श्री जैफर्सन राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित हो गए।

आज वाशिंगटन को सगमरमर और दूसरे कीमती पत्थरो के बने हुए आलीशान भवनो और साफ-सुथरी पक्की सडको से सुसज्जित देखकर हम इस बात की कल्पना भी नही कर सकते कि उस समय इसकी कैसी अवस्था थी। ह्वाइट हाउस बन चुका था किन्तु न तो इसे फर्नीचर से ही सजाया गया था और न इसे गर्म रखने की ही कोई व्यवस्था की गई थी, यहाँ तक कि प्रकाश के लिए पर्याप्त लैम्प भी नही थे। ह्वाइट हाउस और अस्थायी राजधानी के बीच दलदल था। स्थान बहुत खुला और लम्बा-चौडा था, किन्तु न तो पक्की सडके ही थी और न फुटपाथ ही बने थे, यहाँ तक कि सडको आदि के लिए अभी स्पष्ट चिह्न भी नही बनाये गए थे। सडको और गलियो मे रोशनी की भी कोई व्यवस्था न थी। और तो क्या वृक्षो से झडे हुए पत्तो को बुहारने और सफाई करने का काम भी नही हो पाता था। वहाँ पर बने हुए मकान ऐसे लगते थे मानो दलदल मे स्थित छोटे-छोटे द्वीप हो। कोई व्यक्ति सायकालीन भोजन के लिए अपने किसी मित्र के घर चला जाता तो दलदल, अधकार और अपरि-

चित भागो आदि के कारण उसे रातभर वही ठहरना पड जाता। यदि कोई व्यक्ति रात्रि के समय घर से बाहर निकलने की हिम्मत कर बैठता तो यह निश्चित था कि वह दलदल के गड्ढो या गाडियो के पहियो से बने हुए गहरे गड्ढो और कीचड के बडे-बडे रन्ध्रो मे फँसकर कही खो जाय। जब जान एडम्स और उनकी पत्नी श्रीमती एडम्स ह्वाइट हाउस मे आए तो उन्होने यह शिकायत की कि भवन को स्वच्छ रखने के लिए कम से कम तीस सेवको की आवश्यकता पडेगी। इस भवन के प्रधान कमरो मे से अभी तक कोई भी पूरी तरह तैयार न हो पाया था। श्रीमती एडम्स बडे दर्शक कक्ष मे अपने कपडो को सूखने के लिए लटकाया करती थी। पहाडी पर बसा हुआ जार्ज टाउन अठारहवी शताब्दी का एक ऐसा कस्बा था, जिसमे अपने समय की सब सुविधाएँ उपलब्ध थी, किन्तु उस समय न्यूयार्क से इतनी दूर था और मार्ग इतने टूटे-फूटे और खराब थे कि ससद सदस्य और दूसरे लोग, जो इस नई राजधानी मे आते थे, उनका वहाँ तक पहुँचना कठिन ही था। आजकल यह न्यूयार्क से कुछ भी दूर नही है, पर उस समय यह बहुत दूर था।

ससद सदस्य यथासम्भव ससद भवन के निकटवर्ती बोर्डिंग हाउसो मे रहते थे। ससद भवन और ह्वाइट हाउस के मध्य एक कीचड का प्रवाह था जिसका नाम पेसिलवानिया एवेन्यू था। इसके दोनो ओर दलदल के बडे-बडे गड्ढे थे। इनके कारण वहाँ रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को निश्चित रूप से शीत और ज्वर का शिकार बन जाना पडता था।

निर्वाचन प्रतियोगिता के इस नाटक के समय जैफर्सन ससद-

भवन के निकट कानरैड के बोर्डिग हाउस मे रहते थे। वह प्राय भोजन करते समय मेज के अन्तिम छोर पर एक निश्चित स्थान पर ही सदा बैठते थे। उन्होने अपना स्थान कभी नही बदला। वह दूसरो से कभी वाद-विवाद नही करते और निर्वाचन की प्रतियोगिता के बारे मे भी कोई उत्सुकता न दिखाते थे। वह अपनी पुरानी तटस्थ वृत्ति के साथ सीनेट की अध्यक्षता करने के लिए गए।

उनके सवाददाता ने बताया कि ठीक इस समय भी वह अपने दैनिक कार्य मे व्यस्त थे। उदाहरण के लिए उन्होने अपने एक डाक्टर मित्र को इस समय कुछ ऐसी हड्डियो के बारे मे लिखा, जिनका पता अभी-अभी लग पाया था और जो उनके सग्रहालय के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती थी। राजनैतिक सघर्ष के प्रति जैफर्सन के मन मे इस समय जैसी उदासीनता उत्पन्न हुई, वैसी पहले कभी न हुई थी। एक पत्र मे उन्होने लिखा कि "हम दोनो मे से कौन चुना जायगा या कोई भी नही चुना जायगा, मैं इसके बारे मे कोई निश्चित कल्पना नही कर सकता।"

वह राष्ट्रपति पद पर चुन लिए गए। पर तब से लेकर 4 मार्च, 1801 तक जबकि उन्होने ससद के नये सत्र का उद्घाटन किया, वह बोर्डिग हाउस के मेज की उसी सीट पर बैठते रहे। जब उन्हे कोई अच्छी सीट प्रदान की जाती तो वह उसे अस्वीकार कर देते।

जान् एडम्स 4 मार्च को प्रात चार बजे अँधेरे मे ह्वाइट हाउस को बडी शीघ्रता से छोडकर चला गया। वह श्री जैफर्सन

के उद्घाटन समारोह को देखने के लिए वहाँ ठहरने का साहस न कर पाया, क्योकि वह उस आदमी की विजय नही देख सकता जिसने उसे निकाल बाहर किया है। क्रान्ति के साहसिक दिनो मे वे दोनो घनिष्ठ मित्र थे, उसके बाद पेरिस मे भी वे मित्र बने रहे और अपनी वृद्धावस्था मे एक बार फिर घनिष्ठ मित्र बनने वाले थे किन्तु इस समय एडम्स इतना उदास हो गया था कि वह जैफर्सन के राष्ट्रपति पद की शपथ-ग्रहण के समय उनके साथ खडा नही रह सकता था।

उस दिन ससद भवन के निकटवर्ती कानरैड के बोर्डिंग हाउस और उसके आस-पास का प्रत्येक व्यक्ति तोपो की गड-गडाहट से प्रात काल ही जाग उठा। इस गाँव की नई राजधानी मे चारो ओर से भीड उमडने लगी। कीचड से भरी सडके लोगो के आने-जाने से कोलाहलपूर्ण हो उठी। उस दिन एक अघोषित राष्ट्रीय अवकाश हो गया। यद्यपि इस दिन छुट्टी की कोई अधि-कृत घोषणा नही की गई थी, फिर भी मैने से लेकर जार्जिया तक सर्वत्र राष्ट्रीय पर्व का सा आयोजन हो गया। इस अवसर पर लोगो ने अपने आनन्द और उत्साह का जैसा भव्य और विराट् प्रदर्शन किया था, प्रत्येक नगर, ग्राम और कस्बे मे उल्लास की जैसी लहर उमडी थी, वैसी लहर क्रान्ति युद्ध के अन्त के बाद कभी दिखाई नही दी थी।

प्रजातन्त्र की विजय हो गई थी और जनता का हृदय इस तथ्य को भली-भाँति समझ गया था। लोग अनुभव करने लगे थे कि 'एलियन' और 'सेडिशन' कानून रद्द कर दिए जाएँगे और लिखने और बोलने की फिर से स्वतन्त्रता हो जायगी। सब प्रकार

की शिकायतो, प्रार्थना-पत्रो और दुखो को सुनने के लिए सरकार के कान अब सदा खुले रहेगे। श्री जैफर्सन ने उन प्रत्यक्ष करो को वापस लेने का वायदा किया था, जिनके कारण हैमिल्टन के अनुयायी इतने अप्रिय हो गए थे। अब लोग यह अनुभव करने लगे थे कि अपने पर अब उनका अपना ही अधिकार है। उन्हे वापस आत्मस्वरूप का लाभ हो गया था।

प्रात दस वजे ऐलेग्जैंडरिया मे कानरैड के बोर्डिग हाउस के सामने सैनिक परेड हुई। श्री टॉमस जैफर्सन अपने साधारण वस्त्रो मे बोर्डिग हाउस से बाहर आए और राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण करने के लिए बाजारो मे से पैदल ही चलकर ससद भवन पहुँचे।
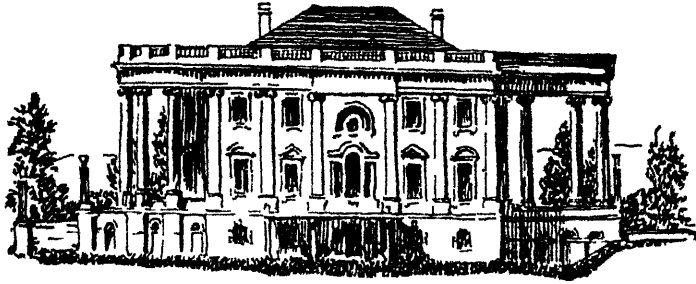
राष्ट्रपति जैफर्सन

श्री जैफर्सन का उद्घाटन भाषण अमेरिका के इतिहास मे राष्ट्रीय एकता के लिए की गई बडी अपीलो मे से एक है। केवल अब्राहम लिकन की ही वैसी एक या दो विशेषत उनके दूसरे उद्घाटन भाषण मे शत्रु और मित्र दोनो के प्रति एक-सी उदार और महान् भावना लक्षित होती है। उन्होने कहा—'हम सब रिपब्लिकन है, हम सब फैडरलिस्ट हैं।' यह उन दोनो दलो को सबोधित करके कहा गया था जो दस-बारह वर्ष से परस्पर ऐसी कटु प्रतिद्वन्द्विता मे उलझे हुए थे, जैसी अमेरिका के राजनीतिक जीवन मे कभी नही दिखाई दी।

और इसके बाद यह प्रसिद्ध सन्दर्भ—'यदि हममे यहाँ कोई ऐसा भी हो जो 'यूनियन' (इस सयुक्त राज्य) को भग कर देना या इसके लोकतन्त्र को बदल डालना चाहता हो तो भी हमे उसके विचारो की भूल को इस विचार से सहन करना चाहिए कि

हमारी विवेक-बुद्धि उससे निपट लेगी।'

श्री जैफर्सन बाद मे होने वाले अब्राहम लिंकन के समान ही बदला लेने की भावना से घृणा करते थे। वह चाहते थे कि जहाँ तक हो सके अधिक से अधिक फैडरलिस्टो को अपने पक्ष मे कर लिया जाय। वह अनुभव करते थे कि अमेरिकन प्रजातन्त्र की परम्परा का मूल एक ही है, वह और उनके बहुत से विरोधी भी वही पर स्थित है और समय के बीतने के साथ उन्होने यह सिद्ध कर दिखाया कि वह सही थे। क्योकि फैडरलिस्ट पार्टी तब ऐसी रह गई जिसके सिर ही सिर हो, पर शरीर न हो। जैसी कि उन्होने भविष्यवाणी की थी, बहुसख्यक फैडरलिस्ट मतदाता उनके पक्ष मे हो गए। राष्ट्रपति पद के लिए दूसरी बार खडे होने पर 176 मे से 14 को छोडकर शेष सब मत श्री जैफर्सन के पक्ष मे ही आए।

श्री जैफर्सन का साधारण रहन-सहन उच्चवर्ग, विशेषत फैडरलिस्टो को बहुत खटकता था। उन्हे सभी आडम्बरो, राजकीय उपाधियो, व्यर्थ की प्रतिष्ठा और तथाकथित दिखावटी शिष्टाचारो से बडी घृणा थी। जैसा कि हम अभी देख चुके हैं वह राष्ट्रपति पद के अपने उद्घाटन भाषण के लिए साधारण वस्त्रो मे, 'अगरक्षक' या सेवको को साथ लिए बिना, अकेले ही चलकर ह्वाइट हाउस पहुँचे थे। उन्होने सरकार के लोकतन्त्रीकरण का निश्चय कर लिया था। इसके लिए उन्होने वाशिगटन और एडम्स के शासनकाल मे प्रचलित साम्राज्यशाही या दरबारी सभी प्रकार के रीति-रिवाजो को हटाने का निर्णय कर लिया। जैफर्सन के समान ही वाशिगटन भी इन आडम्बरों को नही चाहते

थे, किन्तु उन पर हैमिल्टन तथा ऐसे ही दूसरे लोगो का अत्यधिक प्रभाव था जो राष्ट्रपति पद की प्रतिष्ठा के लिए इन सब राजकीय आडम्बरो के समर्थक थे।

जैफर्सन ने अपने लिए कुछ नियम बना लिए थे। वह प्राय अपना अधिकतर काम सबसे निचली मजिल के कार्यालय मे करते, यहाँ औपचारिक वस्त्र पहनकर बैठना पसन्द न करते थे। अब्राहम लिकन की तरह वह भी पॉवो मे अधिकाश समय घरेलू स्लीपर पहनकर ही काम करते रहते। उनके वस्त्र हमेशा बहुत अच्छे होते थे, पर वह इस ओर से लापरवाह थे। सभी भेट करने वालो से, वे चाहे किसी भी पद पर कार्य करने वाले क्यो न हो और कितने ही बडे पदाधिकारी क्यो न हो, वह इस सबसे निचली मजिल के कार्यालय मे ही भेट करते थे।

जब ब्रिटिश राजदूत श्री एन्थोनी मेरी विदेश मन्त्री जैम्स मैडिसन के साथ राष्ट्रपति जैफर्सन को अपना प्रमाण-पत्र देने के लिए आया उस समय वह उस राजकीय स्वागत-भवन मे न थे, जहाँ कि उसे ले जाया गया था। कुछ देर बाद श्री जैफर्सन अपने साधारण वस्त्रो मे, घरेलू स्लीपर पहने स्वागत-कक्ष मे प्रविष्ट हुए। श्री मेरी इस अवसर के लिए सोने के फीतो और तलवार से युक्त पूरी दरबारी पोशाक मे सज-धजकर आया था। जैफर्सन ने अत्यधिक मित्रता के भाव से राजदूत को एक कुर्सी तक ले जा कर शिष्टाचार के ढग से बातचीत करने का प्रयत्न किया, किन्तु मेरी इतना अप्रसन्न हो गया था कि वह इस बात को भूल न सका।

अभी तो और भी बुरी बात होने वाली थी। ब्रिटिश राज-

दूत और उनकी पत्नी श्रीमती मेरी जब पहली बार ह्वाइट हाउस मे राजकीय भोज मे सम्मिलित हुए तो जैफर्सन के शिष्टाचार का नया ढग लागू हो चुका था। उन्होने निश्चय कर लिया था कि मेज पर, विशेष स्थानो पर, विशेष द्वार से आने-जाने आदि की व्यवस्था नही की जायगी। अतिथि लोग जहाँ जिसके साथ खडे हो, वही पास की कुर्सियो पर बैठ जायँगे।

ब्रिटिश राजदूत और श्रीमती मेरी, जो शानो-शौकत के बहुत शौकीन थे, उस रात भी बडी सज-धज के साथ वहाँ उपस्थित हुए। स्पेन का राजदूत युरुजो अपनी सुन्दर अमेरिकन पत्नी के साथ, इसी प्रकार विदेश मन्त्री मैडिसन और वित्त मन्त्री एल्बर्ट गैलेटिन तथा फ्रास का राजदूत अपनी पत्नी के साथ वहाँ उपस्थित था।

जैफर्सन जेम्स मैडिसन की आकर्षक रूपवती पत्नी 'डोली' के साथ बाते करते हुए खडे थे। डोली विधुर राष्ट्रपति की ओर से बहुत देर तक अतिथियो का स्वागत-सत्कार करती रही।

राजकीय भोज की सूचना दे दी गई और जैफर्सन बिना अधिक सोच-विचार किए डोली मैडिसन की बाँह अपने हाथ मे डाले हुए भोजन-शाला की ओर चल पडे।

इस पर ब्रिटिश राजदूत क्रोध से लाल हो गया। उसने सोचा राष्ट्रपति को अपना हाथ उसकी पत्नी श्रीमती मेरी को पकडाना चाहिए था। कम से कम विदेश मन्त्री को तो ऐसा करना ही चाहिए था। किन्तु ऐसा नही हुआ। श्री मैडिसन उस समय वित्त मन्त्री की पत्नी श्रीमती गैलेटिन से बातचीत कर रहे थे, और वह उसी के साथ भोजन के लिए चल पडे। अन्त मे ड्राइग-

ब्रिटिश राजदूत क्रोध से लाल हो गया।

रूम मे श्री और श्रीमती मेरी के सिवा और कोई नही रह गया। तब वह सबसे अन्त मे एक-दूसरे के साथ ही भोजन पर जाने के लिए विवश हो गए। मेरी दम्पति को सबसे बडी चोट तब लगी, जब वह भोजन-कक्ष मे पहुँचे। श्री मेरी ने सोचा कि वह स्पेन के राजदूत की रूपवती पत्नी श्रीमती युरुजो के साथ भोजन पर बैठकर इस अशिष्ट व्यवहार के बदले कुछ आत्म-सन्तोष प्राप्त कर लेगे। किन्तु यहाँ भी उनको मुँह की खानी पडी। राजनैतिक शिष्टाचार से अनभिज्ञ भद्दी-सी शक्ल-सूरत वाला एक ससद सदस्य उस स्थान पर आ विराजा, जिसे ब्रिटिश राजदूत ने अपने लिए चुना था।

मेरी दम्पति वहाँ से शीघ्र ही उठकर अपने घर चले गए। उनका यह क्रोध कभी शान्त न हो पाया। उन्हे ऐसा लगा कि सम्राट् जार्ज तृतीय का अपमान किया गया है। उन्होने वाशिंगटन के अखबारो मे अपनी शिकायत प्रकाशित कराई। फिलाडेल्फिया और न्यूयार्क मे भी इसकी गूज पहुँच गई। कुछ फैडरलिस्ट पत्रो ने इसे 'लोकतन्त्र शासन प्रणाली के कमीनेपन' के उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत किया। वाशिंगटन मे इस प्रश्न को लेकर लोगो मे बहुत मतभेद हो गया। कुछ सुन्दरियो ने जैफर्सन के इस व्यवहार को अक्षम्य घोषित किया, और कुछ लोग कहने लगे कि जैफर्सन को भी शिष्टाचार के अपने नियम बनाने का वैसा ही अधिकार है, जैसा कि इग्लैड के या किसी अन्य देश के सम्राट् को हो सकता है।

किन्तु मिस्टर मेरी ने इस विषय के बारे मे ब्रिटिश सरकार को लम्बा विवरण भेजा और उसके कथनानुसार उसकी सरकार

यह विश्वास करने के लिए विवश हो गई कि वहाँ जान-बूझकर अशिष्टता बरती गई थी। फलत तत्कालीन अमेरिका के इग्लैड-स्थित राजदूत श्री जैफर्सन की प्रसन्नता के दूसरे स्तम्भ जेम्म मुनरो को अनेक बार वहाँ पर (इग्लैड मे) अशिष्ट व्यवहार का सामना करना पडा। इस प्रकार राजनायिक के रूप मे उनके कार्यों मे कई बार बडी भयकर बाधाएँ उपस्थित होने लगी।

जैफर्सन को इस बात का स्वप्न मे भी ध्यान न आया कि ह्वाइट हाउस मे लोकतन्त्र कायम करने का ऐसा परिणाम भी हो सकता है। उन्होने तो वातावरण को यथासम्भव अधिक से अधिक साधारण बनाने और स्वय इस ढग से रहने का प्रयत्न किया था, जैसे कि दूसरे सब लोग रहते है। उन्ह इम बात का जरा भी ध्यान नही था कि ऐसे मामलो मे बहुत से लोगो को सादगी कतई पसन्द नही है।

उन्हे कुछ समझ मे नही आ रहा था कि अब क्या किया जाय। फिर भी उनके मेधावी मस्तिष्क मे एक बात कौंध गई कि श्री मेरी को थोडे से मित्रो के साथ पारिवारिक रूप से भोजन पर बुलाया जाय और सारी स्थिति स्पष्ट कर दी जाय। उन्होने,विदेश मन्त्री मैडिसन से कहा कि वह उसके लिए कुछ प्रयत्न करें।

अब श्री मेरी की बारी थी। उन्होने इस विषय को लेकर लम्बा पत्र लिखा और कहा कि यदि उन्हे सम्राट् जार्ज तृतीय के अधिकृत प्रतिनिधि के रूप मे भोज परआमन्त्रित किया जाता है तो सभी राजकीय शिष्टाचारो का पालन ठीक ढग से किया जाना चाहिए। यह उनका अपने सम्राट् के प्रति एक आवश्यक कर्तव्य

है। और यदि उन्हे अधिकृत रूप से आमन्त्रित न कर व्यक्तिगत रूप से आमन्त्रित किया जा रहा है तो उनका यह कर्तव्य हो जाता है कि वह उसे अस्वीकार कर दें। इस लम्बे पत्र का सार यही था, यद्यपि यह बात गजो लम्बे औपचारिक वाक्य-विन्यासो और राजनैतिक शब्दावली से आवृत्त थी।

फलत जैफर्सन ने यह विचार छोड दिया। ब्रिटिश राजदूत और उनकी पत्नी फिर कभी ह्वाइट हाउस नही आए। जैफर्सन ने एक बार श्रीमती मेरी के बारे मे कहा था कि वह एक ऐसी कर्कशा हे जिसने पहले ही हमारी सुख-शान्ति को भग कर दिया है। इस कठिन और खतरनाक समय मे ब्रिटिश राजदूत को राज-नैतिक शत्रु बना लेना ह्वाइट हाउस के लिए कोई अच्छी बात न थी। यह उस लोकतन्त्रीय प्रणाली का ही परिणाम था जो असफल रही थी।

किन्तु कुल मिलाकर इस नई सादगी का बहुत अच्छा प्रभाव पडा, और सामान्य रूप से राजनीतिज्ञो ने उसे अपना भी लिया। कुछ दम्भी उद्यत लोगो ने वाशिंगटन और एडम्स के दिनो की शानशौकत और तडक-भडक को उठा दिए जाने पर बहुत क्षोभ प्रकट किया। किन्तु श्री जैफर्सन की मुख्य कार्यप्रणाली का वर्षो तक पालन किया जाता रहा। हुआ यह कि जैफर्सन के बाद मे ह्वाइट हाउस मे राजनायिक पुरुषो की उनके पद के अनुसार प्राथमिकता को फिर से स्वीकार कर लिया, किन्तु औपचारिकता और दिखावटी शिष्टाचार को उन्होने बिलकुल कम कर दिया और फिर वह दोबारा कभी पनप न पाया। जो रीति रिवाज आवश्यक और अपरिहार्य थे, उनमें भी बडी सादगी बरती जाने

लगी।

फैडरलिस्ट और विशेषत उनके कुछ नेताओ ने, जिन्होने जैफर्सन को भी कभी क्षमा नही किया था—मेरी दम्पति के साथ उनकी इस लडाई का लाभ उठाया और राजदूत के साथ मित्रता बढाने का पूरा प्रयत्न किया। यो भी कह सकते है कि मित्रता के बहाने उन लोगो ने बार-बार ब्रिटिश राजदूत से मिलकर जैफर्सन की सरकार के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने के भी प्रयत्न किए।

जैफर्सन इन सब घटनाओ से चिन्तित थे। यद्यपि वह यह भली-भाँति जानते थे कि यह मात्र दूध का उफान है। फिर भी लन्दन मे अमेरिका के रातदूत श्री मुनरो का कार्य राष्ट्र के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था, यदि उनके कार्य मे वहाँ पर पद-पद पर बाधा उपस्थित की जाय और उन्हे अपमानित किया जाय तो वह अपना कार्य भली-भाँति सम्पन्न नही कर सकते थे। यह एक बडी विषम स्थिति थी।

इस विषम परिस्थिति का तब तक अन्त नही हुआ जब तक मेरी दम्पति के जाने के कई वर्ष बाद डेविड माण्टेग्यू अर्सकिन अपनी रूपवती पत्नी, जो फिलाडेल्फिया के फ्रासिस कैडवाल्डर घराने मे पैदा हुई थी, के साथ वहा नही आए। राजदूत का पद भार सम्भालते ही उन्होने अपनी सूझ-बूझ से वातावरण फिर से मैत्रीपूर्ण और शान्त बना दिया।

मेरी दम्पति और श्री जैफर्सन के इस झगडे की एक कहानी से यह प्रकट होता है कि राष्ट्रपति की पुत्री मार्था जैफर्सन (जो तब श्रीमती रेडोल्फ बन चुकी थी) भी इस प्रसग की एक कडी थी। वह अपने परिवार की देखभाल मे व्यस्त रहने के कारण

वार्शिगटन अधिक नही आया करती थी। जब वह पहली बार वार्शिगटन आई तो उसे ब्रिटिश राजदूत की पत्नी का एक पत्र मिला जिसमे यह पूछा गया था कि वह राष्ट्रपति की पुत्री की हैसियन से ह्वाइट हाउस आई है या वर्जीनिया के एक नागरिक की पत्नी की हैसियत से। यदि पहली बात है तो वहाँ श्रीमती मेरी (उनसे) भेट करने आयेगी और यदि वह दूसरे रूप मे आई है तो श्रीमती मेरी यह आशा करती है कि वह उनसे भेट करने के लिए आएँ। श्रीमती रेंडोल्फ ने उत्तर दिया कि वास्तव मे वह वर्जीनिया के एक नागरिक की पत्नी के रूप मे ही ह्वाइट हाउस आई है, फिर भी वह आशा रखती है कि श्रीमती मेरी को उनसे भेट करने के लिए आना चाहिए, क्योकि जैफर्सन के शिष्टाचार के नियमो के अनुसार राजधानी के निवासियो को नए अतिथियो से भेट करने के लिए आना चाहिए।

फलत श्रीमती मेरी श्रीमती रेंडोल्फ से पहले भेट करने के लिए आईं।

राष्ट्रपति और अपने दल के नेता के रूप मे जैफर्सन का यह सर्वप्रथम और प्रमुख कार्य हो जाता था कि कम-से-कम कुछ-न-कुछ सरकारी अधिकारी तो अवश्य होने ही चाहिएँ, जिन पर वह पूरी तरह से विश्वास कर सके। जब वह ह्वाइट हाउस मे आए तो उन्होने देखा कि सरकारी अधिकारियो मे से कोई भी डैमोक्रेटिक नही है। नीचे से लेकर ऊपर तक सभी पदो पर फैडरलिस्टो ने अधिकार जमाया हुआ है। ये फैडरलिस्ट (जो हैमिल्टन के अनुयायी थे) जैफर्सन और उनके दल के कट्टर विरोधी थे। श्री जैफर्सन ने सबकी योग्यता और कार्यक्षमता को ध्यान मे रखते

हुए निकम्मे फैडरलिस्टो को उनके पदो से हटाने और अपनी पार्टी के सदस्यो को उचित पदो पर प्रतिष्ठित करने का कार्य आरम्भ कर दिया। इस पर एक तूफान उठ खडा हुआ। इतिहास की कई पुस्तको मे श्री जैफर्सन को दूषित प्रथा के प्रवर्तन का दोषी बताया गया है। उस समय कोई सिविल सर्विस या प्रशासनिक सेवा आयोग नही था। फिर भी जैफर्सन ने प्रत्येक मामले मे कितनी सावधानी बरती इसका सबसे बडा प्रमाण तो यही है कि जब उनका पहला शासनकाल समाप्त हुआ, उस समय भी सरकारी पदो पर आधे से अधिक फैडरलिस्ट ही जमे हुए थे और उनमे से बहुत से जैफर्सन के कट्टर शत्रु भी थे।

उनकी अपनी पार्टी के लोग श्री जैफर्सन से बहुत निराश हो गए थे, क्योकि वह न तो अपने राजनीतिक शत्रुओ का पूरी तरह सफाया ही कर रहे थे और न उनके स्थान पर अपनी पार्टी के व्यक्तियो को ही नियुक्त कर रहे थे। उन लोगो की दृष्टि मे उनके अपने दल मे बहुत से लोग, वास्तव में सरकारी पदो के लिए सर्वथा योग्य और उपयुक्त थे। फैडरलिस्टो के साथ समझौते का उदार विचार उनके मित्रो और जेम्स मुनरो जैसे उनके भक्तो को भी बडा भयावह प्रतीत होता था। उन्हे यह विचार ऐसा लगता था, जिससे उनकी शक्ति क्षीण हो जाने की सम्भावना भी हो सकती थी। किन्तु अन्त मे श्री जैफर्सन का यह कार्य बिलकुल उचित सिद्ध हुआ। क्योकि ऐसा करते हुए उन्होने धीरे-धीरे लगभग सभी फैडरलिस्ट पदाधिकारियो को अपने पक्ष मे कर लिया और इस प्रकार एक प्रभावशाली ढंग से उस पार्टी को समाप्त सा कर दिया। इसके बाद वह दल राजनीतिक क्षेत्र मे

फिर कभी दिखाई न दे पाया।

जैफसन ने ससद को दिए गए अपने प्रथम सदेश मे घोषणा करते हुए अपने शासन के प्रारम्भ मे ही उन सब प्रत्यक्ष करो को वापस ले लिया जिन्हे जनता नही चाहती थी। राजकीय सेवाओ मे मितव्ययिता के लिए सार्वजनिक ऋण कम कर दिए गए और हैमिल्टन की जिस पद्धति से राष्ट्रीय ऋण ने एक राष्ट्र निर्माण मे योग दिया था, उस ऋण को सब प्रकार से घटा दिया गया। सेडिशन कानून के द्वारा भाषण और सभाओ पर लगे हुए प्रतिबन्ध को समाप्त कर जनता को अपनी इच्छानुसार लिखने और बोलने की स्वतन्त्रता देने तथा अवैधानिक कानूनो के आधार पर दडित व्यक्तियो को क्षमा करने के लिए वह अत्यन्त उत्सुक थे। उन्होने 'नेशनलाइजेशन एक्ट' (राष्ट्रीयता कानून) पर, जिसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को जब तक वह चौदह वर्ष वहाँ न रह ले, अमेरिकन नही माना जा सकता था, बडे जोर से प्रहार किया।

उन्होने पूछा कि क्या पीडित मानवता को इस भूमडल पर कही आश्रय नहीं मिलेगा ?

जैफसन के ये सब काय बहुत ही लोकप्रिय हुए। अब क्रुद्ध फैडरलिस्टो के लिए उनके विरुद्ध कुछ भी कहने और करने की गुजाइश नही रह गई थी। श्री जैफसन को अपने वित्त मन्त्री श्री एल्बर्ट गैलेटिन के रूप मे एक अच्छी आर्थिक सूझ-बूझवाला प्रतिभाशाली व्यक्ति मिल गया था। वह आन्तरिक कर-भार को घटाने के साथ ही साथ राष्ट्रीय आय बढाने मे भी सफल हो गया, क्योकि उसने सार्वजनिक ऋण मे बडी दृढता के साथ वार्षिक कटौती करनी आरम्भ कर दी।

अफ्रीका के उत्तरी तट के साथ-साथ रहने वाले समुद्री डाकू (बारबैरी) चिरकाल से श्री जैफर्सन के हृदय मे काँटे की भाँति चुभ रहे थे। श्री जैफर्सन ने नौसैनिक कार्यवाही के द्वारा उनका सफाया कर दिया और इस प्रकार इतिहास मे अमेरिका के व्यापारिक जहाज सर्वप्रथम त्रिपोली की खाडी के लिए बिना किसी प्रकार का शुल्क दिए उस प्रदेश से आने-जाने लग गए। यहाँ यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि फ्रास और इग्लैड के लोगो ने भी इन डाकुओ के साथ सदा लडते रहने की अपेक्षा अपने जहाजो के यातायात के लिए उन्हे शुल्क दे देना ही श्रेयस्कर समझा था।

किन्तु श्री जैफर्सन के प्रथम शासनकाल की बहुत बडी और अमेरिकन इतिहास की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटनाओ मे से एक कार्य लुसियाना को खरीदना था।

मिसीसिपी नदी के पश्चिम मे एक बडा विशाल प्रदेश था। फ्रास की सरकार अपने साधारण से अधिकारो के कारण इस पर अपना दावा करती थी। मिसीसिपी नदी जहाँ मैक्सिको की खाडी मे गिरती है, वहाँ न्यू ओरलियन्स के साथ लुसियाना नामक एक फ्रासीसी उपनिवेश था। और इसके पूर्व मे फ्लोरिडास नामक एक अनिश्चित सीमाओ वाला स्पेन का उपनिवेश था। यह उपनिवेश इस खाडी के साथ-साथ चलता गया था। यह सारा विस्तृत प्रदेश नए और शक्तिशाली अमेरिकन राष्ट्र के लिए, जो पश्चिम की ओर पहले से ही विस्तृत होता जा रहा था, अत्यन्त उपयोगी, आवश्यक और महत्त्वपूर्ण था।

जैसा कि विदित हो चुका है पश्चिम के इस प्रदेश पर बचपन

से ही श्री जैफर्सन की आँख थी। वह सदा ही पश्चिमी लोगो या सीमान्त के निवासियो के अधिकारो के रक्षक रहे थे। इन लोगो की उपज मिसीसिपी नदी के द्वारा ससार के दूसरे भागो मे पहुँचती थी। जब फ्रास ने लुसियाना का यह विस्तृत प्रदेश स्पेन को सौप दिया तो यह व्यवस्था की गई थी कि अमेरिका मिसीसिपी का प्रयोग करता रह सकता है और न्यू ओरलियन्स मे अपनी वस्तुएँ निर्यात के लिए जमा करता रहेगा। अपना माल जमा करने का यह अधिकार पश्चिमी अमेरिकनो के जीवन का मात्र आधार था।

वाशिगटन मे सन् 1803 के प्रारम्भ मे जब यह सुना गया कि स्पेन ने अमेरिका के अपना माल जमा करने के अधिकार को वापिस ले लिया हे तो वहाँ पर बहुत बडी घबराहट उत्पन्न हो गई। मिसीसिपी नदी मे यातायात बन्द कर दिया गया। जैफर्सन ने स्पेनवालो से सुलह-सफाई की बहुत कोशिश की, पर इस विषय मे उसके परिणाम और भी बुरे निकले। स्पेन ने इस सारे विस्तृत प्रदेश को, जो इस समय सयुक्त राज्य अमेरिका का एक बहुत बडा भाग है, वापिस फ्रास को सौप दिया। स्पेन क्योकि एक कमजोर पडोसी था, इसलिए उसकी सब बाते सही जा सकती थी। इसके विपरीत फ्रास अजेय नैपोलियन बोनापार्ट की अध्यक्षता मे बहुत अधिक शक्तिशाली हो गया था, इसलिए फ्रास जैसे खतरनाक पडौसी की समस्या स्पेन की अपेक्षा सर्वथा भिन्न थी, विशेषत उस अवस्था मे जबकि फ्रास और इग्लैड का पारस्परिक युद्ध स्थायी रूप ग्रहण कर चुका हो। अकेले फ्रास का ही खतरा काफी था, किन्तु उस समय जबकि अस्थायी रूप से फ्रास और इग्लैड मे सन्धि हो चुकी थी, तो फ्रास और इग्लैड का

सम्मिलित विरोध तो अमेरिका के लिए और भी अधिक भयावह हो गया। बहुत सम्भव था कि उस अवस्था मे इग्लैड न्यू ओरलियन्स या मिसीसिपी घाटी पर अपना अधिकार जमा ले।

श्री जैफर्सन ने बहुत धीरे चलने वाली नौकाओ के उस युग मे यथासम्भव अधिक-से-अधिक तत्परता से काम लिया। उन्होने पेरिस-स्थित अपने राजदूत लिविंग्स्टन से प्रार्थना की कि वह नैपोलियन और उसके विदेश मन्त्री टैलेरैड से न्यू ओरलियन्स द्वीप और फ्लोरिडास को मोल लेने की सम्भावनाओ के सम्बन्ध मे बातचीत करे। यद्यपि फ्लोरिडास पर स्पेन का अधिकार था, किन्तु यह निश्चित था कि यदि नैपोलियन स्पेन को इसे बेच देने के लिए कहेगा तो वह अवश्य बेच देगा। श्री जैफर्सन को इस बात का तो कभी ध्यान ही नही आया था कि परिस्थितियो के वशीभूत होकर नैपोलियन सारे ही लुसियाना प्रदेश को बेच देना चाहता है। यह लुसियाना प्रदेश उत्तरी अमेरिका महाद्वीप का बहुत बडा मध्यवर्ती प्रदेश है।

अब तो वाशिंगटन मे नक्शो तथा दूसरे सम्बद्ध विषयो को लेकर मेडिसन, मुनरो और गैलेटिन तथा दूसरे लोगो के साथ जैफर्सन की रात-दिन चर्चा होने लगी। जैफर्सन ने अपने राजदूत की सहायता के लिए अपने सहायक मुनरो को पेरिस भेजने का निश्चय किया ताकि वह नैपोलियन के साथ समझौता वार्ता मे राजदूत को यथोचित सहायता प्रदान कर सके। फ्रास और इंग्लैड मे युद्ध का भय दिनो-दिन बढता जा रहा था, इसलिए मिसीसिपी नदी की सुरक्षा और भी आवश्यक हो गई थी। इस समय यह अत्यावश्यक प्रतीत होता था कि युद्ध छिडने से पहले

ही मिसीसिपी की भली-भाँति रक्षा-व्यवस्था कर ली जाय ।

मुनरो पेरिस के लिए चल पडे, किन्तु उनके वहाँ पहुँचने से पहले ही समझौते का कार्य बहुत कुछ सम्पन्न हो चुका था। इग्लैड के साथ फ्रास का युद्ध सुनिश्चित प्रतीत होता था, और इसके लिए नैपोलियन को धन की आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त नैपोलियन को इस बात का भी भरोसा न था कि वह फ्रास से इतनी दूर के प्रदेशो की रक्षा कर सकेगा, और वह यह भी नही चाहता था कि वे प्रदेश अग्रेजो के हाथो में चले जायँ। उसने टैलेरैंड के द्वारा अपना यह विचार प्रकट किया कि वह न्यू ओर-लियन्स से लेकर रियो ग्राड तक फैले हुए कनाडा तक के सारे ही लुसियाना प्रदेश को बेचना चाहता है, वह उसके किसी एक भाग को बेचने की बात नही कर सकता। जब लिविंग्स्टन ने उक्त प्रदेश की वास्तविक सीमाओ के बारे मे पूछा तो टैलेरैंड ने कहा कि "तुमने एक बहुत अच्छा सौदा किया है, और मुझे आशा है कि तुम इससे अधिक से अधिक लाभ उठाओगे।"

इस प्रकार उसने यह सुझाव दिया कि तुम इस प्रदेश की सीमाओ को जितना अधिक बढा सको बढा लो। और सच्चाई यह है कि कुछ समय बाद अमेरिका के पश्चिमी प्रदेश ने इससे खूब लाभ उठाया।

अब मुनरो और लिविंग्स्टन पर बहुत बडा उत्तरदायित्व आ गया था। उनको इस महाद्वीप का आधा भी भाग खरीदने के लिए नही कहा गया था। उनसे तो केवल इतनी ही आशा की गई थी कि वे मिसीसिपी के मुहाने के न्यू ओरलियन्स द्वीप को खरीद ले। इस सारे प्रदेश का मूल्य केवल डेढ करोड डालर था।

वाशिंगटन से नये आदेश प्राप्त करने मे महीनो लग जाते। फलत दोनो महानुभावो ने लम्बी साँस ली और उक्त सारे प्रदेश को खरीदने के सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

जब यह समाचार जैफर्सन को मिला तो वह चकित रह गए, क्योकि कार्य उनकी आशा से भी कही अधिक हो गया था। वह तो यह पहले ही से जानते थे कि ऐसा समझौता बहुत महत्त्व-पूर्ण है। उन्होने मुनरो को एक पत्र पेरिस भेजा और उसमे लिखा कि हमारे देश का भविष्य इस समझौते पर निर्भर है।

और अब उनके हृदय मे एक हलचल सी मच गई। वे यह नही जानते थे कि किसी भी राष्ट्रपति को अपनी कलम के एक झटके से आधा महाद्वीप खरीद लेने का कोई वैधानिक अधिकार है। यदि हैमिल्टन जैसा कोई दूसरा व्यक्ति होता तो वह कह देता कि राष्ट्रपति को सन्धि करने का जो अधिकार दिया गया है, उसके उसी अधिकार मे नए देश खरीदने का अधिकार भी सम्मिलित है। हैमिल्टन ने बहुत से सौदे करते समय इसी अधि-कार का उपयोग किया था। किन्तु जैफर्सन अन्तर्भूत अधिकारो को नही मानते थे और वह सदा सविधान मे लिखित शब्दो पर अक्षरश दृढ रहना चाहते थे।

उन्होने देखा कि उनके प्रतिनिधियो ने पेरिस मे जो कुछ कर दिया है, अब उससे फिर जाना सम्भव नही, किन्तु वह इतना तो कर ही सकते हैं कि इस सारे कार्य को पूर्णत कानूनी रूप देने के उद्देश्य से सवैधानिक सशोधन के लिए कहे।

वह इस विषय पर अपने मन मे विचार कर ही रहे थे कि उन्हे पेरिस से एक और सन्देश मिला, जिसमें कहा गया था कि

यदि उन्होने शीघ्रता न की तो हो सकता है कि नैपोलियन अपना विचार बदल दे।

जैफर्सन ने सन्धि का यह प्रस्ताव तत्काल सीनेट मे प्रस्तुत करने का निश्चय कर लिया। सीनेट ने 5 के विरुद्ध 26 के बहुमत से इस सन्धि पर स्वीकृति दे दी और हाउस (लोकसभा) ने 25 के विरुद्ध 91 के बहुमत से इसके लिए आवश्यक द्रव्य की व्यवस्था कर दी। न तो सीनेट ने ही और न लोकसभा ने इस कार्य पर कोई ऐतराज या सन्देह किया।

इस कार्य के लिए कोई सवैधानिक सशोधन आवश्यक नही था और जैफर्सन को अन्त मे अपना यह विचार छोड देना पडा कि इसके लिए सविधान मे कोई सशोधन किया जाय। इस प्रकार सयुक्त राज्य अमेरिका के प्रदेश मे एक सौ चालीस प्रतिशत की वृद्धि हो गई, जहाँ पर आनेवाली पीढियो ने तरह-तरह के उद्योग-धन्धे आदि स्थापित किए।

मुनरो और लिविंग्स्टन के साथ जैफर्सन के लुसियाना प्रदेश खरीदने के कार्य को सभी ने सर्वथा उचित ठहराया। सबने अपनी ओर से देश के लिए एक बहुत ही अच्छा कार्य किया था और यह कार्य उससे कही अधिक अच्छा सिद्ध हुआ जितनी कि आरम्भ मे आशा की गई थी। किन्तु नैपोलियन के लिए यह कार्य शोभनीय नही था, क्योकि मिसीसिपी के पश्चिम के विस्तृत प्रदेश को बेचकर उसने अपने ही सविधान का उल्लघन किया था। और इसके साथ ही उसने स्पेन को दिये गए उस वचन को भी तोड दिया था कि वह लुसियाना किसी तीसरी शक्ति को नही सौपेगा या बेचेगा।

लुसियाना की खरीद

किन्तु अमेरिका का इससे कोई सम्बन्ध नही था। यह तो नैपोलियन के अपने हृदय की बात थी और नैपोलियन नैतिक आदर्शों से पहले ही छुटकारा पा चुका था।

स्पेन के गवर्नर से फ्रास के गवर्नर ने जब इस प्रदेश को अपने हाथ मे लिया, उसके सत्रह दिन बाद ही अमेरिका ने उस पर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया। उस विस्तृत प्रदेश मे यूरोप के निवासी केवल फ्रासीसी और स्पेनिश ही थे। इन लोगो को लोकतन्त्र की शासन-पद्धति का कुछ भी अनुभव नही था। श्री जैफर्सन ने इन प्रदेशो पर कुछ समय के लिए नामजद किए गए अधिकारियो के द्वारा शासन व्यवस्था चलाने का निश्चय किया, ताकि समय आने पर जब भी सम्भव हो इस प्रदेश का एक नया राज्य बना दिया जाय।

नये साम्राज्य का उदय सदा से साहसी पुरुषो को अपनी ओर आकृष्ट करता रहा है। तदनुसार वे सभी लोग, जो अपने को उन्नत बनाना चाहते थे, प्राय पश्चिम की ओर जाकर अपनी भाग्य परीक्षा करने लगे। इसका कारण चाहे कुछ ही रहा हो, भले ही वे अपने घर पर असफल हो गए हो, चाहे उनके उन्नति के अवसर वहाँ सीमित रहे हो, और चाहे यह बात ही क्यो न रही हो कि उनके पडौसी उनके साथ अच्छा बर्ताव नही करते थे। नवयुवक अमेरिकनो को पश्चिम ने अपनी ओर आने का साहस करने के लिए जो चुनौती दी थी, उसमे भले और बुरे दोनो प्रकार के परिणामो की सम्भावनाएँ निहित होना स्वाभाविक था।

लेविस और क्लार्क का लुसियाना प्रदेश और उससे भी

आगे प्रशान्त महासागर के तट तक का अभियान इसका एक बहुत बडा शुभ परिणाम था। इस अभियान को अमेरिकन उपाख्यान का महाकाव्य कहा जाता है। इस साहसिक अभियान ने, जिसका श्री जैफर्सन सदा ही स्वप्न देखा करते थे, एटलाटिक और प्रशान्त महासागरो मे सर्वप्रथम सम्बन्ध स्थापित कर दिया और इससे सब लोगो के हृदय मे यह भाव जागृत हो गया कि अमेरिका एक और अखड महाद्वीप है।

युवक मेरीवेथर लेविस, जो बुद्धिमान् और प्रतिभाशाली व्यक्ति समझा जाता था, वाशिंगटन मे पहुँचते ही वहाँ सर्वप्रिय और आकर्षक व्यक्तियो मे गिना जाने लगा। वर्जीनिया के चार्लोट्सविले नामक कस्बे का निवासी यह युवक छब्बीस वर्ष की अवस्था मे ही राष्ट्रपति का प्राइवेट सेक्रेटरी बन गया।

जिस अवस्था मे श्री जैफर्सन ने मैडिसन और मुनरो को अपना प्रिय मित्र बनाया था ठीक उतनी ही अवस्था (छब्बीस वर्ष) के युवक लेविस को भी वह चाहने लगे थे, क्योकि उन्होने उसके कुछ विशेष गुणो को भली-भाँति पहचान लिया था। उन वर्षों मे जब लेविस उनका प्राइवेट सेक्रेटरी था, राष्ट्रपति ने अज्ञात प्रदेशो की खोज के बारे मे उसे बहुत से निर्देश दिए और समझाया कि घने जगलो मे अभियान करते समय क्या-क्या वस्तुएँ ढूँढ निकालनी होगी, किन वस्तुओ पर विशेष ध्यान देना होगा और वहाँ से क्या कुछ अपने साथ लाना होगा। जैफर्सन की प्राकृतिक इतिहास और कृषि के प्रति अभिरुचि इस समय भी यथापूर्व बनी हुई थी। वह यह जानना चाहते थे कि इस नए प्रदेश की भूमि कैसी है और जलवायु किस प्रकार का। वहाँ की

चट्टाने, पशु-पक्षी और खेती-बाडी किस प्रकार की है। वहाँ की नदियाँ किस दिशा मे और किस ढग से बहती हैं। उधर झरने कितने हैं तथा वहाँ के पर्वतो और मैदानो की व्यवस्था क्या है। लुसियाना के खरीदने से पहले ही वह मेरीवेथर लेविस को इन सब बातो के लिए प्रशिक्षण देने लग पडे थे, क्योकि पश्चिम का यह प्रदेश सदा से उनके ध्यान मे रहा था। वह समझते थे कि पश्चिम का यह नया प्रदेश, जिस पर अभी मनुष्यो के पाँव नही पडे हैं, अमेरिका के भविष्य निर्माण मे महत्त्वपूर्ण योग देगा।

पश्चिम के बहुत बडे भाग के खरीद लिए जाने से अभियान की योजना को क्रियात्मक रूप देना आवश्यक हो गया। इसके लिए जैफर्सन ने स्वय इतना श्रम किया और उसकी रूपरेखाएँ इतने विस्तार से तैयार की मानो इस अभियान मे वह स्वय सम्मिलित हो रहे हो ताकि अभियान दल का नेतृत्व कर सके। वास्तव मे उन्होने अपने युवक सेक्रेटरी को अपना प्रतिनिधि या अपना स्थानापन्न बनाने का प्रयत्न किया था, और इस कार्य मे वह इतने सलग्न हो गए कि मानो स्वय जाने पर वह जो कुछ कर पाते वह सब उनका सेक्रेटरी भी कर सके इसके लिए उसे उन्होने पूरी तरह से तैयार कर दिया। लेविस ने इस अभियान में दल का नेतृत्व करने के लिए अपने साथ लेफ्टिनेट विलियम क्लार्क का नाम प्रस्तुत किया और जैफर्सन ने उसे स्वीकार कर लिया। विलियम क्लार्क लेविस का उस समय मित्र बन गया था, जब वे दोनो सेना मे थे। सन् 1803 के अन्तिम भाग मे लुसिग्राना के खरीदे जाने के कुछ समय बाद दोनो युवक सेंट लुई की ओर चल पडे। उन्होने अपने अभियान का प्रबन्ध करने और अपने साथ

दूसरे सदस्यो को लेने के लिए सर्दियो के दिन वही बिताए। उनकी कहानी अमेरिकन अन्वेषको की उन रोमाटिक कहानियो मे से एक है, जो चतुरता और साहस का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए पीढी-दर-पीढी पढी-पढाई और सुनी-सुनाई जाती रही है। सन् 1804 की 14 मई को वे मिसौरी नदी की ओर चढने के लिए चल पडे। उन्होने वास्तव मे एक बडे कठिन मार्ग की यात्रा आरम्भ कर दी और 2 नवम्बर तक वे आजकल के उत्तरी डकोटा के बिस्मार्क नामक स्थान पर जा पहुँचे। यहाँ पर उन्होने मैण्डन इडियन लोगो के बीच कैंप लगाकर सर्दियो के दिन बिताए। अप्रैल मे वे फिर चल पडे और मिस्सौरी की ओर वहाँ तक चलते गए, जहाँ वह तीन धाराओ मे बँट गई। तब वे इन तीनो मे से एक धारा के साथ चल पडे और आजकल के मोन्टाना तक जा पहुँचे। यहाँ उन्होने नदी अन्वेषण छोड दिया और कुछ घोडो के साथ शोशोने के इडियनो को अपना पथ-प्रदर्शक बनाकर पर्वत मालाओ की ओर अग्रसर हो गए। रॉकीज को पार करने के बाद उन्हे कोलम्बिया नदी की एक सहायक नदी मिली और वे उस नदी के साथ-साथ चलते-चलते प्रशान्त सागर में कोलम्बिया के मुहाने तक जा पहुँचे। वे लोग 15 नवम्बर को वहाँ पहुँचे थे। तीसरी शीत ऋतु उन्होने वही बिताई। वापसी मे उन्होने यैलोस्टोन पर अभियान किया। सन् 1806 की 23 सितम्बर को वे वापस सैट लुई पहुँच गए।

इस साहसपूर्ण और सर्वथा सफल अभियान ने अमेरिका के प्रत्येक व्यक्ति की कल्पना को उत्तेजित और जागृत कर दिया। वे लोग सोचने लगे कि यदि मुट्ठीभर परिश्रमी यात्री इस देश

की यात्रा कर सकते हैं, तो दूसरे सभी लोग भी वहाँ जा सकते हैं। पश्चिम की सीमा बहुत दूर तक फैली हुई थी, और वहाँ की सारी भूमि और सम्पत्ति पुकार रही थी कि आओ और मुझसे लाभ उठाओ।

सैंट लुई से चलकर वापिस वहाँ तक पहुँचने मे लेविस और क्लार्क को आठ हजार मील से भी अधिक लम्बी यात्रा करनी पडी थी।

उनके इस प्रयत्न की सफलता पर श्री जैफर्सन को अत्यधिक प्रसन्नता हुई। लेविस उनके लिए रॉकी पर्वत (चट्टानो वाला पर्वत) से कुछ भूरे रग के रीछ अपने साथ ले आया था। राष्ट्रपति ने इन रीछो को ह्वाइट हाउस के उपवन मे रख दिया और इस प्रकार अपने प्रतिपक्षियो को 'जैफर्सन के रीछो का बाग' कहकर हँसी उडाने का अवसर दिया। किन्तु इस अभियान दल से जो गम्भीर और महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ सकलित की गई वे वास्तव मे अत्यन्त उपयोगी थी। उन प्रदेशो मे रहने वाले इडियनो के कबीलो, वहाँ की भूमि और जलवायु तथा उस अज्ञात देश की सामान्य अवस्था के बारे मे बहुत सी जानकारी एकत्रित कर ली गई थी। अब तक किसी ने भी प्रशान्त महासागर तक की यात्रा नही की थी। हाँ, स्पेनिश-मैक्सिको प्रदेश के अत्यन्त निचले भाग मे कुछ लोग प्रशान्त महासागर तक अवश्य पहुँच गए थे।

और अब पश्चिमी प्रदेशो के प्रकट हो जाने से दुष्ट मनुष्यो की दूषित प्रवृत्तियाँ जागृत हो उठी। इसका एक बहुत बडा प्रमाण ऑरन बर है। उसके मन मे यह दुर्भावना जागृत हुई कि

इस पश्चिमी प्रदेश को सयुक्त राज्य अमेरिका से अलग कर दे और उसे स्वतन्त्र राज्य के रूप मे प्रतिष्ठित कर दे तथा स्वय उस प्रदेश का सम्राट् बन जाय।

ऑरन बर अमेरिका के इतिहास की एक बडी पहेली है। वह प्रतिभाशाली, चतुर और चालाक व्यक्ति था। किन्तु पश्चिमी साम्राज्य स्थापन की उसकी योजना अत्यन्त मूर्खतापूर्ण मस्तिष्क की परिचायक थी। वह अपनी जवानी के दिनो मे किसी अश तक एक अच्छा देशभक्त रहा। किन्तु आज जब हम सैकडो वर्ष बाद उसके निजी पत्र पढते है, तो हमे यही ज्ञात होता है कि उसकी देशभक्ति दिखावे के सिवा और कुछ नही थी। सम्भवत बात यह हुई कि महत्त्वाकाक्षाओ ने उसको बुरी तरह से ग्रस लिया और वह अपने आपको बनाने की धुन मे ही सदा लगा रहा। जब उसने देखा कि फैडरलिस्ट या डैमोक्रेटिक किसी भी पार्टी मे रहते हुए उसकी महत्त्वाकाक्षाएँ पूरी होने वाली नही है तो उसने विश्वासघात के द्वारा अपना स्वार्थ सिद्ध करने का निश्चय कर लिया।

बर के पूर्वज विशिष्ट व्यक्ति रहे थे और उसके जीवन का आरम्भ सब प्रकार की सुविधाओ के साथ हुआ था। वह प्रिंस्टन के (जिसे उस समय न्यू जर्सी का कालिज कहते थे) दूसरे प्रधान का पुत्र और उपनिवेशो के धार्मिक प्रचारक जोनाथन एडवर्ड्स का पौत्र था। उसने क्रान्ति के दिनो मे युद्ध मे विशेष सम्मान प्राप्त किया था। उस समय उसकी अवस्था केवल बीस वर्ष की थी। वह हैमिल्टन और लफायेत्त के साथ कुछ समय तक जार्ज वाशिंगटन के अधिकारियो मे भी रहा था। उसने 21 वर्ष

की अवस्था मे एक रेजीमेंट और 22 वर्ष की अवस्था मे एक ब्रिगेड का सचालन किया था। घायल हो जाने के कारण उसने सैनिक पद छोड दिया और कानून पढकर दस वर्ष मे ही न्यूयार्क के अत्यन्त सफल युवक वकीलो मे गिना जाने लगा। उसकी सफलता और लोकप्रियता इतनी थी कि उसे राज्य की विधान सभा और बाद मे सयुक्त राज्य अमेरिका की सीनेट का सदस्य निर्वाचित होने मे कुछ भी कठिनाई नही हुई। सन् 1800 मे वह न्यूयार्क मे अपने प्रभाव के कारण टॉमस जैफर्सन के साथ डैमोक्रेटिक रिपब्लिकन दल का टिकट प्राप्त करने मे सफल हो गया और उपराष्ट्रपति बन गया।

डैमोक्रेटिक पार्टी के नेता के रूप मे श्री जैफर्सन ने उसका कभी विश्वास नही किया। सन् 1801 की फरवरी मे उत्पन्न गतिरोध के समय बर ने अपने आपको फैडरलिस्टो के हाथो बेच दिया। यद्यपि उस पार्टी के नेता ऐलेग्जैडर हैमिल्टन भी उसका वैसे ही विश्वास नही करते थे जैसे कि जैफर्सन। अपने उपराष्ट्रपति पद का कार्यकाल समाप्त होने से पूर्व ही ऑरन बर की ऐसी विचित्र स्थिति हो गई थी कि दोनो पार्टियो मे से कोई भी यह नही कह सकती थी कि वह किसका विश्वासपात्र और पक्का अनुयायी है।

उसके जो पत्र आज हमे उपलब्ध हो रहे है उनके आधार पर हम यही निर्णय कर सकते है कि उस व्यक्ति मे नैतिकता का सर्वथा अभाव था। वह कर्ज के भार से इतना दब गया था कि दिवालिया होने ही वाला था। उसकी यह दशा इसलिए नही हुई थी कि वह जैफर्सन और प्रारम्भिक वर्षों मे हैमिल्टन के समान

धन की अपेक्षा दूसरे कार्यों को अधिक महत्त्व देता था, अपितु केवल इसलिए हुई थी कि वह जान-बूझकर दूसरो को ठगना चाहता था।

अपने शासनकाल के अन्तिम दिनो मे जैफर्सन के लिए बर को उपराष्ट्रपति बनाए रखना असम्भव हो गया था। फलत उसे उपराष्ट्रपति के पद से ही पृथक् नही कर दिया अपितु डैमोक्रेटिक पार्टी का सदस्य भी नही रहने दिया गया। तब उसने न्यूयार्क राज्य के गवर्नर पद पर निर्वाचित होने के लिए बडा भारी प्रयत्न आरम्भ कर दिया। वह फैडरलिस्ट के रूप मे खडा न होकर स्वतन्त्र रूप से इस पद के लिए खडा हुआ था। उसे यह विश्वास था कि जैफर्सन के विरोधी क्रुद्ध फैडरलिस्ट उसका समर्थन करेंगे।

चार वर्ष पहले जिस प्रकार हैमिल्टन क्रुद्ध हो गया था, अब की बार फिर वह क्रुद्ध हो उठा। हैमिल्टन जानता था कि बर का किसी भी प्रकार विश्वास नही किया जा सकता। और यह बात बहुत बुरी होती कि फैडरलिस्ट पार्टी, जिसे हैमिल्टन ने स्वय जन्म दिया था, इस व्यक्ति का न्यूयार्क के गवर्नर पद के लिए समर्थन करे। एक ओर से हैमिल्टन के और दूसरी ओर से जैफर्सन के प्रभाव ने परिणाम का पहले ही निश्चय कर दिया था। बर बुरी तरह पराजित हुआ। एक हारे हुए जुआरी की भाँति हताश और उद्विग्न आॅरन बर ने अपने घाव भरने के लिए यह निश्चय किया कि हैमिल्टन ने उसके सम्मान और प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचाया है, इसलिए मृत्युपर्यन्त उससे लडते रहना चाहिए। बर ने हैमिल्टन को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकार दिया।

हैमिल्टन का प्रिय पुत्र फिलिप चार वर्ष पहले द्वन्द्व युद्ध मे मारा जा चुका था और इसका हैमिल्टन को अत्यधिक दुख था। शायद इस या किसी अन्य कारणो से ऐसा लगता है कि हैमिल्टन को बर के साथ द्वन्द्व युद्ध मे मारे जाने का भय हो गया था। द्वन्द्व युद्ध से पहले के दिनो मे हैमिल्टन बिलकुल शान्त और प्रसन्न था। बर अपने पिस्तौल के निशाने के अभ्यास मे व्यस्त रहता था। वे दोनो नदी पार कर न्यू जर्सी के वीहाकेन नामक द्वन्द्व युद्ध के प्रसिद्ध मैदान मे जा पहुँचे और अपने-अपने स्थान पर डट गए। स्मरण रहे कि हैमिल्टन का पुत्र भी इसी मैदान के पास मारा गया था।

वे दोनो दस कदम के फासले पर खडे थे। हैमिल्टन ने गोली चलाने का सकेत किया और बर की पहली गोली ने ही उसके प्राण ले लिए। हैमिल्टन एक भी गोली न चला पाया। यह सन् 1804 की 11 जुलाई का दिन था।

उन दिनो द्वन्द्व युद्ध गैरकानूनी नही था। और इसीलिए बर को घातक करार नही दिया गया, किन्तु सयुक्त राज्य अमेरिका मे उसका भविष्य सदा के लिए समाप्त हो गया।

अब पश्चिम के प्रदेश मे किसी न किसी तरह का नया राज्य, उपनिवेश या साम्राज्य स्थापित करने के लिए उसका प्रयत्न आरम्भ हो गया। उसने इस विचार से कि वह अपना एक पृथक राज्य स्थापित कर ले लुसियाना मे कुछ ज़मीन खरीद ली थी। किन्तु पश्चिम की ओर जाने के पूर्व वह श्री जैफर्सन के परम शत्रु ब्रिटिश राजदूत मिस्टर मेरी और स्पेन के राजदूत युरुजो से मिला। स्पेन के 'रायल आर्चिव्स' मे इस देशद्रोह का प्रत्यक्ष प्रमाण विद्यमान है। यह प्रमाण एक शताब्दी तक प्रकाश मे नही

आ पाया था। इसमे कुछ सन्देह नही कि बर सयुक्त राज्य से पश्चिम का कुछ भाग छीन लेना चाहता था और इसके लिए इग्लैंड या स्पेन अथवा दोनो ही देशो से धन और सहायता प्राप्त करना चाहता था।

वह पश्चिम की ओर गया और सौभाग्य या दुर्भाग्य से उसे आयरलैंड का ब्लैनरहैसेट नामक एक ऐसा पागल व्यक्ति मिल गया, जिसके पास कुछ पैसा भी था। वह ओहियो नदी के एक द्वीप मे रहता था। वह बर की बातचीत से अत्यधिक प्रभावित हो गया और एक नये साम्राज्य के स्वप्न—सेनाएँ बनाने और सैनिको को भर्ती करने के कार्य मे उसे प्रवृत्त कर दिया।

बर मिसीसिपी तक जा पहुँचा। वहाँ पर उसने अपने षड्यन्त्र के अनेक उतार-चढावो के पश्चात् अपने आपको इतना महान् मान लिया कि वाशिंगटन की सरकार को उसकी गिरफ्तारी का आदेश देना पडा। उसे वापस रिचमड लाया गया और देशद्रोह के अपराध मे उस पर मुकदमा चलाया गया। इस मुकदमे मे वह बरी हो गया, क्योकि नौकाओ का निर्माण, सैनिको की भर्ती और उन्हे शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित करने का देशद्रोह का वह काम ब्लैनरहैसेट द्वीप मे बर की अनुपस्थिति मे सम्पन्न हुआ था।

ओहियो आने पर उस पर एक और मुकदमा चलाया गया किन्तु वह जमानत पर छूट गया और यूरोप की ओर भाग गया। जब वह अमेरिका वापस लौटा तो उसकी कठिनाइयो की कोई सीमा ही न रही। किन्तु उसकी भयकर महत्वाकाक्षा और महान् पद से उसका दुखद पतन सदा के लिए अमेरिका की कहानी का

एक भाग बन गया।

ऐलेग्जैडर हेमिल्टन की मृत्यु से फैडरलिस्ट पार्टी की भी मृत्यु हो गई। वह कुछ बडे-बूढे धनिको विशेषत न्यू इग्लेड के उन सम्पन्न लोगो के बीच मे विभक्त हो गई, जिनका समर्थन करने वाला कोई भी मतदाता न था और जिनका सारा प्रयत्न अमेरिका की एकता को समाप्त करने मे लग गया था। अमेरिका के इतिहास मे पृथक्तावादी पहले व्यक्ति वे हे जिन्होने सयुक्त राज्य मे एक पृथक् राज्य निर्माण करना चाहा था। ये लोग 'न्यू इग्लेड फैडरलिस्ट' कहे जाते थे। हैमिल्टन का इन लोगो से कोई वास्ता न था और उसने अपनी मृत्यु से पूर्व यह बात स्पष्ट भी कर दी थी। जैफर्सन ने अत्यधिक बहुमत प्राप्त कर उनकी सत्ता को समाप्त कर दिया और इस प्रकार अमेरिका के इतिहास से उनका नामोनिशान मिटा दिया।

इसमे कुछ सन्देह नही कि जैफसन प्रारम्भ से ही आॅरन बर से घृणा करते थे और उसका कभी विश्वास नही करते थे। फिर भी उन्होने न्यायालय के कार्य मे बाधा डाले बिना इस बात का पूरा प्रयत्न किया कि वह अपने देशद्रोह के अपराध को स्वीकार कर ले।

जैफर्सन का हैमिल्टन के बारे मे और हेमिल्टन का जैफर्सन के बारे मे क्या विचार था इस सम्बन्ध मे निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता। वे एक दूसरे के शत्रु थे, यह सही है उन्होने अमेरिका के राजनैतिक दलो का निर्माण किया था, जैफर्सन लोकतन्त्र के पक्षपाती थे और हैमिल्टन समृद्ध लोगो के विशेषाधिकारो के समर्थक। वे वर्षो तक एक दूसरे से लडते रहे और

उन्होने इस लडाई मे प्रत्येक सम्भव शस्त्र का पूरी तरह उपयोग किया था। दोनो ने अपनी विजय के क्षण या वर्ष देखे थे। किन्तु जब कभी कोई निर्णायक घडी आई, तो हैमिल्टन बदल गया और जैफर्सन का आदर और विश्वास करने लगा। और इसी प्रकार जैफर्सन भी हैमिल्टन का आदर और सत्कार करने लगे। ये दोनो महान् विरोधी प्रतिभाएँ, जिनके द्वारा अमेरिकन शासन तन्त्र का ढाँचा खडा हुआ, एक दूसरे की महानता को स्वीकार करते थे।

हैमिल्टन की मृत्यु के कई वर्ष बाद जब श्री जैफर्सन सार्वजनिक कार्यों से अवकाश ग्रहण कर मोण्टेसिलो मे रह रहे थे, उस समय एक विदेशी यह देखकर चकित रह गया कि भवन के प्रवेशद्वार के अन्दर के हॉल मे इटालियन कलाकारो के द्वारा निर्मित दो आवक्ष मूर्तियाँ दीवार के साथ एक दूसरे के सामने रखी है। उनमे से एक हैमिल्टन की थी और दूसरी जैफर्सन की अपनी। उस विदेशी अतिथि ने जब आश्चर्य प्रकट किया तो वयोवृद्ध जैफर्सन ने मुसकराते हुए कहा, "हाँ तुम देख रहे हो, मरणानन्तर भी वैसे ही प्रतिपक्षी हैं, जैसे कि जीवन मे।"

मानव इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण और सबसे बडी घटनाओ के समान लुसियाना के खरीद लेने के भी इतने अधिक शुभ और अशुभ परिणाम हुए कि जिनकी गिनती करना भी कठिन है। इसने साहसी और सशक्त युवको को ललकारा, यह क्षितिज की ओर अग्रसर होनेवाले युवको का प्रिय बन गया और उन कर्मठ युवको का एक सुखद स्वप्न, जिनके हाथो से अमेरिका के भविष्यनिर्माण का महान् कार्य किया जाना था। इसके साथ ही इसने लोभी,

लालची ओर आदर्शहीन व्यक्तियो की महत्वाकाक्षा का भी खूब उकसाया। खून और परिश्रम, न्याय ओर अन्याय, प्रेरणा और प्रोत्साहन, विजय और पराजय जैसी बहुत सी बात इससे प्रकट हुई थी। अगले सो वष के लिए देश का इतिहास इन्ही बातो को लेकर अधिकतर बनता रहा कि पश्चिमी प्रदेश पर किस प्रकार विजय प्राप्त की गई, यहाँ दास-प्रथा रहे या न रहे, क्या यह सयुक्त राज्य के शासन मे समान रूप से भागीदार बने या इसे अपना शासन अपनी इच्छानुसार करने दिया जाय। श्री जैफ-र्सन इन सब बातो की कल्पना बहुत पहले ही कर चुके थे। यह वास्तव मे मुख्यतया उन्ही का कार्य था। कम से कम दूसरे सब लोगो से इस कार्य मे उनका सबसे बडा हाथ था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अगले सौ-डेढ सौ वर्षो तक देश के इतिहास का स्वरूप सबसे अधिक उन्ही के द्वारा निर्धारित हुआ था। हैमिल्टन और जैफर्सन के सघर्ष, मानव अधिकार विधेयक (सविधान मे पहले दस सशोधन), लेविस और क्लार्क के अभियान और ऑरन बर के षड्यन्त्र (जिन्हे एक ही सिक्के या घटना के दो पक्ष कहना चाहिए) जैसे कार्यो और घटनाओ से भावी अमेरिकन इतिहास की रूपरेखा प्राय निश्चित हो गई थी। उसी समय से अमेरिका का रुख पश्चिम की ओर हो गया, यद्यपि इस कारण किसी लोकतन्त्र विरोधी अथवा वर्गवादी सरकार के अस्तित्व में आने की आशका न थी।

जैफर्सन के द्वितीय शासनकाल का अन्तिम भाग इग्लैड और फ्रास के सघर्ष के कारण कटु हो गया था। जैफर्सन की अपनी सहानुभूति सदा फ्रास के साथ थी। यहाँ तक कि फ्रास के क्राति-

कारियो की अतिशयता के कारण, जिस समय उनसे पृथक् रहना आवश्यक हो गया था, उस समय भी उनकी सहानुभूति फ्रास के साथ ही बनी रही। उन्हे यह बात भली-भॉति याद थी कि अमेरिका की जनता को क्रान्ति के समय फ्रास ने कैसी महत्वपूर्ण सहायता दी थी। बहुत से युवक इस बात को समझ नही पाते थे कि यदि फ्रास समय पर सहायता न देता तो अग्रेज़ो की जल और थल सेना को हराना कितना कठिन या असम्भव हो जाता। इसके अतिरिक्त जैफर्सन का दृढ विचार था कि फ्रास मे क्रान्तिकारी सुधार होने ही चाहिएँ। जैफर्सन की यह सहानुभूति नेपोलियन बोनापार्ट जैसे साहसी और शोषक तथा बिना अधिकार के कार्यों को करनेवाले शासक के समय मे भी बनी रही।

किन्तु जब सयुक्त राज्य अमेरिका स्वय खतरे मे पड गया, तो जैफर्सन की फ्रास के साथ यह सहानुभूति सर्वथा समाप्त हो गई। इस प्रकार जब लुसियाना पर फ्रासीसी अधिकार का भय उत्पन्न हो गया तो उन्होने लिविंग्स्टन को लिखा था कि इस प्रकार की घटनाएँ अमेरिका को इग्लैड के हाथो में डाल देगी।

जिस दिन फ्रास ने न्यू ओरलियन्स पर अधिकार किया, जैफर्सन ने ठीक उसी दिन लिखा था कि यह आदेश उसे सदा के लिए एक ऐसे निम्नतम स्तर पर ले आएगा जिससे इन दोनो राष्ट्रो की एकता पर ताला पड जायेगा, जो परस्पर सहयोगी रहते हुए सारे समुद्र पर अपना पूर्णाधिकार जमाए रख सकते हैं और उसी क्षण हमे अग्रेज और उनके जहाजी बेडे के साथ गठबन्धन करना पड जायेगा।

जो जैफर्सन कई दशाब्दियो तक अग्रेज़ो की महत्वाकाक्षा

विशेषत समुद्र पर उनके राज्य के विरोधी के रूप मे विख्यात रहे, वह ही उस समय मिसीसिपी नदी की स्वतन्त्रता की सुरक्षा के लिए पुराने शत्रु के साथ किसी न किसी प्रकार के विशेष और दृढ मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा मे सोचने लग गए थे।

उन दिनो अग्रेज यह समझते थे कि खुले समुद्रो मे किसी भी जहाज को रोक लेने, उसकी तलाशी लेने और किसी भी व्यक्ति या वस्तु को रोक रखने का उन्हे अधिकार है। उस समय ऐसी कोई स्वीकृत नियम पद्धति न थी, जिससे यह स्पष्ट हो सकता कि यह काय क्यो और कैसे किया जाना चाहिए। यह केवल इसलिए होता था कि अग्रेज लहरो के शासक थे। जैफर्सन ने अपने आठ वर्ष के राष्ट्रपतित्व का अधिकतर भाग अग्रेजो के इस उच्छृङ्खल व्यवहार का विरोध करने मे लगाया। इग्लैड और फ्रास के युद्ध के समय मे अमेरिका के व्यापार व्यवसाय मे अग्रेजो का यह हस्तक्षेप बडे जोर पर था। कोई भी अमेरिकन जहाज समुद्र मे तब तक आगे बढने का साहस नही कर पाता था, जब तक कि वह यह प्रमाणित करने के योग्य न हो जाय कि बाहर जानेवाली वस्तुओ मे से कोई भी फ्रास को नही भेजी जा रही है।

मैडिसन के विदेश मत्रालय मे तथा मुनरो के कई महत्त्वपूर्ण कार्यो के लिए अधिकतर यूरोप मे रहते हुए जैफर्सन ने अपने शासनकाल के अन्तिम वर्ष इग्लैड और फ्रास के युद्ध से अलग रहने और साथ ही साथ अमेरिका के जहाजो के लिए उन्मुक्त सचार और व्यापार का अधिकार प्राप्त करने के प्रयत्न मे बिताए। यह एक बडा कठिन कार्य था और इसमे उन्हे सफलता न मिल पाई। युद्ध से तो वे बच गए किन्तु समुद्रो पर स्वतन्त्रता

लगातार तीन दिन तक बर्फीले तूफान का सामना करते
हुए वह आगे बढ़ते रहे

निश्चित न हो पाई।

जैफर्सन ने अमेरिका की जहाज़रानी को बन्दरगाहो मे ही रोक रखने वाले या दूसरो के घेरनेवाले जहाज़ो को अपने यही पर घेर लेनेवाले 'घाटबन्दी (एम्बारगो) कानून' बनवाकर मामला किसी तरह निपटा दिया। इससे अग्रेजो के व्यापार को बहुत बडा धक्का लगा क्योकि उस समय भी ब्रिटिश द्वीपसमूह का सबसे अधिक व्यापार अमेरिका के राज्यो के साथ ही होता था। किन्तु इससे अमेरिका के व्यापार को भी अवश्य धक्का पहुँचा। इस प्रकार इस कानून का प्रभाव दोतरफा हुआ। इससे स्पष्ट हो जाता है कि अन्य अनेक बातो के समान सामुद्रिक स्वतत्रता के सम्बन्ध मे भी जैफर्सन की धारणाएँ अपने समय से बहुत आगे थी। वे जो बात सन् 1807-8 मे करना चाहते थे, उसको पूरी करने के लिए पूरे 120 वर्ष लग गए।

इस सब कुछ के साथ उन्होने रिपब्लिकन और डैमोक्रेटिक दृढ नीव पर गणराज्य स्थापित कर दिया। सयुक्त राज्य अमेरिका मे अब विशेषाधिकार सम्पन्न कुछ मुट्ठीभर लोगो का शासन सदा के लिए असम्भव हो गया। राष्ट्र की आर्थिक स्थिति मे निश्चित सुधार हुआ। करो मे कमी करते हुए भी राष्ट्रीय आय मे वृद्धि हुई। यह कार्य ऐसा था जिसने सभी सरकारो को आश्चर्यचकित कर दिया। इसके साथ ही राष्ट्रीय ऋण भी लगभग समाप्त हो गया था। सम्भवत उन्होने जल और थल सेना के मामले मे बहुत मितव्ययिता बरती थी, विशेषत जलसेना के मामले मे, किन्तु यह सब कुछ अपने समय के सर्वोत्तम नौसेना और थलसेना के अधिकारियो के परामर्श से ही किया गया था।

भाषण और सभाओ की स्वतन्त्रता फिर से दे दी गई। अब बिल ऑफ राइट्स (अधिकार विधेयक) अपने वास्तविक अर्थों में लागू हो गया था।

उन्होंने अपने दूसरे शासनकाल के अन्त मे राष्ट्रपति पद से निवृत्त हो जाने का निश्चय कर लिया कि वह अब तीसरी बार राष्ट्रपति पद के लिए खडे न होगे।

उनके लिए यह आवश्यक नही था। वह पैंसठ वर्ष के थे और उनकी शारीरिक और बौद्धिक क्षमता बहुत ही अच्छी थी। उनकी पार्टी ने दूसरे सब विचारो को उखाड फेका था। उनकी महत्ता से भी सारा देश परिचित था। वह तीसरी बार भी अनायास ही राष्ट्रपति चुन लिए जाते। उन्हे राष्ट्रपति पद स्वीकार करने के लिए साग्रह निवेदन किया भी गया था। किन्तु जैफर्सन को यह नही जँचता था कि कोई भी व्यक्ति लम्बी अवधि तक राष्ट्रपति बना रहे। किसी व्यक्ति का लगातार दो बार राष्ट्रपति चुना जाना उनकी दृष्टि मे काफी था।

इस बात का निश्चय करते समय उन्हे जार्ज वाशिंगटन के पुराने निर्णय से बल मिला था। इसका परिणाम यह हुआ कि संविधान ने किसी भी व्यक्ति की चाहे कितनी ही बार राष्ट्रपति पद पर नियुक्ति की स्वीकृत दे रखी थी, तो भी यह नियम सा बन गया कि कोई भी व्यक्ति अधिक से अधिक दो बार ही राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित किया जाय। अधिक से अधिक दो बार चुने जाने की यह परम्परा सन् 1940 तक नही टूटी, जबकि सारे विश्व मे व्याप्त क्षुब्ध वातावरण के दबाव के कारण फ्रेंकलिन डिलानो रूज़वैल्ट को तीसरी बार और फिर चौथी बार भी

राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित किया गया। उस समय सविधान मे सशोधन किया गया, जिसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को दो से अधिक बार राष्ट्रपति नही चुना जा सकता। इस पद के लिए दो बार की अधिकतम सीमा रिपब्लिक के लिए श्री जैफर्सन ने उचित ही ठहराई थी।

श्री जैफर्सन ह्वाइट हाउस से अपने प्रिय निवास स्थान मोण्टेसिलो चले गए। वह बहुत समय से अवकाश ग्रहण करने के लिए उत्सुक थे, पर ऐसा करने से उन्हे कई बार रोक दिया गया था। उन्होने कहा, "वह ऐसा अनुभव कर रहे है मानो प्रकृति उन्हे ज्ञान-विज्ञान की अजस्र साधना के लिए प्रेरित कर रही थी, यह मेरे समय का महापातक ही था जिससे मुझे राजनीति के प्रचड वेगवान् समुद्र मे ला फेका।"

उनके स्थान पर जेम्स मैडिसन राष्ट्रपति बननेवाले थे और जेम्स मुनरो उनके सहायक (कुछ देर बाद ही वह विदेश मत्री बन गए)। मैडिसन के राष्ट्रपति पद पर प्रतिष्ठित होने के प्रारभिक समारोह मे एक सैनिक परेड का आयोजन किया गया था, किन्तु जैफर्सन इस समय अपने घोडे पर सवार होकर ससद की ओर निकल गए और उस घोडे को उन्होने महलो के बाहर के जगले के पास जाकर बाँध दिया। इस प्रकार वह अपने विश्वस्त मित्र मैडिसन की एक सामान्य नागरिक के रूप मे प्रतीक्षा करने लगे।

जैफर्सन के सम्मान मे सारे देश मे विदाई समारोहो का आयोजन किया गया और उसमे उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई। अपना सामान बाँधने के लिए ह्वाइट हाउस मे वह कुछ दिन

और ठहर गए, तब तक नए राष्ट्रपति मैडिसन और उनकी पत्नी 'डोली' अपने ही निवास स्थान मे रहते रहे। वे वाशिंगटन से एक घोडागाडी (बग्घी) मे चले थे। किन्तु सडके इतनी खराब थी कि अधिकतर उन्हे घोडे पर सवार होकर ही अपनी यात्रा पूरी करनी पडी। विवाह के समय (अपनी सुहाग रात वाले दिन) बर्फ का जैसा भयकर तूफान पार करते हुए वे मोण्टेसिलो पहुँचे थे आज भी वैसा ही भयकर बर्फीला तूफान चल रहा था। और यह वृद्ध पुरुष निरन्तर तीन दिन तक अपने घोडे पर (बर्फीले तूफान से बचने के लिए) आगे की ओर झुकता हुआ लम्बी यात्रा पर चलता ही रहा। उसकी गाडी उसके पीछे-पीछे चली आ रही थी। मोण्टेसिलो मे पहाड के नीचे ठीक उस स्थान पर जहाँ आजकल राष्ट्रीय समाधि का प्रवेशद्वार है, जैफर्सन की पुत्री, उनके दौहित्र और कई स्वामिभक्त नीग्रो उनकी अगवानी के लिए खडे थे। वे सब लोग जैफर्सन के साथ पहाडी पर बल खाती हुई निजी सडको को पार कर घर जा पहुँचे।
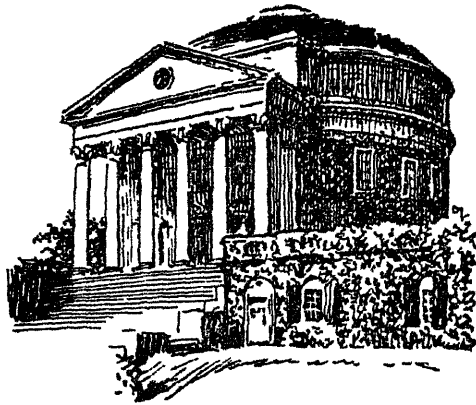
अन्त मे अपने घर

श्री जैफर्सन का अठारह वर्ष का यह अवकाशकाल एक महान् जीवन की स्वर्णिम सूर्यास्त वेला थी। बहुत से कर्मठ व्यक्ति जीवन सघर्ष से विश्राम ग्रहण करने के बाद खिन्न से रहने लगते है। वे प्राय निकम्मे हो जाते है तथा दूसरे कार्यों पर कुढने लगते हैं और बहुधा उन अनेक रोगो के शिकार बन जाते हैं, जिनका उन्होने पहले कभी अनुभव नही किया या जिनकी ओर ध्यान देने का उन्हे पहले कभी अवसर ही न मिल पाया था। हम ऐसे कई व्यक्तियो का उदाहरण दे सकते हैं जो अवकाश ग्रहण करने के बाद निष्क्रियता से अभिभूत होकर मृत्यु के मुख में चले गए।

किन्तु जैफर्सन के बारे मे ऐसा कुछ नही कहा जा सकता।

उनके अन्तिम वर्ष ऐसे अनेक कार्यो मे निरन्तर व्यस्त रहते हुए बीते, जिन्हे वह बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे। घर और खेती-बाडी की देखभाल करना, नीग्रो लोगो को बढईगिरी और लुहारगिरी का काम सिखाना, पश्चिमी जगत् के साथ निरन्तर पत्र-व्यवहार करते रहना, अपने पौत्रो की देखभाल करना और यूरोप व अमेरिका से मिलने आने वाले जनसमुदाय के प्रवाह का निरन्तर स्वागत-सत्कार करना ये कुछ ऐसे कार्य थे जिनमे वह सदा व्यस्त रहते थे।

किन्तु उन्होने अपने अन्तिम वर्षों का अधिकतर समय अपने जीवन के महानतम स्वप्न वर्जीनिया विश्वविद्यालय के निर्माण-कार्य को पूरा करने मे बिताया। जैफर्सन के हृदय मे नागरिक अधिकारो की प्राप्ति की भावना जैसी प्रबल थी, वैसी ही प्रबल भावना सर्वसाधारण की शिक्षा के लिए भी थी। वह प्रारम्भ से ही यह चाहते थे कि आज की भाँति प्रत्येक नागरिक की शिक्षा-दीक्षा का दायित्व सरकार पर हो। यह माना कि अपने इस विचार को वर्जीनिया राज्य के द्वारा स्वीकार कराने मे वह अपने समय से बहुत आगे थे, उस अठारहवी शताब्दी मे इस कार्य की पूर्ति एक प्रकार से असम्भव सी थी, फिर भी उन्होने इसके लिए अपना प्रयत्न जारी रखा। उनका एक स्वप्न यह भी था कि उनके अपने प्यारे राज्य वर्जीनिया मे एक वास्तविक विश्वविद्यालय स्थापित किया जाय और जब वह इस कार्य-सम्पादन मे समर्थ हो गए तो उन्होने विश्वविद्यालय स्थापित कर ही दिया।

वर्जीनिया विश्वविद्यालय का सम्मानित भवन उन्ही के

हाथो निर्मित हुआ है। वह कोई व्यावसायिक वास्तुकला विशारद शिल्पी न थे अत यह हो सकता है कि इस भवन के निर्माण मे इजीनियरिग की दृष्टि से या अन्य किसी प्रकार की कोई कमी रह गई हो। किन्तु वह ही पहले अमेरिकन थे जिनमे भवन-निर्माण की प्रतिभा और एक ऐसी रुचि थी जो एक वास्तविक शिल्पी की विशेषता होती है। वह विश्वविद्यालय के समान ही उसके भवनो से भी प्यार करते थे और लाल ईटो से खडे होने वाले, निरन्तर कई वर्षों तक निर्मित होते रहने वाले चार्लोट्सविले के इन शाही भवनो की देखभाल करते रहना उनके लिए सबसे बडा आनन्ददायक कार्य था।

उन्होने अपने भवन के पिछले बरामदे मे एक दूरवीक्षण-यन्त्र लगवा लिया था। वह प्रतिदिन नीचे घाटी मे बन रहे विश्व-विद्यालय भवन को उससे देखते रहते थे। यदि आपको कभी मोण्टेसिलो जाने का सुअवसर प्राप्त हो जाय तो आप उस दूर-वीक्षण यन्त्र से इस महाविद्यालय के सभा-भवनो को अपनी आँखो से देख सकते हैं।

श्री जैफर्सन वर्जीनिया विश्वविद्यालय को इतना अधिक महत्त्व देते थे कि उन्होने अपनी समाधि पर लगाए जानेवाले शिलालेख मे स्वाधीनता के घोषणापत्र, वर्जीनिया राज्य मे धार्मिक स्वाधीनता सम्बन्धी कानून और वर्जीनिया विश्वविद्यालय इन तीनो बातो का उल्लेख करना चाहा था।

फलत श्री जैफर्सन के इस समय को विश्राम का समय कहना कदाचित् युक्तियुक्त न होगा। यह अपने सामान्य अर्थों मे विश्राम का समय नही था। यह सत्य है कि वह अपने घर पर, जहाँ वह

सदा रहना चाहते थे, रह रहे थे। किन्तु सारा ससार उनके घर पर पहुँचता रहता था। उनकी गतिविधियाँ असीम थी और जब आपको कभी मोण्टेसिलो जाने का अवसर मिल जाय तो उनके घर पर विद्यमान प्रत्येक वस्तु आपको स्वत बता देगी कि उनका एक दिन भी व्यर्थ नही गया होगा।

इसके अतिरिक्त एक अन्य दृष्टि से भी वह इस समय भी उतने ही सक्षम थे जितने कि राष्ट्रीय पदो पर कार्य करते हुए, क्योकि अगले दो राष्ट्रपति मैडिसन और मुनरो (उनके आनन्द के आधार स्तम्भ) ऐसे थे जो सदा उनके विश्वासपात्र रहे। वे दोनो अन्त समय तक उनके पक्के भक्त बने रहे। वे दोनो ही आठ-आठ वर्ष तक राष्ट्रपति रहे और सोलह वर्ष की इस पूरी अवधि मे प्रत्येक महत्त्वपूर्ण विषय पर वे श्री जैफर्सन से परामर्श करते रहे। मुनरो के बाद जॉन क्विन्सी एडम्स राष्ट्रपति बने। उन्होने एक फैडरलिस्ट और जैफर्सन के प्रतिपक्षी के रूप मे कार्यक्षेत्र मे पदार्पण किया था। अब तक वह भी जैफर्सन की विचारधारा के अनुयायी हो गए थे और जैफर्सन के अनुयायी के रूप मे ही पदारूढ हुए थे। इस प्रकार जैफर्सन यद्यपि विश्राम का समय बिता रहे थे, फिर भी इन अठारह वर्षों मे राष्ट्रपतियो पर उन्ही का सबसे अधिक प्रभाव रहा।

मैडिसन और मुनरो दोनो ही मोण्टेसिलो से यथासम्भव अधिक से अधिक सम्पर्क बनाए रखते। जैफर्सन ने मुनरो के लिए भी मोण्टेसिलो के बिलकुल पडोस मे ही एक मकान बनवा दिया था। मुनरो का यह भवन ऐशलॉन के नाम से प्रसिद्ध है। ये दोनो ही महानुभाव वहॉ प्राय जाते रहते थे। जैफर्सन के भवन मे

एक कमरा अभी तक 'श्री मैडिसन कक्ष' के नाम से प्रसिद्ध है। ये दोनो व्यक्ति अपने आकार-प्रकार, आचार-व्यवहार और स्वभाव मे एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न थे, पर इस वृद्ध सज्जन जैफर्सन को समान हृदय से प्यार करते थे। वह छोटा सा समय, जब दोनो एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या रखने लगे थे, शीघ्र ही समाप्त हो गया, और यद्यपि सन् 1808 मे डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से नामजदगी के लिए दोनो ही खडे हुए थे, फिर भी विजयी मैडिसन ने अवसर आते ही मुनरो को 'विदेश मन्त्री' के रूप मे अपने मन्त्रिमण्डल मे ले लिया था। कभी-कभी जैफर्सन, मैडिसन और मुनरो की इस त्रयी अथवा क्रमिक परम्परा को वर्जीनिया राज-वश के रूप मे भी अभिहित किया जाता था। यद्यपि उनके लिए इस प्रकार का प्रयोग उनके शत्रुओ ने ही सबसे पहले किया था, पर इसमे कुछ सच्चाई भी अवश्य थी। मैडिसन और मुनरो जैफर्सन के लिए पुत्रवत थे, वैसे उनका अपना कोई पुत्र न था। श्री जैफर्सन को उन दोनो पर इतना अभिमान था मानो वे उनके पुत्र ही हो।

पर इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कुछ ऐसे लोग भी जो 'वर्जीनियँा के वश' के नही थे, जैफर्सन से बेहद प्यार करते थे। उदाहरण के लिए एडम्स का परिवार पीढी-दर-पीढी तक मोण्टेसिलो के इस वयोवृद्ध महानुभाव का भक्त बना रहा। जान एडम्स (जो एक प्रकार से झगडालू-बुड्ढे और जैफर्सन के राजनैतिक शत्रु थे) बहुत वर्षों बाद शान्त हो पाये, किन्तु उनके भी अन्तर्तम मे अपनी युवावस्था के इस मित्र के प्रति प्रबल सम्मान का भाव विद्यमान था।

बहुत से भेंटकर्ता जैफर्सन से भेंट करने मोण्टेसिलो आते

एडम्स की पत्नी एबीगैल एडम्स ने जैफर्सन की छोटी पुत्री मेरी के प्रथम बार पेरिस आने पर, अस्वस्थता की अवस्था मे उस छोटी सी बच्ची की एक बार देखभाल की थी। उन दिनो पारस्परिक कट्टर राजनैतिक शत्रुता के रहते हुए भी, यहाँ तक कि आपस की बोलचाल और पत्राचार के बन्द हो जाने पर भी मेरी (पोली) की मृत्यु के समय एबीगैल ने जैफर्सन को हार्दिक सहानुभूतिसूचक पत्र लिखा था।

और तब अनेक वर्ष बीत जाने के पश्चात् जब एडम्स और जैफर्सन दोनो ही वाशिंगटन से अपने-अपने घर चले गए थे, जान एडम्स ने बोस्टन मे अपने अनेक मित्रो के समक्ष अपने हार्दिक उद्‌गार प्रकट कर दिए।

उन्होने बडी वीरता के साथ कहा, "मैं जैफर्सन से प्यार करता हूँ, और इससे भी अधिक यह कि मैं उन्हे सदा से प्यार करता रहा हूँ।"

इसकी सूचना मोण्टेसिलो मे जैफर्सन को तत्काल मिल गई और उन्होने भी तत्क्षण बैठकर एडम्स को एक पत्र लिख दिया।

इन दोनो महान् नेताओ का यह पत्र-व्यवहार अमेरिका के राजनैतिक इतिहास मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और रोचक माना जाता है। दोनो महानुभाव अब भी राजनैतिक शत्रु थे, क्योकि दोनो ही परस्पर दो विरोधी पार्टियो से सम्बद्ध थे, फिर भी दोनो के हृदय मे एक-दूसरे के प्रति अत्यधिक सम्मान का भाव था और स्वातन्त्र्य सघर्ष की एक-सी स्मृतियो ने दोनो के लिए समान अधिकार प्रस्तुत कर दिया था।

एडम्स अधिकतर अपने पुस्तकालय मे रहते हुए जैफर्सन

की अपेक्षा पत्र-व्यवहार के लिए अधिक समय निकाल लेते थे। इसलिए कभी-कभी ऐसा भी होता था कि जैफर्सन के एक पत्र के बदले एडम्स दो-तीन पत्र लिख देते। बढती हुई आयु ने एडम्स को विशेष रूप से मृदु और मधुर बना दिया था। एक समय ऐसा भी था जब अपने पत्र का तत्काल उत्तर न पाने पर वह रुष्ट हो जाते थे। किन्तु अब वह ऐसी बातो की परवाह नही करते थे। एक बार जैफर्सन अपनी जागीर के नक्शे आदि बनाने और देख-भाल करने के लिए कई दिनो के लिए घोडे पर सवार हो घर से बाहर चले गए थे। इस समय एडम्स के तीन-चार पत्र इकट्ठे हो गए। इसके लिए जैफर्सन ने उनसे बहुत क्षमा-प्रार्थना की, किन्तु मैसेचूसेट्स के इस वृद्ध पुरुष एडम्स ने इसकी ओर कुछ भी ध्यान नही दिया। उन्होने कहा—जैफर्सन के एक पत्र के बदले मैं कितने ही पत्र लिखने को तैयार हूँ।

उन्होने एक बार कहा था कि सबसे बडी बात यह है कि एक-दूसरे को समझने के लिए हम दोनो को बहुत देर तक जीवित रहना चाहिए।

दार्शनिक विचार, प्राकृतिक इतिहास, खेतीबाडी, अमेरिकन प्रजातन्त्र के गुणावगुण, सामयिक घटनाएँ, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, प्राचीन इतिहास और ऐसे ही अनेक विषयो पर वे दोनो बडी ही शिष्टता तथा मनोविनोदपरक हास्य की पुट के साथ परस्पर विचार-विनिमय किया करते थे। यह तो स्पष्ट ही है कि नई दुनिया के इन दोनो बडो के हृदय मे एक दूसरे के प्रति बहुत गहरी और अत्युच्च आदर की भावना थी। अपने सार्वजनिक जीवन मे एडम्स ऐसे व्यक्ति नही लगते थे कि जिनके प्रति कोई

उत्कट प्रेम प्रदर्शित कर सके। किन्तु अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् वह एक बडी प्रतिभा के धनी शिष्ट वीर और बुद्धिमान् वृद्ध सज्जन के रूप मे बदल गए।

जैफर्सन की स्वर्णिम सूर्यास्त वेला मे एक काली छाया भी पड गई थी। और यह काली छाया थी धनाभाव की। वह मितव्ययी तो कभी नही रहे। पेरिस मे राजदूत रहते समय वह अपने आवास, विशेषत भोजन और शराब पर अमेरिकन ससद से प्राप्त धन से कही अधिक खर्च कर देते थे। अपने आठ वर्ष के ह्वाइट हाउस के निवासकाल मे उन्होने वाह्याडबर और दिखावटी रीति-रिवाजो को भले ही कम कर दिया हो, किन्तु उनके भोजन की मेज सबसे अधिक सुसज्जित रहती थी। भोज्य और पेय पदार्थो की प्रचुरता और उनके आकर्षक सम्भाषण के लोभ से खिचे हुए उनके कट्टर विरोधी भी उनके साथ भोजन करने मे बडी प्रसन्नता अनुभव करते थे।

अब मोण्टेसिलो मे वह अठारह वर्ष तक अपने घर का द्वार सबके लिए खोले रहे। वहाँ आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत किया जाता और उसे घर मे कभी किसी चीज की कमी नही प्रतीत होती। इसका अर्थ यह है कि भोजन और फ्राम की उत्कृष्ट शराब का भण्डार दिन-रात खुला रहता था। उनके यहाँ बहुत से अतिथि अपने घोडे, घोडागाडियाँ और दो दो, तीन-तीन नौकरो के साथ आ डटते और दो-दो, तीन-तीन महीने तक वही जमे रहते। जैफर्सन अपने किसी पुराने मित्र या नए अतिथि को पाकर बहुत प्रसन्न होते थे। ऐसी बातो और रुपए के मामले मे बरती गई लापरवाही ने जैफर्सन की किसी समय की बहुत बडी

आमदनी पर एक प्रबल आक्रमण कर दिया। उन्होने अपने मकान पर काफी धन खर्च किया था। और कोई नही जानता कि वर्जीनिया विश्वविद्यालय तथा उदारता के दूसरे कार्यों मे उन्होने कितना दे दिया था। परिणाम यह हुआ कि उन्होने अपने राजसी ठाठ-बाट को बनाए रखने के लिए अपनी जमीन बेचनी शुरू कर दी।

मोण्टेसिलो जाने पर आपको विदित हो जायगा कि वहाँ हिसाब-किताब कितनी सावधानी से रखा जाता था। सूअर के माँस के बेचे गए प्रत्येक टुकडे और तम्बाकू के एक-एक पौड का सही-सही हिसाब रखा जाता था। इस हिसाब-किताब को देखकर ऐसा लगता है कि इस सम्पत्ति की व्यवस्था मानो बडी मितव्ययिता और सावधानी से की जाती रही होगी।

इतना सब कुछ होने पर भी सबके लिए सदा खुले रहने वाले भवन, भवन निर्माण, वन-उपवन, पेड-पौधे, घोडे और घरेलू काम-धन्धो पर होनेवाले अपरिमित व्यय ने श्री जैफर्सन पर इतना भार डाल दिया कि वे दिवालिया हो गए। उनके जीवन के अन्तिम दिनो मे (उनकी मृत्यु से दो वर्ष पूर्व) सारा देश यह सुनकर स्तब्ध रह गया कि उस वयोवृद्ध महानुभाव की सारी सम्पत्ति और समृद्धि समाप्त हो चुकी है। यह भी सुना गया कि उन्हे अपना ऋण उतारने के लिए मोण्टेसिलो भी बेचना पड रहा है। इस पर देशभक्तो ने मिलकर उनके लिए चन्दे मे 20000 डालर एकत्रित कर लिए और उन्हे भेट कर दिए ताकि वह अपने घर मे ही रह सके। किन्तु उनके स्वर्ग सिधारते ही कर्जदारो का भुगतान करने के लिए वह मकान तथा बहुमूल्य फर्नीचर और

दूसरी सब वस्तुएँ बेच डाली गई।

यही स्थिति उनके दासो की भी हुई। एक समय उनके पास डेढ सौ दास थे। उन्होने मानव जाति की बिक्री को कभी उचित नही ठहराया। उन्होने अपनी अन्तिम वसीयत के द्वारा बहुत से दासो को स्वतन्त्र कर दिया। इसमे कुछ सन्देह नही कि वह सभी को मुक्त कर देना चाहते थे, किन्तु अपना ऋण चुकाने के विचार से वह ऐसा नही कर पाए।

इतना सब कुछ होने पर भी यह आर्थिक सकट उनकी उदाराशयता तथा निर्मल प्रकृति मे कुछ भी व्याघात न कर सका। यद्यपि राष्ट्रपति पद पर रहते हुए उन्होने अत्यधिक मितव्ययिता से काम लिया था, तो भी उन्होने अपनी सम्पत्ति की ओर कभी कोई विशेष ध्यान नही दिया। वस्तुत प्रजातन्त्र के पक्के भक्त और विश्वासी श्री जैफर्सन स्वभाव और व्यवहार मे स्वय एक बहुत बड़े रईस थे। वह रईसो के समान ही सोचते-विचारते, अनुभव करते और बोलते थे। वह जन्मभर यही कल्पना करते रहे कि उनके जीवनभर खाने-पीने के लिए उनके पास खूब है, इसलिए उन्होने ऐसी बातो के लिए कभी कोई चिन्ता ही न की, और इसीलिए यह उचित ही था कि उनका भवन सब आगन्तुको के लिए सदा खुला रहे।

वह व्यक्तिगत रूप मे स्वय ही लोकतन्त्रीय थे। ह्वाइट हाउस मे रहते समय और उसके आगे-पीछे भी वह सबके साथ एक-सा ही व्यवहार करते थे। वह स्वय कहते थे कि उन्हे लोगो मे उनकी पदवियो के कारण कोई अन्तर नही दिखाई देता, उनके लिए राजा और रक सब समान थे। उन्होने इसके कई

उदाहरण प्रस्तुत किए थे। किन्तु दूसरी ओर वह अपनी मेज़ पर फ्रास की बहुमूल्य और सर्वश्रेष्ठ शराब के सिवा कोई साधारण शराब रखने का स्वप्न मे भी विचार नही कर सकते थे।

मोण्टेसिलो मे लफायेत्त-जैफ़र्सन भेंट

उनके अन्त समय के निकट मार्क्विस द् लफायेत्त अमेरिका

आए और उन्होने मोण्टेसिलो की तीर्थयात्रा भी की। इस समय जैफर्सन 83 वर्ष के थे और लफायेत्त उनसे 13 वर्ष छोटे। बूढे जैफर्सन का यह फ्रासीसी मित्र जब मोण्टेसिलो के पिछले बरामदे मे लडखडाता हुआ आ रहा था, वह सदा की भॉति इस समय भी दूरवीक्षण यन्त्र से विश्वविद्यालय को देख रहे थे। वह मुडे और लफायेत्त का स्वागत करने के लिए लडखडाते कदमो से आगे बढे। दोनो ने एक-दूसरे को आलिगनपाश मे जकड कर प्रेमाश्रुओ से तर कर दिया। दोनो ही इतन बूढे हो चुके थे कि पिछली स्मृतियो के सिवा किसी अन्य विषय पर कोई विशेष बात न कर पाए।

किन्तु सबसे अधिक विचित्र सम्बन्ध जॉन एडम्स और जैफर्सन का था। महान् दिनो की स्मृति के रूप मे वे दोनो ही अभी तक बचे हुए थे, बाकी सब लोग विदा हो चुके थे। वे दोनो पारस्परिक पत्र-व्यवहार के द्वारा एक-दूसरे के बहुत निकट आ गए थे।

और जब वह समय आया कि सचमुच पास मे आकर भी एक-दूसरे से मिल सके, ठीक उसी दिन दोनो ही इस ससार से सदा के लिए विदा हो गए। वे दोनो सन् 1826 की 4 जुलाई को स्वर्ग सिधार गए। स्वाधीनता के घोषणापत्र की पचासवी वर्षगॉठ मनाई जा रही थी। स्वाधीनता का घोषणापत्र लिखा भले ही जैफर्सन ने हो किन्तु कुछ अशो मे यह उन दोनो के मस्तिष्को की उपज था।

एडम्स के अन्तिम शब्द थे 'टॉमस जैफर्सन अभी जीवित है।'

अमेरिका पर श्री जैफर्सन का कितना उपकार है इसका सही-सही मूल्याकन नही किया जा सकता। अमेरिका श्रीजैफर्सन का स्वाधीनता के घोषणापत्र, अधिकारो के विधेयक, शासन के प्रजातन्त्रीकरण और सब लोगो की समान रूप से स्वतन्त्रता, डालर, धार्मिक स्वाधीनता और दासो को मुक्त करने के महान् आदर्श के लिए ही ऋणी नही है, किन्तु अमेरिकन प्रदेश के अत्यधिक विस्तार और अमेरिका के पश्चिमी भाग के लिए भी वह सदा उनका ऋणी रहेगा। यह कहना बडा कठिन है कि किसी अन्य अमेरिकन ने यहाँ तक कि अब्राहम लिकन ने भी अपने देश और जनता के लिए उनसे अधिक काम किया है।

और अब्राहम लिंकन ने भी भले ही वह उस विरोधी दल के नेता थे जिसका प्रवर्तन हैमिल्टन के अनुयायियो द्वारा हुआ था, श्री जैफर्सन का अपने ऊपर सबसे अधिक ऋण स्वीकार किया था कि उन्हे ऐसा कोई राजनैतिक विचार या अनुभूति दिखाई नही दी, जो स्वाधीनता के घोषणापत्र मे पहले ही से विद्यमान न हो। लिकन ने कहा, "हम यदि टॉमस जैफर्सन की महानता का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण चाहते है तो यह इसी बात से मिल सकता है कि विभिन्न विचारधाराओ वाले प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह एक-दूसरे से कितना ही मतभेद क्यो न रखता हो, जैफर्सन मे अपने विचारो का समर्थन मिल जाता है। इस देश की प्रत्येक पार्टी या राजनैतिक दल आज श्री जैफर्सन को इस देश का सरक्षक सन्त स्वीकार करती है।"

यह लिकन ही थे जिन्होने जैफर्सन के अपूर्ण कार्य को पूरा किया और अमेरिका मे से दास प्रथा को सर्वथा समाप्त कर—

दिया। यदि जैफर्सन को अनुमति मिल जाती तो वह इस दिशा मे बहुत कुछ काम बहुत पहले ही कर गए होते।

श्री जैफर्सन का जीवन वैसा था, जिसमे हमे सार्वकालिक महान् सत्य की उपलब्धि होती है। और यह बात सर्वथा सत्य है कि उनके विचार सूत्रो से अमेरिका के सारे इतिहास की रूप-रेखा अंकित हो सकती है। उदाहरण के लिए हम कह सकते हैं कि अमेरिका के जनता विद्यालयो की पद्धति वहाँ कभी की प्रचलित हो गई होती, यदि उन्हे इसके लिए अवसर दे दिया जाता। अमेरिका का सारा स्वर्णमय पश्चिमी प्रदेश, जिस पर वहाँ का बहुत बडा इतिहास निर्मित हुआ है, उनकी दूरदृष्टि के फलस्वरूप ही प्राप्त हुआ था। प्रत्येक महान् परिवर्तन के साथ अमेरिकावासी वर्जीनिया की इस महान् प्रतिभा को धन्यवाद देते है, जिसने इतना कुछ समझा, इतने साहस के साथ प्रयत्न और परिश्रम किया और वहाँ के निवासियो के कल्याण के लिए इतना कुछ कहा और बहुत कुछ कर दिखाया।